## लोक-सभा वाद-विवाद

संक्षिप्त ग्रनूदित संस्करण SUMMARISED TRANSLATED VERSION OF 3rd LOK SABHA DEBATES

> ग्यारहवां सत्र Eleventh Session





LOK SABHA SECRETARIAT NEW DELHI

मूल्य : एक रुपया

[यह लोक-सभा वाद-विवाद का संक्षिप्त अनूदित संस्करण है और इसमें श्रंग्रेजी/हिन्दी में दिये गये भाषणों आदि का हिन्दी/अंग्रेजी में अनुवाद है

This is translated version in a summary form of Lok Sabha Debates and contains Hindi/English translation of speeches etc. in English/Hindi.]

## विषय-सूची

## म्रंक 23, मंगलवार, 23 मार्च, 1965/2 चैत्र, 1887 (शक)

## प्रश्नों के मौखिक उत्तर

<sup>*</sup> तारांकित प्रश्न संख्या	विषय			पृष्ठ
522	बंजर भूमि में खेती .			211316
523	केन्द्रीय उर्वरक विपणन निगम			211618
<b>524</b>	ग्रनाज की वसूली			211822
5 <b>2</b> 5	गन्ने का स्रग्रिम ठेका .			2122-24
5 <b>2</b> 6	खाद्यान्नों का स्रायात .			2124-28
527	ग्रनाज के रूप <b>में</b> लगान <sub>़</sub>			2128-29
5 <b>2</b> 8	कृषकों की उर्वरकों के प्रति ग्रहिच			2129-32
<b>52</b> 9	ग्रनाज के उठवाने के काम का विभागीकरण			2132
5 <b>3</b> 0	ग्रनाजों का लाना-लेजाना	•		2132-36
प्रश्नों के	लिखित उत्तर			
531	ग्रनुसूचित ग्रादिम जातियां	•		2136
532	पटसन विकास समिति .			2137
533	म्रनैतिक पण्य			2138
534			•	2138-39
535	मुख्य मंत्रियों का सम्मेलन .		•	2439
<b>53</b> 6	रिवर स्टीम नेवीगेशन कम्पनी लिमिटेड .	•	•	2139-40
537	भिखारी समस्या		•	2140
538	गौंडा चनाव	•	•	2140
539	मघ्य प्रदेश म चीनी मिल			2140-41
540	चीनी के नये कारखानों के लिये लाइसेंस .			2141-42
541	खादी का मूल्य			2142
542	चीनी विपणन बोर्ड , , , ,	*	•	2142
श्रतारांकित				
प्रइन संख्या				
1378	कर्मचारियों की लापरवाही के लिये राज्य की जि	म्मेदारी		2142
1379	पिछड़े वर्ग			2142

<sup>\*ि</sup>कसी नाम पर श्रंकित यह + चिह्न इस बात का द्योतक है कि प्रश्न को सभा मैं उस सदस्य ने वास्तव में पूछा था ।

## **CONTENTS**

No. 23—Tuesday, March 23, 1965/Chaitra 2, 1887 (Saka)

Starre Questio		
Nos.	Subject	PAGES
522	Cultivation of waste Lands	2113→16
523	Central Fertilizer Marketing Corporation	2116—18
524	Procurement of Foodgrains	2118—22
525	Advance Bonding of Sugarcane	2122-24
526	Import of Foodgrains .	2124 <del></del> 28
527	Land Revenue in Kind	2128-29
528	Aversion of Farmers to Fertilizers	2129—32
529	Departmentalisation of Clearance of Foodgrains	2132
530	Movement of Foodgrains	2132—36
WRIT	TEN ANSWERS TO QUESTIONS	
Star Ques Nos	tions	
531	Scheduled Tribes	2136
532	Jute Development Committee .	2137
533	3 Immoral Traffic .	2138
534	4 Desert Development Board	2138-39
53:	5 Conference of Chief Ministers	2139
530	6 River Steam Navigation Company Limited	2139-40
	7 Beggar Problem	2140
	B Gonda Election	2140
-	9 Sugar Mills in Madhya Pradesh	2140-41
	Licences of New Sugar Factories	2141-42
•	Price of Khadi	2142
- •	2 Sugar Marketing Board	2142
Unst Ques No	arred stions os.	. 2142
	78 Liability of the State for the negiligence of employees 79 Backward Classes	. 2142
13	7u nackwaiu Ciasses · · · ·	_ •

## प्रश्नों के लिखित उत्तर--जारी

म्रतारांकित प्रक्त संख्या	विषय	पृष्ठं
1380	बहादूरगढ़-केन्द्रीय सचिवालय, दिल्ली बस सेवा	2143
1381	मध्य प्रदेश में अनुसूचित जातियां तथा अनसूचित आदिम जातियां	2143
1382	मध्य प्रदेश में अनुसूचित जातियों तथा अनुसूचित आदिम जातियों	
1362	के लिये छात्रावास.	2144
1383	कृषि नीति	2144-45
1384	कूटीर उद्योग	2145
1385	समाज कल्याण तथा सुरक्षा का कार्यक्रम	2145-46
1386	भूमि बन्धक बैंक	2146
1387	कीटाणुनाशक दवाग्रों के लिये सीमा शुल्क से छूट	2146
1388	बीमा सहकारी समितियां	2147
1389	चीनी के कारखाने	2147
1390	ज्वार की खरीद .	2147-48
1391	भारतीय विधि संस्थान	2148
1392	परिसीमन निकाय	2148
1393	स्रोद्योगिक परियोजनास्रों का प्रभाव	2148-49
1394	केसर का उत्पादन .	2149
1395	लघु सिंचाई कार्यक्रम .	2149
1396	उड़ीसा के लिये भ्रम्बर चर्खें	2149-50
1397	ग्राम सेवकों का प्रशिक्षण	2150
1398	म्राटे की चिक्कियों को <b>गें</b> हूं का कोटा	2150 - 51
1399	छोटी गंडक पर पुल	2151252
1400	विदेशी पर्यटक	2152
1401	लाल किला	2152
1402	कृषि निगम	2152-53
1403	बीज फार्म .	2153
1404	विकय संस्थाये	2153
1405	उड़ीसा म अनुसूचित जातियों में तथा अनुसूचित आदिम जातियों	
	के छात्रों के लिये मैट्रिकोत्तर छात्रवृत्तियां	2153 - 54
1406	खादी तथा ग्रामोद्योग ग्रायोग के कर्मचारी .	2154
1407	खाद्य तथा कृषि मंत्रालय म नियुक्तियां .	2154-55
1408	ग्रोंकारेश्वर में नर्मदा पर पुल	2155
1410	नेफा कला तथा शिल्प प्रदर्शनी	2156
1411	महाराष्ट्र को ग्रनाज का सम्भरण	2156
1412	मद्रास राज्य में नलकूप	2156
1413	भेड़ पालन योजना	2157
1414	दिल्ली दुग्ध योजना के कर्मचारी	2157

	EN ANSWER	S TO Q	UESÏ	CIONS	S—cont	đ.			
Unstarre Questions				Subject					PAGES
	Bahadurgarh-Ce	entral Sec		•		Servi	ce .		2143
	Scheduled Cas							ya	13
_ ]	Pradesh .		•	•	•	•	•	•	2143
_	Hostels for S. C			-		h	•	•	2144
	Agricultural Pol	•		•	•	•	•	•	2144-45
	Cottage Industr	-				•	•	•	2145
	Social Welfare a Land Mortgage		-	-	ine	•	•	•	2145-46 2146
	Exemption of I						•	•	2146
	Insurance Coop					•			2147
	Sugar Manufac								2147
1390	Purchase of Jov	war							2147-48
1391	Indian Law In	stitute							2148
1392	Delimitation B	ody .							2148
1393	Effect of Indus	strial Pro	jects						2148
1394	Production of	Saffron							2149
1395	Minor Irrigat	ion Progi	amme	s					2149
1396	6 Ambar Chark	has for C	rissa			•			2149-50
1397	7 Training of V	illage Le	vel Wo	orkers					2150
1398	Wheat Quota	for Flou	Mills						2150-51
1399	Bridge at Chh	oti Gand	lak .						2151-52
1400	Foreign Touri	sts							2152
1401	Red Fort, Del	hi							2152
1402	Agricultural (	Corporati	ons .						2152-53
1403	Seed Farms								2153
1404	Marketing Soc	cieties .					<b>,•</b>		2153
1405	Post-Matric	Scholarsi	nips to	S.C. a	and S.T	. Sti	ıdents	in	
	Orissa .	•		•	•	•	•	•	2153-54
1406	Employees of	Khadi ar	nd Vill	age In	dustries	s Con	nmissio	n	2154
1407	Appointments	in the λ	<b>A</b> inistr	y of F	ood and	l Agr	iculture	• •	2154-55
1408	Bridge over N	Varmada	at Om	karesh	war	•	•	•	2155
1410	Exhibition of	NEFA A	Arts an	d Craf	its ·		•		2156
1411	Supply of Fo	odgrains	to Ma	harash	tra .	•	•	•	2156
1412	Tube Wells	in Madra	s Stat	e ·	•		•	•	2156
1413	Sheep Breedi	ng Schen	me		•	•	•	•	2157
	Employees of			heme		•	•	•	2157

## प्रश्नों के लिखित उत्तर-जारी

धुतारांकित	विषय					qua
प्रदन् संख्या						_
1415	राष्ट्रीय राजपथ नं० 28 पर वर्ष	हेंबाट :	में पुल			2157
1416	दिल्ली-गोरखपुर विमान सेवा					2158
1417	शहरी क्षेत्रों में उपभोक्ता सहका	री सर्	मेतिया			2158
1418	मोटर गाड़ी म्रधिनियम					2158
1419	सहकारी गोदामों में स्रनाज का	स्टाक				2158-59
प्रविलम्बनीय	लोक महत्व के विषय की ग्रोर	घ्यान	त दिलाना			
	केरल में राष्ट्रपति का शासन	जारी र	रखना			2159
	श्री नरेन्द्रसिंह महीड़ा					2159
	श्री नन्दा					2159
विशेषाधिकार	: के प्रक्त के बारे में	•				2159-60
सभा पटल पर	रखेगयेपत्न .					216062
सामान्य श्राय	व्ययकसामान्य चर्चा	•	•	•		216385
	श्री द्वा० ना० तिवारी					2163-64
	श्री के० दे० मालवीय					216466
	श्री नाथ पाई	•				216669
	श्री मुरारका			•	•	216971
	श्री उ० मू० तिवेदी	•	•			2172-73
	श्री रघुनाम्न सिंह	•	•	•		2173-74
	श्री गौरी शंकर कक्कड़		•	•	•	2174-76
	श्री मान सिंह पृ० पटेल	•	•	•		2173-77
	श्री र० ना० रेड्डी	•	•	•		217779
	श्री श्रीनारायण दास	•	•	•		2179-80
	श्री बाल कृष्ण सिंह	•	•	•		2180-81
	डा० मेलकोटे	•	•	•		2181-82
	श्री कन्डप्पन	•	•	•	•	2182-83
	श्री हे० बी० कौजलगी	•	•	•		2183
	श्री महेश दत्त मिश्र	•	•	•	•	2183-84
	श्री पी० रा० रामकृष्णन्	•	•	•	•	2184-65

## Written Answer to Questions—contd

Unstarred Question No.

	S	ubject	:					PAGE
1415. Bridge at Vardghat on	Na	tional	High	way N	To. 28			2157
1416. Delhi-Gorakhpur Air								2158
1417. Consumer Cooperativ	es ir	urba	an Ar	eas				2158
1418. Motor Vehicles Act .			•					2158
1419. Foodgrain Stocks in C	Govi	. God	lowns	•	•	•	•	2158-59
Calling Attention to Matter of U	Irge	nt Put	olic In	nporta	ance-	-		
continuance of President's Ru	ıle iı	n Kera	ala	•	•	٠		21 59
Shri Narendra Singh Mahie	da							2159
Shri Nanda			•		•	•		2159
Re: Point of Privilege								2159-60
Papers laid on the Table .								2160-52
General Budget—General Discu	ıssio	n.						2163-85
Shri D. N. Tiwary .								2163-64
Shri K. D. Malaviya.								2164 <del></del> 66
Shri Nath Pai		•						216669
Shri Morarka		•	•				•	2169 <del></del> 71
Shri U. M. Trivedi .		•					•	2172-73
Shri Raghunath Singh		•	•					2173-74
Shri Gauri Shankar Kakka	ır		•		•	•		2174-76
Shri Man Sinh P. Patel							•	2176-77
Shri R. N. Reddi .								2177-79
Shri Shree Narayan Das								2179-80
Shri Bal Krishna Singh		•	•					2180-81
Dr. Melkote								2181-82
Shri S. Kandappan .		•			•	•		2182-83
Shri H. V. Koujalgi .								2183
Shri Mahesh Dutta Misra							•	2183-84
Shri P. R. Ramakrishnan						•	•	2184 <del></del> 85

## लोक-सभा वाद-विवाद (संक्षित्त ग्रन्दित संस्करण) LOK SABHA DEBATES (SUMMARISED TRANSLATED VERSION)

## लोक सभा LOK SABHA

मंगलवार, 23 मार्च, 1965/2 चैत्र, 1887 (शक)

Tuesday, March 23, 1965 Chaitra 2, 1887 (Saka)

लोक सभा ग्यारह बजे समवेत हुई

The Lok Sabha met at Eleven of the Clock

[ग्रध्यक्ष महोदय पीठासीन हुए ] MR. SPEAKER in the Chair.

प्रक्तों के मौखिक उत्तर ORAL ANSWERS TO QUESTIONS

#### Cultivationn of Waste Lands

Shri Onkar Lal Berwa:

Shri Hukam Chand Kachhavaiya:

Shri Yashpal Singh:

Shri S.M. Banerjee:

\*522. Shri Bhgawat Jha Azad:

Shrimati Savitri Nigam: | Shri R.G. Dubey:

Shri P.C. Borooah:

Shri Sidheshwar Prasad;

Shri Maheshwar Naik:

Will the Minister of Food and Agriculture be pleased to refer to the reply given to Statred Question No. 422 on the 8th December, 1964 and state:

- (a) whether the proposal for establishing a Corporation for the reclamation and cultivation of waste lands in the country for growing export-oriented crops has since been considered;
- (b) if so, the acreage of waste lands to be made cultivable under this scheme; and
  - (c) the time by which the said Corporation is likely to be set up?

The Deputy Minister in the Minietry of Foon and Agricuture (Shri D R. Chavan): (a) to (c). Land has been offered by a few State Government for reclamation and cultivation by the proposed Corporation, and a Project Officer has been appointed to inspect these lands with a view to determining whether these are capable of being reclaimed at reasonable costs. Efforts will be made to set up the Corporation at the earliest possible date after the feasibility reports are received. It is not possible at this stage to indicate the acreage of waste lands to he reclaimed.

Shri Onkar Lal Berwa: What is the area of waste land in the country? Has any survey been made in this regard?

**Shri D.R. Chavan:** As I mentioned in the beginning of the question it is impossible to assess the waste land.

**Shri Onkar Lal Berwa:** Have the orders for forming corporations been issued to the State Governments, if so, by what will they be able to form the Corporations?

**Shri D.R. Chavan:** We shall form the Corporation and not the State Governments.

**Shri Onkar Lal Berwa:** As Corporation is going to be constituted in Rajasthan in a few days. I want to know whether similar orders have been issued to State Governments, if, so, by what time they will be able to constitute them.

Shri D.R. Chavan: Orders have not been issued to State Governments.

**Shri Yashpal Singh:** May I know whether any scheme has been framed to give subsidy to the farmers straight way for making the waste lands cultivable instead of forming these corporations?

खाद्य तथा कृषि मंत्री (श्री चि० सुब्रह्मण्यम) : यह देखा गया है कि एक साधारण, किसान के लिये बंजर भूमि को खेती योग्य बनाना ग्रौर उसमें खेती करना संभव नहीं होगा । इस काम को बड़े पैमाने पर करना पड़ेगा । इसीलिये हम चाहते हैं कि इस काम को निगम करे । उस के पास इस को करने के लिये सभी संसाधन ग्रौर सुविधाएं होंगी ।

श्रीमती सावित्री निगम: जो सिमिति सर्वेक्षण कर रही है उसके निदेशपद क्या हैं? विभिन्न राज्यों में बंजर भूमि को खेती योग्य बनाने में कितना समय लगेगा, क्या उसका पता लगाने के लिये भी कहा गया है?

श्री चि॰ सुब्रह्मण्यम: जब किसी राज्य से बंजर भूमि की सूचना मिलती है तो एक तकनीकी दल उस स्थान का दौरा करता है श्रौर इस बात का पता लगाने का प्रयत्न करता है कि क्या उस भूमि को खेती योग्य बनाया जा सकता है, उस पर कितनी लागत श्रायेगी, इस का क्या उपयोग किया जा सकता है श्रौर क्या ये सब करना लाभप्रद होगा । इस ग्राधार पर हम स्थानों को चुनते हैं।

श्री राम सहाय पाण्डेय: काफी समय पहले चम्बल खण्डों को खेती योग्य बनाने की एक योजना बनाई गई थी। उसका क्या परिणाम निकला ग्रौर कितना कार्य किया गया है ?

श्री चि० सुब्रह्मण्यम : केवल कुछ ही राज्यों ने भूमि की उपलब्धता की सूचना दी हैं। वे हैं गोवा प्रशासन ग्रौर गुजरात, उड़ीसा ग्रौर राजस्थान की राज्य सरकारें। उन्होंने भूमि के कुछ प्लाटों की पेशकश की है। ग्रन्य राज्य सरकारें ग्रभी इस पर विचार कर रही हैं। उन्होंने ग्रभी यह नहीं बताया है कि उनके राज्यों में कितनी भूमि उपलब्ध होगी।

श्री हेम बरुग्रा: क्या विनोबा जी द्वारा भूदान श्रान्दोलन द्वारा इकट्ठी की गई भूमि में भी यह निगम ग्रपना कार्य करेगा ? यदि हां, तो क्या सरकार ने इस प्रकार की जमीनों को समन्वित करने की किसी प्रणाली पर विचार किया है ?

श्री चि॰ सुब्रह्मण्यम : यह एक सर्वथा भिन्न योजना है। विनोबा जी का भूदान ग्रान्दोलन उन जमीनों से सम्बन्ध रखता है जिन में पहले से खेती की जा रही है। यह बंजर भूमि को खेती योग्य बनाने के बारे में है।

श्री पु० र० पटेल: बंजर भूमि को खेती योग्य बनाने पर कितना धन व्यय करना होगा ? क्या इस का पता लगाया गया कि क्या उस पैसे को खेती की जा रही भूमि में अधिक उत्पादन और अच्छी सिचाई के लिये खर्च करना ज्यादा लाभप्रद होगा ?

श्री चि० सुब्रह्मण्यम: विभिन्न प्लाटों के बारे में निर्णय करने से पूर्व इस पर भी विचार किया जायेगा । यदि पैसा खर्च करना स्रलाभप्रद समझा गया तो ऐसा नहीं किया जायेगा । यदि उचित व्यय कर के भूमि को खेती के योग्य बनाना संभव हुस्रा तो काफी भूमि को खेती योग्य बनाया जायेगा ।

श्री क० ना० तिवारी: जिस व्यक्ति को भूमि दी जायेगी क्या उस से भूमि की लागत तथा उसको खेती के योग्य बनाने की लागत ली जायेगी ग्रौर क्या एक बार ही यह रकम ले ली जायेगी ग्रथवा किश्तों में ?

श्री चि० सुब्रह्मण्यम : इस का सम्बन्ध सरकारी बंजर भूमि से है न कि गैर सरकारी बंजर भूमि से ?

Shri Kishen Pattnaik: Was there any plan earlier to this regarding waste lands if so, to what result?

Shri D.R. Chavan: There was no scheme before.

श्री बड़े: मध्य प्रदेश के भिन्ड क्षेत्र में डकैती की समस्या को देखते हुए, क्या सरकार चम्बल की खंडों को खेती योग्य बनाने के लिये मध्य प्रदेश को सहायता देगी ?

श्री चि॰ सुब्रह्मण्यम : वह एक पृथक योजना है जो सरकार के विचाराधीन है।

श्री इयामलाल सर्राफ: कुछ दिन पहले उपमंत्री ने एक प्रश्न के उत्तर में वताया कि भूमि को कृषि योग्य बनाने के लिये सारे देश में एकीकृत योजनाएं हैं। क्या यह योजना उस योजना से पृथक है?

श्री चि० सुब्रह्मण्यम : यह एक पृथक योजना है, इस कार्य को हाथ में लेने के लिये एक बंजर भूमि विकास निगम बनाना, और इसका अभिप्राय यहां पर निर्यात की जा सकते वाली वस्तुओं का उत्पादन करना था । हां, उसके साथ साथ खाद्य उत्पादन और अन्य उत्पादन को भी लिया जायेगा । इसलिये यह एक विशिष्ट परियोजना है और इसी के लिये भूमि चूननी पड़ेगी ।

श्री लीलाधर कटकी: जो भूमि कृषि योग्य बनाई जायेगी क्या उसको फसल उगाने के लिये काश्तकारों को दिया जायेगा ग्रथवा क्या सरकार इस भूमि को सरकारी फार्मों के रूप में उपयोग में लाने का विचार रखती है ?

श्री चि॰ सुब्रह्मण्यमः इस भूमि में निगम स्वयं खेती करेगा।

#### केन्द्रीय उर्वरक विपणन निगम

श्री यशपाल सिंह :
श्री स० मो० बनर्जी :
श्री भागवत झा श्राजाद :
श्री दे० द० पुरी :
श्रीमती रेणुका राय :
श्री हिम्मतसिंहका :
श्री रामेश्वर टांटिया :

क्या खाद्य तथा कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

- (क) क्या केन्द्रीय उर्वरक पूल के स्थान पर एक स्वतंत्र केन्द्रीय उर्वरक विपणन निगम बनाने का विचार है ;
  - (ख) यदि हां, तो इस के क्या कारण हैं ; ग्रौर
  - (ग) इस निगम के मुख्य कार्य क्यां होंगे ?

खाद्य तथा कृषि मंत्रालय में उपमंत्री (श्री दा० रा० चव्हाण) : (क) से (ग) एक विवरण सभा पटल पर रख दिया गया है ।

#### विवरण

वर्तमान केन्द्रीय उर्वरक पूल के स्थान पर एक केन्द्रीय उर्वरक विपणन निगम के स्थापित करने के प्रस्ताव पर पिछले कुछ समय तक विचार होता रहा है। भारत सरकार द्वारा हाल ही में स्थापित की गई एक विशेषज्ञ समिति अन्य मामलों के साथ-साथ उर्वरक के वितरण सम्बन्धी दीर्घकालीन तथा अल्पकालीन समस्याओं पर विचार कर रही है ताकि कृषि उत्पादन की वृद्धि हेतु उर्वरकों का तेजी से प्रयोग बढ़ाया जा सके और उर्वरकों के वितरण की प्रणाली को विकसित करने के लिए उपायों की सिफारिश की जा सके। उन की सिफारिशों की प्रतीक्षा की जा रही है।

Shri Yashpal Singh: It appears from the statement that the problems concerning farmers, which are going on increasing, would remain as such so long as the recommendations of the committee are not received. What are the Government doing to solve their problems?

खाद्य तथा कृषि मंत्री (श्री चि० सुब्रह्मण्यम): सिफारिशें मई के ग्रन्त तक जल्दी मिल जयोंगी ग्रौर जैसे ही सिफारिश प्राप्त होंगी हम यथाशीझ उन पर कार्यवाही करेंगे। Shri Yashpal Singh: Have the Government noticed that fertilisers are being dumped where there are no irrigation facilities with the result that even the seeds are wasted because of the withering of crops whereas fertilisers are not being made available where there are irrigation facilities; and if so, what measures are being adopted to remove these difficulties?

श्री चि॰ सुबहाण्यम: मेरे विचार में माननीय सदस्य की यह धारणा सही नहीं है कि उर्वरक वहां जबर्दस्ती दिया जा रहा है जहां इस की श्रावण्यकता नहीं है। हम उर्वरक वहीं देते हैं जहां उस की मांग होती है। तथ्य तो यह है कि हम देण की मांग को पूरा भी नहीं कर पा रहे हैं।

श्री दी० चं० शर्मा: विवरण में यह बताया गया है कि विशेषज्ञ समिति उवंरक के वितरण सम्बन्धी दीर्घ तथा ग्रल्पकालीन समस्याग्रों पर विचार करेगी। दीर्घकालीन तथा ग्रल्पकालीन समस्याग्रों में ग्रन्तर क्या है ? मेरे विचार में ग्रल्पकालीन समस्या दीर्घकालीन समस्या की नुलना में ग्रिधक महत्वपूर्ण है ?

श्री चि० सुब्रह्मण्यम : दोनों समस्यायें ही महत्वपूर्ण हैं । ग्रन्पकालीन समस्या यह है कि उर्वरकों की कमी है । दीर्घकालीन समस्या यह है कि हम बड़े पैमाने पर इसके उत्पादन की योजना बना रहे हैं जिस से हम चौथी योजना के ग्रन्त तक मोटे तौर से 20 लाख टन नाइट्रोजन पूरक उर्वरकों का उत्पादन कर सकों । तब हमारी समस्यायें कुछ भिन्न होंगी । ग्रब तो इस की जितनी मांग है उतना बाजार में नहीं मिलता है । ग्रतः यह दो बातें हैं जिन का ध्यान रखना है ।

श्री हिम्मतिसहका: क्या मंत्री जी यह जानते हैं कि ग्रासाम को जितना उर्वरक दिया जाता है वह सब काले बज़ार में जाता है, ग्रीर क्या सरकार इसको बन्द करने के लिये उचित कदम उठायेगी ?

श्रध्यक्ष महोदय: माननीय सदस्य ने जानकारी दी है ग्रौर सुझाव भी।

श्री चि॰ सुब्रह्मण्यम : मैं इस को ध्यान में रखूंगा ।

Shri Tulsidas Jadhav: May I know the production of fertilisers in comparison to the requirements of our country?

श्रो चि० सुब्रह्मण्यम : अनुमान है कि 1965-66 में मोटे तौर से 325,000 टन उत्पादन होगा। इसके अतिरिक्त हम 350,000 ट न नाइट्रोजन के आयात का कार्यक्रम भी तैयार कर रहे हैं।

श्री सिंहासन सिंह : मंत्री जी ने ग्रभी बताया कि देश में लगभग 300,000 टन उत्पादन होगा ग्रौर इतना ही बाहर से मंगाया जायेगा । परन्तु ग्रायव्ययक सम्बन्धी मांग में यह ग्रांकड़े दिखाये गये हैं कि देश में 289,000 टन उत्पादन होगा ग्रौर 275,000 टन बाहर से ग्रायात किया जायेगा । क्या मैं जान सकता हूं कि सही ग्रांकड़े क्या हैं ?

श्री चि० सुब्रह्मण्यम : ऐसा अनुमान लगाया गया है कि 1965-66 में ग्रान्तरिक उत्पादन 3 लाख टन से कुछ ग्रधिक होगा। लगभग 2.8 लाख ग्रथवा 2.9 लाख टन ग्रायात के लिये तो हम पहले ही बाध्य हैं। बाकी जो रह जाता है उसे भी ग्रायात करने के लिये प्रबन्ध करना है। उसके लिये हमें बाद में ग्रनुपूरक मांग प्रस्तुत करनी पड़ेगी।

श्री कपूर सिंह: क्या सरकार का उर्वरकों को ग्रायात करने में उदारता बरतने तथा किसानों को वह लागत मूल्य पर देने का विचार है ?

श्री चि० सुबह्मण्यम : मैं इस प्रश्न को नहीं समझ सका ।

श्री कपूर सिंह: मैं इसका सरल श्रर्थ बताऊंगा। जब श्राप उर्वरक बाहर से मंगाते हैं तो घरेलू उर्वरक में मिला देते हैं श्रौर फिर मूल्य निर्धारित करते हैं। परन्तु श्रायात किया हुश्रा उर्वरक जोकि सस्ता श्रौर श्रच्छा है, काफी नहीं होता है इसलिये क्या श्रापका विचार श्रायात में श्रधिक उदारता काम लेने श्रौर किसानों को उसे उसकी लागत के श्राधार पर देने का है ?

श्री चि॰ सुब्रह्मण्यम: ग्रधिक ग्रायात करने में दो किठनाइयां हैं। पहली यह िक संसार की मण्डियों में उर्वरकों की कमी के कारण यह उपलब्ध नहीं है। परन्तु हम इसे ग्रधिक से ग्रधिक प्राप्त करने का प्रयत्न करते हैं जितना कि यह उपलब्ध हो सकता है। दूसरा, यदि यह मिल भी जाये तो विदेशी मुद्रा जुटाना एक ग्रन्य बाधा है। परन्तु हम प्रयत्न कर रहे हैं कि कितना ग्रायात करना हमारे लिए सम्भव होगा।

श्री बड़े: विवरण में यह बताया गया है कि विशेषज्ञ समिति ग्रन्य बातों के ग्रलावा दीर्ध-कालीन तथा ग्रल्पकालीन समस्याग्रों पर विचार कर रही है। वह ग्रन्य बातें कौनसी हैं जिन पर विशेषज्ञ समिति विचार औरंगी?

श्री चि॰ सुब्रह्मण्यमः विशेषज्ञ समिति मूल्यों के नियतन सम्बन्धी प्रश्न पर भी विचार करेगी जिससे सदस्यों का सम्बन्ध है। यह समिति उर्वरकों की बिक्री को प्रोत्साहन देने तथा कई ग्रन्य बातों पर भी विचार करेगी।

श्री ग्र० प्र० जैन: ग्रायव्ययक पर व्याख्यात्मक ज्ञापन में, जो हमें तीन सप्ताह पहले दिया गया है, पृष्ठ 112 पर यह स्पष्ट रूप से बताया गया है कि देश में कुल 5.75 लाख टन नाइट्रोजन पूरक उर्व रक उपलब्ध होगा जिसमें बाहर से मंगाया जाने वाला भी शामिल है। माननीय मंत्री ने ग्राज सभा में बताया कि 6.75 लाख टन उपलब्ध होगा। इन में सही ग्रांकड़े कौन से हैं, ग्रौर यदि व्याख्यात्मक ज्ञापन के प्रकाशन के पश्चात् इनमें कोई परिवर्तन किया गया है तो ऐसा कैसे किया गया है?

श्री चि० सुब्रह्मण्यमः मैंने स्पष्ट रूप से बताया है कि उपलब्धता के बारे में हमारा लक्ष्य 6.75 लाख टन का है। जैसा कि मैं ने पहले बताया है कि कुछ तो निश्चित ग्रायात है ग्रीर इस के ग्रितिरक्त ग्रायात को बढ़ाने के लिये मूल साधनों की खोज कर रहे हैं जिससे कुल 6.75 लाख टन उर्वरक उपलब्ध किया जा सके। यदि ग्रावश्यक हुग्रा तो इस के लिये ग्रनुपूरक ग्रनुदान के लिये मांग प्रस्तूत की जायेगी।

#### अनाज की वसूली

श्री प्रभात कार : श्री इन्द्रजीत गुप्त : श्री द्वा० ना० तिवारी :

श्री विभूति मिश्र : श्री क॰ ना॰ तिवारी: श्री प्र० रं० चक्रवर्ती: श्रीमती सावित्री निगम : श्री जसयन्त मेहता : \*524. र्शीहेडाः

श्री रामचन्द्र उलाका :

श्री धुलेश्वर मीना :

श्री चाण्डक :

श्री प्र० चं० बरुग्रा:

श्रीमती रामदुलारी सिन्हा :

श्री दे० शि० पाटिल :

श्री तुलशीदास जाधव :

श्री मधु लिमये :

श्री राम सेवक यादव :

क्या खाद्य तथा कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या बीस लाख मीट्रिक टन चावल एकत्र करने की सरकार की योजना की प्रगति सन्तोषजनक है ; ग्रौर

(ख) यदि हां; तो अब तक (राज्यवार) कुल कितना चावल प्राप्त किया जा चुका है और किस भाव पर?

खाद्य तथा कृषि मंत्रालय में उपमंत्री (श्री दा॰ रा॰ चव्हाण) : (क) ग्रौर (ख). सरकार की 19 5 लाख मीट्रिक टन चावल खरीदने की योजना ने 15 मार्च, 1965 तक काफी संतोषजनक प्रगति की है। केन्द्रीय सरकार ने चालू फसल वर्ष में भ्रपने श्राप या राज्य सरकारों के द्वारा चावल की निम्नलिखित मात्रा खरीदी :--

राज्य		खरीदी गई मात्रा	मूल्य परिसर
		 (ग्रांकड़े हजार टनों में)	(रु० प्रति क्विंटल)
मध्य प्रदेश		289	56. 52 से 83. 65 तक
पंजाब		224	56.00 से 88.75 तक
म्रान्ध्र प्रदेश		283	57.07 से 74.06 तक
उड़ीसा		68	59. 50 से 72. 00 तक
मद्रास .			
जोड़	,	664	

श्री प्रभात कार: एक राज्य से दूसरे राज्य में मूल्यों में विभिन्नता के क्या कारण हैं ?

खाद्य तथा कृषि मंत्री (श्री चि॰ सुब्रह्मण्यम) : जिन राज्यों में यह फालतू होता है, वहां से इसे उन राज्यों में भे जना पड़ता है जिन में इस की कमी होती हैं। मूल्य एक स्थान से दूसरे स्थान की दूरी के स्राधार पर निर्धारित किया गया है स्रतः मूल्यों में कुछ विभिन्नता है। परन्तु मोटे स्रनाज के मूल्य सामान्यता 56 से 58 रुपये तक है।

श्री प्रभात कार: अनाज एकत करने के पश्चात् क्या इसको उन क्षेत्रों से, जहां यह फाल तू हंता है, अन्य स्थानों को, जिनमें इस की कमी है, भी भेजा जा रहा है ?

श्री चि॰ सुब्रह्मण्यम: जब भी हम अनाज एकत करते हैं, तभी उन क्षेत्रों में, जहां इसका वितरण करना होता है, भेज दिया जाता है।

**Shri D.N. Tiwary:** Is it not a fact that there has been less procurement on account of the fact that the payment was not made to the merchants and the farmers immediately?

श्री चि० सुब्रह्मण्यमः कौन से राज्य में ?

श्री द्वा॰ ना॰ तिवारी : विशेषतया बिहार में।

श्री चि० सुबण्यम: बिहार में राज्य सरकार स्वयं खरीद कर रही है।

श्री हा० ना० तिवारी: मेरा प्रश्न यह है कि क्या जितना चावल इक्ट्ठा करना था उतना नहीं किया जासका क्योंकि किसानों तथा स्टाक रखने वालों को, जिनसे चावल खरीदा गयाथा, तत्तकाल भुगतान नहीं किया गया ग्रीर इसलिये वे सरकार को ग्रधिक चावल न दे सके ?

श्री चि॰ सुब्रह्मण्यम: 19 लाख टन के लक्ष्य में से चावल एकत करने में प्रगति काफी संतोषजनक रही है। माननीय सदस्य ने प्रश्न इस ग्राधार पर किया है कि यह संतोषजनक नहीं है।

श्री रंगा: श्रान्ध्र में जो मूल्य दिया जा रहा है वह बाजार भाव से बहुत कम है, इसके क्या कारण हैं। मूल्य जो दिया जाता है वह प्रायः बाजार भाव से 2 रुपये प्रति बोरी कम होता है?

श्री कपूर सिंह: ऐसा सभी स्थानों पर है; पंजाब में भी।

श्री चि० सुब्रह्मयम: हमने न्यूनतम तथा ग्रधिकतम मूल्य निर्धारित किये हैं। समाहार मूल्य बाजार भाव के ग्रनुसार होता है। वास्तव में कुछ क्षेत्रों से ऐसी शिकायत मिली है कि वहां काफी खरीद नहीं की गई है। यह मूल्य लगभग संतोषजनक रहा है ग्रीर इस बारे में कोई शिकायत नहीं ग्रायी है।

Shri D.N. Tewary: Since the prices of other things are high and the prices of rice and other things have not been fixed on any scientific basis, the procurement target is not, therefore, being achieved. Are the Government considering to fix the integrated prices for it as soon as possible?

श्री चि० सुब्रह्मण्यमः इसी लिये तो कृषि सम्बन्धी मूल्य स्रायोग की नियुक्ति की गई है। मैं मानता हूं कि पिछले मौसम में झा सिमिति ने मूल्य तदर्थ स्राधार पर नियत किये थे। परन्तु हमें उस समय कुछ निर्णय लेना पड़ा था। मुझे स्राशा है कि कृषि सम्बन्धी मूल्य स्रायोग द्वारा किये जाने वाले अधिक वैज्ञानिक हिसाब से हम अच्छा मूल्य दे सकेंगे।

श्री प्र० रं० चक्कवर्ती: स्रनाज की वसूली में शीव्रता लाने के लिये स्थापित किये गये निगम की शाखास्रों को स्रनाज एकव करने के लिये क्या सभी राज्यों में खोला जायेगा वजाय इसके कि राज्य एजें सियों द्वारा इकट्ठे किये हुए स्रनाज को प्राप्त किया जाये।

श्री चि० सुबह्मण्यमः अभी खाद्य निगम आन्ध्र प्रदेश और मद्रास में प्राप्त किये गये चावल को पहली अप्रैल सेले रहा है। मैंसूर में किसानों से चावल और धान निगम स्वयं खरीद कर रहा है। इस निगम की गतिविधियों को अन्य राज्यों में चालू करने वा प्रश्न विचाराधीन है।

श्रीमती सावित्री निगम: क्या माननीय मंत्री यह जानते हैं कि राज्यों के लिये माल डिब्बों के आवंटन के बारे में खाद्य मंत्रालय की त्रुटिपूर्ण नीति ग्रीर ग्रन्य राज्यों में ग्रनाज ले जाने वाले माल डिब्बों को श्रीणी 'क' ग्रीर श्रेणी 'ख' में बांटने से विभिन्न छोटे स्टेशनों पर काफी श्रनाज इकट्ठा हो गया है ?

श्री चि० सुबहाण्यम : मैं वास्तव मैं प्रश्न नहीं समझ सका ।

**अध्यक्ष महोदय:** यह बुंबहुत लम्बा था श्रोर इसलिये मैं भी नहीं समझ सका।

श्री चि॰ सुब्रह्मण्यम : यदि यह प्रश्न ग्रानाज के परिवहन को प्राथमिकता देने के बारे में है तो मैं सभा को विश्वास दिल सकता हूं कि रेलवे मंत्री ग्रानाज के परिवहन को उच्च प्राथमिकता दे रहे हैं।

**Shri Tulshidas Jadhav:** The Government loan is recovered from the farmers when procurement of foodgrains is made as a result of this they do not bring their foodgrains there and thus there is difficulty in procurement. A re the Government aware of it?

Shri D.R. Chavan: There is no such news.

श्री बड़े: क्या यह सच है कि मध्य प्रदेश में छतीसगढ़ का चावल श्रान्ध्र प्रदेश के चावल से कहीं बढ़िया है जबकि वहां पर मूल्य जो दिया जाता है वह 63 रुपये है ग्रौर ग्रन्थें स्थानों पर मूल्य 75 रुपये है जिसके फलस्वरूप मध्य प्रदेश से ग्रनाज की वसूली को जो प्रोत्साहन दिया गया है वह ग्रच्छा नहीं है; यदि हां, तो क्या सरकार मूल्य का पुनरीक्षण करने के बारे में विचार कर रही है?

अध्यक्ष महोदय: पूर्वगृहीत तथा प्रकल्पना करने की इजाजत नहीं है। माननीय सदस्य ने यह ''प्रकल्पना की है कि मध्य प्रदेश का चावल बढ़िया है। श्री रंगा इस दावे का प्रतिरंध करते है।

श्री उ० मू० त्रिवेदी: श्री रंगा ने हमारा चावल खा के नहीं देखा है।

श्री बड़े: क्या सरकार मध्य प्रदेश से अधिक अनाज प्राप्त करने के लिये मूल्य का पुनरीक्षण करने जा रही है ?

श्री चि॰ सुब्रह्मण्यम : हम ग्रभी मूल्य का पुनरीक्षण नहीं करना चाहते हैं, ग्रागामी मौसम से हम कृषि सम्बन्धी ग्रायोग की सिफारिशों का ग्रनुसरण करेंगे।

श्री दाजी : अब मूल्य प्राप्ति-स्थान से पड़ौसी राज्य के बीच दूरी के आधार परनिकारित किया जाता है। क्या सरकार यह नहीं समझती कि एक ऐसा आधार होना चाहिये जिससे किसानों पर प्रभाव पड़े क्यों कि किसानों को इससे कोई मतलब नहीं कि आप उसे कहां बेचते हैं? यदि हां, तो क्या सरकार इस सारे आधार को बदलने तथा मूल्य को खेती के लाभ अलाभ के आधार पर निधारित करने को वांछनीय नहीं समझती है?

श्री चि॰ सुब्रह्मण्यम: कृषि सम्बन्धी ग्रायोग शायद इसी ग्राधार पर ही विचार करेगा ।

डा० पं० शा० देशमुख: समहत चावल में से क्या कुछ चावल बेचा भी गया है अथवा बेचे जाने की सम्भावना है; यदि हां, तो इसको बेचने के लिये अधिकतम मूल्य क्या होगा ?

श्री चि॰ सुब्रह्मण्यमः समहत चावल उपभोक्ता क्षेत्रों में पहले ही भेजा जा रहा है; उदाहरणार्थ ग्रान्ध्र से प्राप्त किया गया चावल केरल भेजा जा रहा है। केरल में मूल्य परिवहन तथा ग्रन्य ग्राकस्मिक खर्चे को ध्यान में रख कर निर्धारित किये गये हैं। विभिन्न उपभोक्ता क्षेत्रों तथा प्राप्ति स्थानों में मूल्य इसी ग्राधार पर निर्धारित किये गये हैं।

श्रध्यक्ष महोदय: श्रगला प्रश्त--श्रीमती सावित्री निगम।

डा० मा० श्री० ग्रणे: केरल ग्रीर ग्रन्य स्थानों पर इसे किस भाव पर बेचा जाता है?

डा० पं० शा० देशमुख: समाहार मूल्य तथा बिक्री मूल्य में क्या ग्रन्तर है ?

श्री रंगा: क्या इसमें कोई लाभ का तत्व भी है?

श्री चि॰ सुबह्मण्यमः इसमें लाभ का कोई तत्व नहीं है; वास्तव में हमें इसमें हानि उठानी पड़ती है।

ग्रथ्यक्ष महोदय: मैंने ग्रगले प्रश्न के लिये कहा है ग्रौर मंत्री जी ग्रभो पुराने प्रश्न का ही उत्तर देरहे हैं।

#### गन्ने का ग्रग्रिम ठेका

्रश्रीमती सावित्री निगम : \*525 ्रश्री हिम्मर्तासहका : श्री रामेश्वर टांटिया :

क्या खाद्य तथा कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

- (क) क्या सरकार ने गन्ने की उपलब्धि सुनिश्चित करने के लिए गन्ने की खरेद का अग्रिम ठेका करने की प्रक्रिया अपनाने का फैसला किया है; और
- (ख) यदि हां, तो इस मामले में ग्रागे क्या कार्यवाही की गई है ग्रथवा करने का विचार है ?

खाद्य तथा कृषि मंत्रालय में उपमंत्री (श्री दा० रा० चव्हाण): (क) ग्रौर (ख) शर्करा कारखानों को गन्ने की सप्लाई का काम राज्य सरकारों द्वारा देखा जाता है। उनसे प्राप्त सूचना के अनुसार, केवल आन्ध्र प्रदेश ने आन्ध्र प्रदेश (सप्लाई और क्रय विनियम) अधिनियम, 1961 के अन्तर्गत बुवाई के समय अग्रिम ठेका करने की प्रक्रिया अपनाई है। अन्य राज्य सरकारों ने या तो इस प्रक्रिया को कार्यान्वित करना आवश्यक नहीं समझा या कठिन पाया।

श्रीमती सावित्री निगम: इस नई योजना के श्रन्तर्गत किसानों को क्या लाभ होगा? क्या उत्तर प्रदेश तथा बिहार को, जहां श्रनियमित रूप से गन्ना मिलने के कारण कई मिलें बन्द करनी पड़ी हैं, यह योजना चालू करने के लिये कहा गया है?

खाद्य तथा कृषि मंत्री (श्री चि० सुब्रह्मण्यम) : जी, नहीं । उत्तर प्रदेश सरकार के पास ऐसी कोई योजना नहीं है । परन्तु उन्होंने कारखाना क्षेत्र में गन्ने के उपयोग को उस क्षेत्र में गुड़ ग्रौर खण्डसारी के उत्पादन को विनियमित करके नियंत्रित किया है ।

श्रीमती सावित्री निगम: ग्रान्ध्र प्रदेश में चालू की गई योजना की मुख्य मुख्य बातें क्या हैं ? क्या इस योजना से किसानों को लाभ होगा ग्रथवा इससे केवल मिलमालिकों की ही लाभ होगा ?

श्री चि० सुब्रह्मण्यम : यह योजना उनके श्रापसी लाभ के लिये है। वास्तव में उहोंने इससे पहले ही एक समझौता कर लिया था कि वे गन्ने की कुछ मात्रा जिसका वे उत्पादन करेंगे, कारखानों को देंगे। इससे उन्हें न्यूनतम मूल्य देने का श्राश्वासन दिया गया है। कई मामलों में तो वे बीज श्रीर उर्वरक खरीदने के लिये कारखानों से पेशगियां भी लेते हैं। श्रतः श्रान्ध्र प्रदेश में यह योजना सामान्यता दोनों के लिये लाभकारी सिद्ध हुई है।

श्रीमती रामदुलारी सिन्हा: क्या उत्तर प्रदेश तथा बिहार की तरह वहां पर भी गन्ने के क्षेत्रों की रिक्षत, निर्देश्य तथा ग्रजाध क्षेत्रों में ग्रंकित करने का कोई विचार है ?

श्री चि॰ सुब्रह्मण्यम : जो हां, विभिन्न क्षेत्रों को विभिन्न चीनी कारखानों को निर्दिष्ट करने की योजना है। गन्ना इस स्राधार पर उपलब्ध किया जा रहा है।

**Shri Gulshan:** Are the Government aware that there has been lot of increase in the price of *khandsari*, if so, whether Government are considering to enhance the rate of sugarcane also?

श्री दा० रा० चन्हाण: यह मुख्य प्रश्न से नहीं उठता है। वास्तव में खण्डसारी की कीमतें कम होती जा रही हैं।

**Shri Yashpal Singh:** Would this scheme remove the difficulty of the farmer? At present the position is this that payment is not made to him even after one year. In case of advance bonding, whether advance would also be given to the farmer?

श्री चि० सुबह्मण्यम : कुछ मामलों में तो उन्हें इस प्रयोजन के लिये ग्रिप्रिम भुगतान किया जाता है जिससे वे गन्ना तत्परता से देते रहें।

श्री शिवनंजप्पा: क्या सरकार का विचार एक ग्रादर्श प्रोफार्मा बनाने का है जिससे प्रबन्धकों तथा गन्ना उत्पादकों के बीच सांविधिक दायित्व द्विपक्षीय हों?

श्री चि० सुब्रह्मण्यम: जी, हां; ग्रान्ध्र प्रदेश से एक ऐसा समझौता किया गया है। यह समझौता इस प्रबन्ध के ग्राधार पर ही किया गया है।

Shri Sheo Narain: May I know whether certain mills in Eastern U.P. have not so far paid arrears to the farmers and the Government propose to demarcate the factory area. The goods of the farmer are taken by the Government and they do not get payment. What arrangements are being made by the Government in regard thereto? I am specifically referring to the Mundarva Mill.

श्री चि॰ सुब्रह्मण्यम: मुझे इसकी जानकारी नहीं है कि किसी चीनी कारखाने ने कोई भुगतान नहीं किया। यदि किसी ने भुगतान नहीं किया तो इस मामले को राज्य सरकार से उठाया जा सकता है।

श्री रेड्डियार : क्या यह सच है कि मद्रास में वे इस प्रणाली का अनुसरण करते रहे हैं ?

श्री चि० सुब्रह्मण्यम : मद्रास के कुछ क्षेत्रों में वे इसका श्रनुसरण करते रहे हैं परन्तु वे समुचे राज्य में इसका श्रनुसरण नहीं करते रहे हैं।

डा० मा० श्री ग्रणेः छतीसगढ़ क्षेत्र से कितना चावल एकत्र किया गया ग्रौर इसमें से कितना पड़ोबी राज्य विदर्भ में खपत के लिये भेजा गया?

श्री चि० सुब्रह्मण्यमः मुख्य प्रश्न गन्ने के बारे में है। इसका सम्बन्ध पिछले प्रश्न से है।

श्री रंगाः क्या सरकार का विचार बिहार तथा उत्तर प्रदेश को मनाने का है कि वे भी श्रान्ध्र प्रदेश की प्रणाली को श्रपनायें जो श्रापसी लाभ के लिये हैं? किसानों को उत्पादन से पहले ऋण मिल जाता है श्रौर मिलों को कम से कम गन्ना मिलने का श्राश्वासन मिल जाता है।

श्री चि० सुब्रह्मण्यम : सभी राज्य सरकारों का घ्यान इस योजना की श्रीर दिलाया गया है। यदि यह दोनों के लिये लाभकारी सिद्ध होगी तो हम ग्रन्य राज्यों को भी इस योजना को अपनाने के लिये कहेंगे।

#### खाद्यान्नों का ग्रायात

+

श्री स० चं० सामन्त : श्री म० ला० द्विवेदी: श्री यशपाल सिंह : श्री रा० स० तिवारी : श्री हुकम चन्द कछ्वाय : श्री प्रकाशवीर शास्त्री : श्री जगदेव सिंह सिद्धान्ती : श्री प्रभात कारः \*526. श्री इन्द्रजीत गुत : श्री जं० ब० सिंह : श्रीमती रेणु चऋवर्ती : श्री भागवत झा ग्राजाद : श्री जसवन्त मेहता : श्रीबड़े: श्री श्रोंकार लाल बेरवा : श्री दलजीत सिंह : श्री हेडा : श्री रामचन्द्र उलाका : श्री धुलेश्वर मीना : श्रीप्र०के० देव :

श्रीमती राम बुलारी सिन्हा : श्री प्र० चं० बरुग्रा : श्री मलाइछामी : श्री दे० शि० पाटिल : श्री तुलशीदास जाधव : श्री कोया :

क्या खाद्य तथा कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

- (क) ग्रागामी वित्तीय वर्ष 1965-66 में विभिन्न प्रकार के खाद्यान्नों के ग्रायात की ग्रतुमानित ग्रावण्यकता किस ग्राधार पर निर्धारित की गई है:
- (ख) उपरोक्त वर्ष में खाद्यान्नों के उत्पादन के ग्रनुमानित ग्रांकड़े क्या है ग्रांग देश की ग्रावश्यकता की ग्रपेक्षा उत्पादन में ग्रनुमानतः कितनी कमी रहेगी;
  - (ग) किन किन देशों से कितना कितना खाद्यान ग्रायात किया जायेगा: ग्रांग
- (घ) क्या सरकार ने खाद्यान्न का सम्ते दरों पर वितरण करने का कोई बुट्टिशीन तरीको निकाला है ?

खाद्य तथा कृषि मंत्रालय में उपमंत्री (श्री दा० रा० चव्हाण): (क) 1965-66 में खाद्यात्रों के श्रायात का कार्यक्रम (1) सरकारी स्टाक से वितरण की श्रनुमानित श्रावश्यताश्रों (2) समीकरण भण्डार तैयार करने की श्रावश्यकताश्रों ग्राँग (3) विदेशी मुद्रा की सुलभता श्रौर विदेशी मंडियों में प्रत्यता को घ्रान में रख कर नैयार किया जा रहा है।

- (ख) 1965-66 में खाद्यान्नों की उपज के ब्रांकड़ों का अभी कोई अनुमान देना बहुत ही जल्दी होगा क्योंकि इस समय खरीफ की फसल की बुबाई तक नहीं हुई है। देश की खाद्यान्न सम्पन्धी बावश्यकताओं का ठीक ठीक अनुमान लगीना भी कठिन है क्योंकि मांग अनेक तत्वों पर निर्भर करती है जिसमें से कुछेक का मही सही अनुमान नहीं लगाया जा सकता है।
- (ग) गेहूं का आयात अधिकांशतः संयुक्त राज्य अमेरिका, आस्ट्रेलिया आंर कताडा और चावल का आयात संयुक्त राज्य अमेरिका, दक्षिण-पूर्वी एशियाई देशों और संयुक्त अरब गणराज्य है किया जाएगा। इस समय ठीक-ठीक अनुमान लगाना कठिन है कि प्रत्येक देश से खाद्याओं को कितनी कितनी मात्रा आयात की जा सकेगी।
- (घ) वितरण की कोई पद्धित पूर्ण नहीं कही जा सकती है। वर्तमान पद्धित का उद्देश्य, यथा सम्भव, समान रूप से, उचित मृत्यां पर खाद्यात्रों के वितरण करने की व्यवथा करनी है।

श्री स॰ चं॰ सामन्त : हम समीकरण भण्डार के लिये कितना ग्रनाज इकट्ठाः कर सके हैं ग्रथवा ग्रभी करना है ?

श्री दा० रा० चव्हाण : हमारा उदेश्य कई वर्षों में ४० लाख टन गेहूं तथा २० लाख टन चावल का समीकरण भण्डार रखना चाहते हैं।

श्री स० चं० सामन्तः क्या यह सच नहीं है कि उन दे<u>शों ने, जिन्से</u> हम ने पिछले वर्ष ग्रनाज ग्रायात किया था, हमें सूचित किया है कि वे किसी वचन का पालन नहीं कर सकेंगे ? श्री दा० रा० चन्हाण : यह सही नहीं है।

**Shri Yashpal Singh:** Are the Government in a position to tell us the date by which our country would become self-sufficient in respect of foodgrains and we would not have to depend upon other countries for it?

- Shri D. R. Chavan: It is very difficulty to say about it at present.
- **Shri R. S. Tewary:** May I know the prices which would be fixed for the rabi crops?
- **Shri D. R. Chavan:** The producers prices of rabi crops have already been fixed and every State has been asked to announce them. The prices which have been fixed are: red variety Rs. 45.50, white variety Rs. 49.50 and superior variety Rs. 53.50.

**Shri Rameswaranand:** Last year wheat was sent to Bombay, Calcutta etc. from Punjab, whereas imported wheat was supplied to Punjab when there was shortage. Will the Government see that only that quantities of foodgrains it is sent outside, which is surplus to the requirements of an area from which is sent because by not doing so the dearness increases and as such the requirements of that area should be met from the foodgrains available in that area?

Shri D. R. Chavan: The Government would take case of it.

श्री प्रभात कार: इस वर्ष श्राशातीत फसल की दृष्टि से श्रायात में कितनी कमी की जायेगी श्रथवा क्या श्राशातीत फसल के बावजूद भी श्रायात की जाने वाली माला में कमी नहीं की जायेगी क्योंकि इस बारे में हम ने पहले हो समझौता कर रखा है?

श्री चि० सुब्रह्मण्यमः वास्तव में ग्रागामी वर्ष के लिये हम ने ग्रमी समझौता नहीं किया। ग्रायात में कमी करने का विचार नहीं है क्योंकि हम समीकरण भण्डार रखना चाहते हैं।

श्री बड़े: मख्य प्रश्न के भाग (घ) के उत्तर में कहा गया है कि वितरण की कोई विट रहित पद्धित नहीं है। प्रत्येक राज्य के लिये एक उचित पद्धित बनाने में क्या किठनाई है? मंत्री जी ने ग्रभी तक कोई योजना नहीं बनाई है, इसमें किठनाई क्या है?

श्री चि० सुब्रह्मण्यम : केवल यह कहा गया है कि वितरण की कोई त्रुटिरिहत पद्धित नहीं हो सकती। वर्तमान परिस्थितियों के अन्तर्गत हम बहुत ही अच्छी पद्धित बनाने का प्रयत्न करेंगे। हम ने विभिन्न राज्यों के लिये पद्धित बनाई है।

**Shri Onkar Lal Berwa:** With the arrival of the imported wheat the price of indigenous wheat has gone up. Do the Government propose to reduce the price of the imported wheat on arrival of new crops?

श्री चि० सुब्रह्मण्यम : ग्रायातं किये हुए गहूं के मूल्य के घटाने का ग्रभी कोई विचार नहीं है।

श्रीमती रामदुलारी सिन्हाः क्या में जान सकती हूं कि सहकारी समितियों द्वारा कितने ग्रनाज के वितरण करने का विचार है?

श्री दा० रा० चव्हाण: ग्रनाज का वितरण उचित मूल्य वाली दुकानों द्वारा किया जता है।

डा० लक्ष्मीमल्ल सिंघवी: क्या सरकार यह बताने की स्थिति में है कि क्या आयात किये हुए अनाज के लिये भुगतान विदेशी मुद्रा अथवा भारतीय मुद्रा में किया जाता है। पी० एल० 480 के अन्तर्गत निधि का भुगतान कैसे किया जाता है?

श्री चि० सुब्रह्मण्यम: उस समझौते की एक प्रति सभा पटल पर पहले ही रख दी गई है स्रतः माननीय सदस्य उसमें देखं।

डा० लक्ष्मीमल्ल सिंधवी : क्या विभिन्न देशों से ग्रायात किये हुए गहूं के लिये भुगतान रुपयों में किया जाता है ?

श्री वि० सुब्रह्मण्यमः ग्रन्य देशों से ग्रायात या तो वस्तु-विनिमय के ग्राधार पर ग्रथवा विदेशी मद्रा में भुगतान के ग्राधार पर किया जाता है।

**Shri Tulshidas Jadhav:** There is shortage of foodgrains in the country; although cultivators produce it, but there is more distribution of foodgrains in cities rather than in villages. By making less supplies to the producers, how could the production of foodgrains be increased in the country? After all, why less supplies are made to them; and will the Government rectify the defects in the distribution system?

श्री दा० रा० चव्हाण: ग्रनाज का वितरण करना राज्य सरकारों का उत्तर-दायित्व है ग्रौर वे हो देहाती तथा शहरी क्षेत्रों के बीच इसका वितरण करते हैं।

श्री चि० सुबहाण्यम : इसको भी घ्यान में रखना पड़ेगा कि उत्पादन देहाती क्षत्रों म होता है श्रीर श्रनाज देहाती क्षत्रों में ही उपलब्ध है। शहरी क्षेत्रों को तो उस पर निर्भर करना पड़ेगा जो कुछ देहाती क्षत्रों से श्रायेगा। इसीलिये तो देहाती क्षेत्रों की तुलना में शहरी क्षत्रों में कुछ ग्रधिक ग्रनाज का वितरण करना पड़ता है।

Shri Tulshidas Jadhav: That is a wrong thing.

Mr. Speaker: Order, order. Even if it is wrong it cannot be corrected through quarrelling.

श्री पु० र० पटेल: क्या सरकार जानती है कि पग्न-खाद्य के मूल्य आयात किये हुए गेहूं के मूल्य से भी अधिक हैं और देश में आयात किये हुए गहूं का उपयोग पश्च-खाद्य के रूप में किया जाता है; और यदि हां, तो सरकार पशु-खाद्य के लिये कब तक गहूं का आयात करती रहेगी?

श्री चि० सुब्रह्मग्यम: मेरे विचार में पशु-खाद्य के लिये गेहूं का उपयोग नहीं किया जा रहा है ग्रौर मझे ऐसा बताया गया है कि सामान्यता पशु-खाद्य के रूप में गेहूं का उपयोग नहीं किया जा सकता है।

श्री पु० र० पटेल: मेरे माननीय मित्र को ऐसा किसने बताया है?

श्री चि॰ सुब्रह्मण्यम : ऐसा ही मुझे बताया गया है।

**ग्रध्यक्ष महोदय**: प्रश्न काल में हम तर्क अथवा एक दूसरे के विचारों का खंडन नहीं कर सकते हैं।

#### ग्रनाज के रूप में लगान

श्री शपाल सिंह : श्री भागवत झा श्राजाद \*527. < श्रीमती सावित्री निगम : श्री हिम्मतसिंहका : श्री रामेश्वर टांटिया :

.क्या **खाद्य तथा कृषि** मंत्री यह बताने की कृपा करेंग कि :

- (क) क्या किसी राज्य सरकार ने किसानों से लगान तथा ग्रन्य प्रकार के ऋण श्रनाज के रूप में वसूल करने का फैसला किया है:
  - (ख) यदि हां, तो उन राज्यों के नाम क्या हैं; ग्रौर
  - (ग) इस प्रयोग का क्या परिणाम निकला?

खाद्य तथा कृषि मंत्रालय में उपमंत्री (श्री दा० रा० चह्नाण) : (क) जो, हां ।

(ख) ग्रीर (ग) प्रश्न ही नहीं उठते ।

Shri Yashpal Singh: Are those State Governments that had submitted such proposals, have been asked as to whether the farmers would get relief by it or their difficulty would increase by it?

खाद्य तथा कृषि मंत्री (श्री चि० सुम्र ग्रण्यम) : स्रभी केवल मैसूर ने ही एसा करना स्वाकार किया है स्रौर हम ने उन्हें एसा प्रयोग करने की स्नन्ज्ञा दी है। परन्तु वे भी भ-राजस्व को स्ननाज के रूप मैं इकट्ठा करने मैं कठिनाई महसूस कर रह हैं।

Shri Yashpal Singh: Though the grains are ready with farmers but they are unable to sell it till three months, and it is not proper to ask them, at that time, for payment of land revenue. It should, rather, be collected after his crop is disposed of. Have the Government formulated any scheme for this purpose that they should not be asked to pay the land revenue so long as their grains are not disposed of?

श्री चि० सुब्रह्मण्यमः इस मामले का निर्णय करना राज्य सरकारों का काम है। हम इस मामले में हस्तक्षेप नहीं कर सकते।

श्रीमती सावित्री निगम: क्या में जान सकती हूं कि मैसूर राज्य को कौनसी यथार्थ किठनाइयों का सामना करना पड़ा? क्या केन्द्रीय सरकार इस योजना की कियान्विति में उनकी सहायता कर रही है?

श्री चि० सुब्रह्मण्यम : प्रश्न यह है कि हमें प्रत्येक किसान के सम्बन्ध में खरीद करने वाली एक एजेंसी स्थापित करनी पड़ेगी तथा हमें ग्रनाज की श्रेणी निर्धारित करनी पड़ेगी श्रीर उसके ग्राधार पर मूल्य निर्धारित करना पड़ेगा। किसानों से ग्रामाज इकट्ठा करने का यह कार्य करना एक सरकारी एजेंसी के लिये लगभग ग्रसम्भव ही होगा।

Shri R. S. Tewari: The farmers are very much in debt and they want to pay back their loans in the form of grains. But the Government do not take it from them with the result they have to suffer losses because they have, first, to sell their grains to the merchants and then make payments to the Government after getting money from them. May I know as to why the Government do not collect grains from them directly?

श्री चि० सुब्रह्मण्यम: जी, हां, इसीलिये तो हम ग्रालंब मूल्य निर्धारित कर रहे हैं जिससे मूल्य एक निश्चित स्तर से नीचे न जा सकें। इसके ग्रितिरिक्त सरकार खाद्य निगम संगठन को सारे देश में फैलाना चाहती है जिससे कोई भी व्यापारी फसलोत्तर मौसम में जित्पादक का शोषण नहीं कर सकेगा।

Shri Jagdev Singh Siddhanti: In the olden times, taxes were realised in the form not only of grains but in the form of all the commodities which were then produced. This system was always beneficial. Will the Government consider to collect taxes in the form of grains in accordance with that old system?

श्री चि० सुब्रह्मण्यम : एक समय था जब इस प्रणाली को बिल्कुल लिप्तप्रयोग समझा गया था ग्रौर इसी लिये ही तो हमने ग्रनाज के रूप में कर लेने की प्रणाली को बदल दिया था। ग्रब मेरे विचार में इस मूल प्रणाली को पुनः ग्रपनाना सम्भव नहीं है।

#### कृषकों की उर्वरकों के प्रति श्रक्वि

श्री प्र० रं० चक्रवर्ती :
श्री प्र० चं० बरुगा :
श्री सुधांशु दास :
श्री यशपाल सिंह :
श्री स० मो० बनर्जी :
श्री भागवत झा ग्राजाद श्रीमती सावित्री निगम श्री रा० गि० दुबे : श्री सुबोध हंसदा : श्री स० चं० सामन्त : श्री दी० चं० शर्मा : श्री विभूति मिश्र : श्री प्र० के० देव : श्री फ्र० के० देव : श्री फ्र० कु० घोष : श्री रामचन्द्र उलाका : श्री श्री सहेश्वर मीना : श्री महेश्वर नायक :

नया खाद्य तथा कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करगे किः

(क) क्या राष्ट्रीय व्यावहारिक म्रार्थिक म्रनुसन्धान परिषद् द्वारा हाल में किये गये

ध्रध्ययन सेपता चला है कि श्रभी भी कृषकों में उर्वरकों का प्रयोग करने की रुचि पैदा नहीं हुई है:

- (ख) यह बात कहां तक सच है कि उर्वरकों के संकुचित उपयोग के लिए ब्रधिक मूल्य भ्रसंतोषजनक ऋण व्यवस्था तथा वितरण व्यवस्था काफी उत्तरदायी हैं ;
- (ग) क्या यह सच है कि भारतीय परिस्थितियों में उर्वरकों का प्रयोग करने में कुछ जोखिम हैं जिनके कारण किसान परम्परागत खादों का प्रयोग नहीं छोड़ना चाहते हैं; भ्रौर
- (घ) सरकार ने राष्ट्रीय व्यावहारिक म्रार्थिक म्रनुसन्धान परिशद् की उपपत्तियों पर क्या कार्यवाही की है?

खाद्य तथा कृषि मंत्रालय में उपमंत्री (श्री दा० रा० चव्हाण) : (क) से (घ) रिपोर्ट पर सरकार द्वारा अध्ययन हो रहा है।

श्री प्र० रं० चक्रवर्ती: क्या सरकार ने इस बात को नोट किया है कि उन जिलों में जहां उर्वरकों की मांग 100 प्रतिशत थी, वहां भी किसान इसका निरंतर उपयोग नहीं करना चाहते? इस प्रसंग में क्या सरकार उर्वरकों के निरंतर उपयोग के बारे में किसानों में किया उत्पन्न करने के लिये उपाय करना चाहती है?

खाद्य तथा कृषि मंत्री (श्री चि० सुब्रह्मण्यम): वर्तमान स्थिति यह है कि हम मांग को पूरा नहीं कर पा रहे हैं। ग्रतः ऐसी कोई बात नहीं है कि किसान हिचकिचा रहे हैं। इसमें बाधा तो यह है कि हम उपेक्षित उर्वरक नहीं देपा रहे हैं।

श्री प्र० रं० चक्रवर्ती: क्या सरकार ने ग्रध्ययन दल की इस सिफारिश पर भी विचार किया है कि फसल बीमा योजना तथा किसान को मूल्य की गारंटी देने के बारे में जल्द निर्णय होना चाहिये?

श्री चि० सुब्रह्मण्यमः जहां तक फसल के बीमे का सम्बन्ध है हमने पंजाब में एक प्रमुख परियोजना के लिये प्रयत्न कर रहे हैं ग्रौर उससे प्राप्त ग्रनुभवों के ग्राधार पर इस को श्रन्य क्षेत्रों में लागू किया जा सकेगा।

Shri Yashpal Singh: It was stated in this honourable house that fertilisers are purchased from America @ Rs. 250/- per ton and they are supplied to farmers @ Rs. 400/- per ton. Have the Government considered to reduce the above difference in prices and to supply fertiliser to farmers at less price?

श्री चि० सुब्रह्मण्यम: मैंने पहले ही बता दिया है कि उर्वरक उद्योग के विभिन्न पहलुग्रोंमूल्य निर्धारण, वितरण तथा उत्पादन—पर विचार करने के लिये एक समिति नियुक्त
की गई है। उसकी रिपोर्ट मई के ग्रन्त तक उपलब्ध हो जायेगी ग्रौर तब इन सब बातों:
पर विचार किया जायेगा।

श्रीमती सावित्री निगम: विभिन्न शिकायतों की, कि फसलें नष्ट हो गई हैं क्यों कि जिस विशेष प्रकार की मिट्टी के लिये उर्वरक प्रयोग किया गया था वह उसके लिये उपयुक्त नहीं था, दृष्टि से सरकार मिट्टी परीक्षण प्रयोगशालायें खोलने के लिये क्या कार्य-वाही कर रही है जिससे किसानों को पता चल सके कि किस प्रकार की मिट्टी के लिये किस प्रकार का उर्वरक उपयुक्त है ?

श्री चि॰ सुब्रह्मण्यमः चौथी योजना में हम मिट्टी का एक व्यापक सर्वेक्षण करना चाहते हैं। हम इस वर्ष में काफी प्रयोगणालायें स्थापित करने के प्रयोजन के लिये पहले ही अग्निम कार्यवाही कर रहे हैं।

श्री स॰ चं॰ सामन्त: माननीय मंत्री ने यह माना है कि देश में उर्वरक की कमी है। क्या जो उपलब्ध मात्रा है उसका राज्यों में उचित रूप से वितरण किया जा रहा है जिससे प्रत्येक किसान में उर्वरकों का प्रयोग करने की रुचि पैदा हो सकेंं?

श्री चि सुब्रह्मण्यम : इस के लिये सभी प्रयत्न किये जा रहे हैं।

श्री दी॰ चं॰ शर्मा: क्या सरकार को इस बात का पता है कि भारत के लगभग सभी राज्यों में उवंरकों की विवरण प्रणाली इतनी दोषपूर्ण है कि उवंरक चोरबाजार में पहुंच जाते हैं ग्रीर इनको ग्रवैध रूप से शराब बनाने के काम में प्रयोग किया जाता है ग्रीर उन कार्यों में इनको इस्तेमाल किया जाता है जिनमें ये इस्तेमाल नहीं किए जाने चाहिएं? क्या मैं जान सकता हूं कि सरकार उवंरकों के वितरण से सम्बन्धित इन बुराईयों को दूर करने के लिए क्या उपाय करेगी?

श्री चि० सुब्रह्मण्यम: मैंने ग्रभी बताया है कि एक सिमिति नियुक्त की गयी है ग्रीर वह विभिन्न पहलुग्रों पर विचार कर रही है। इसका मुझे पता नहीं है कि क्या इसका ग्रवैध शराब बनाने में भी इस्तेमाल हो रहा है। यदि ऐसा है तो इस बात पर भी विचार किया जाएगा। हमें इस सिमिति के प्रतिवेदन की इन्तजार करनी चाहिए।

श्री कपूर सिंह : क्या सरकार को पता है कि किसान लोग उर्वरकों का इसलिए इस्तेमाल नहीं कर रहे हैं क्योंकि सरकारी ग्रीर ग्रर्ध-सरकारी ग्रिभिकरणों द्वारा संभरित किये जा रहे उर्वरकों में बड़े पैमाने पर मिलावट होती है ; यदि हां, तो सरकार इस बारे में क्या कार्यवाही करेगी?

श्री चि० सुब्रह्मण्यम: मैं नहीं समझता कि माननीय सदस्य ने यह निष्कर्ष सही निकाला है।

श्री कपूर सिंह: मुझे स्वयं इसका पता है। मैं भी एक किसान हूं :

**श्रध्यक्ष महोद**यः मुझे दोनों माननीय सदस्यों पर विश्वास करना पड़ता है। मैं न्या करूं।

श्री हें म बरु आ: जब कि किसानों में उर्वरकों के प्रति रुचि बिजली ग्रीर प्रेम के सनान पैदा की जा सकती है, क्या मैं जान सकता हूं कि सरकार ने ग्रब तक किसानों में उर्वरकों के इस्तेमाल के प्रति रुचि पैदा करने में क्या कदम उठाए हैं?

श्री चि॰ सुब्रह्मण्यम: हम केवल लोगों में उर्वरकों के इस्तेमाल के प्रति रुचि पैदा ही नहीं कर रहे हैं बल्कि इसमें काफी रुचि पैदा हो गयी है। जैसा मैं बता चुका हूं कमी संभरण की है, किसानों की नहीं।

Shri Rameshwaranand: The fertilisers supplied by the Government require plenty of water and several times it happens that crops fail for want of water. The dung manure requires comparatively less water. Are the Government considering to increase the supply of dung manure?

श्री चि॰ सुब्रह्मण्यम: परम्परागत खाद जैसे गोवर की खाद, हरी खाद ग्रीर ग्रन्य खाद किसान लोग स्वयं तैयार कर सकते हैं।

Shri Rameshwaranand: Are Government also cooperating with them?

Mr. Speaker: Please see that cows give more dung.

Shri Sarjoo Pande: I want to know whether complaints have been received from U.P. that farmers are forcibly given fertilisers and generally fertilisers are supplied to such farmers who do not need it and whether Government would appoint Committees at the district level so as to see that fertilisers are supplied to only those fertilisers who actually need it.

श्री चि॰ सुब्रह्मण्यम : यह एक सुझाव है जो मैं उत्तर प्रदेश सरकार को भेज दूंगा।
प्रनाज के उठवाने के काम का विभागीकरण

भी हिम्मतसिंहका :
\*529. श्री प्र० चं० बरुग्रा :
श्री रामेश्वर टांटिया :

क्या खाद्य तथा कृषि मन्त्री 15 दिसम्बर, 1964 के तारांकित प्रश्न संख्या 526 के उत्तर के सम्बन्ध में यह बताने की कृपा करेंगे कि कलकत्ता में ग्रनाज के उठवाने के काम का विभागीकरण करने के प्रश्न पर सरकार ने क्या निर्णय किया है ?

खाद्य तथा कृषि मंत्रालय में उपमंत्री (श्री दा० रा० चव्हाण): यह निर्णय किया गया कि कल-कत्ते में ग्रनाज उठवाने के काम का विभागीकरण स्टेजों में धीरे धीरे किया जाए। प्रारम्भ में एक घाट पर निकासी के लिये ग्रनाज को मैरिन लेग के द्वारा उठवाने के प्रबन्ध किये जायेंगे। ग्राशा है कि मैरिन लेग ग्रागामी कुछ सप्ताहों में कार्य करने लगेगा।

श्री हिम्मतिंसहका: क्या सरकार को पता है कि जहाजों से गोदामों तक ग्रनाज ले जाने में काफी ग्रनाज गलत जगह डाल दिया जाता है ग्रीर यदि हां, तो क्या सरकार इस बारे में कोई उचित कदम उठाएगी ?

श्री दा० रा० चव्हाण: इसी कारण तो कलकत्ता में यह मैरिन लेग लगाया जा रहा है जहां श्रनाज जहाज से सीधा गोदामों में ले जाया जाएगा।

श्रीमती सावित्री निगम: उन स्वचालित मशीनों का क्या हुन्ना जो इस काम के लिए कलकत्ता पत्तन पर लगायी जाने वाली थीं ?

श्री चि॰ सुब्रह्मण्यम: इस समय ये मशीनें बम्बई ग्रीर कांडला पत्तनों पर लगायी जा रही हैं।

#### Movement of Food-grains

Shri D. C. Sharma:
Shri Sidheshwar Prasad:
\*530. { Shri P. C. Borooah:
Shri P. R. Chakraverti:
Shrimati Savitri Nigam:

Shri A. N. Vidyalankar:
Shri Yashpal Singh:
Shri Bibhuti Mishra:
Shri Kolla Venkaiah:
Shri P. L. Barupal:
Shri Sham Lal Saraf:

Will the Minister of Food and Agriculture be pleased to state:

- (a) whether it is a fact that rules and regulations in regard to the movement and price control of foodgrains have not been enforced effectively by the States;
  - (b) if so, the reasons therefor; and
  - (c) the steps being taken to make the said rules effective?

साद्य तथा कृषि मंत्रालय में उपमंत्री (श्री दा० रा० चव्हाण) : (क) जी, नहीं।

(ख) ग्रौर (ग). प्रश्न ही नहीं उठते ।

श्री दी० चं० शर्मा: क्या मैं जान सकता हूं कि आजकल खाद्यान्नों के लाने ले जाने के लिए कौन से नियम तथा विनियम लागू हैं ?

खाद्य तथा कृषि मंत्री (श्री चि० सुब्रह्मण्यम): चावल के सम्बन्ध में हर राज्य एक क्षेत्र है ग्रीर एक राज्य से दूसरे राज्य में चावल केवल सरकारी परिमट पर ही ले जाया जा सकता है। ग्रीर केवल सरकार ही चावल ले जा सकती है। यह एक प्रमुख बात है। गेहूं के बारे में भी ग्रब एक राज्य से दूसरे राज्य में ले जाया जा सकता है, पंजाब के ग्रितिरक्त, क्षेत्रीय तौर पर लाने ले जाने को जम्मू तथा काश्मीर ग्रीर हिमाचल प्रदेश से सम्बद्ध किया जा रहा है। ग्रतः वहां भी गेहूं का लाना ले जाना सरकार के ग्रिधकार पर या केवल सरकारी ग्राधार पर, एक राज्य से दूसरे राज्य में हो सकता है।

श्री दी॰ चं॰ शर्मा: सरकार की मूल्य नियन्त्रण व्यवस्था में कुछ किमयों की बात हो रही है। क्या मैं जान सकता हूं कि क्या मूल्य नियन्त्रण व्यवस्था की किसी तुटि को दूर किया गया है और यदि नहीं तो उन्हें कब दूर किया जाएगा ?

श्री चि० सुब्रह्मण्यम: जहां तक मूल्य नियन्त्रण का सम्बन्ध है, ग्रब यह केवल धान ग्रौर चावल पर है ग्रौर यह लगभग सन्तोषजनक रूप से चल रहा है।

श्री प्र॰ रं॰ चक्रवर्ती: क्या सरकार ने इन दोनों पहलुग्नों पर विचार कर लिया है ग्रर्थात् क्षेत्रीय व्यवस्था को जारी रखना ग्रौर इस व्यवस्था को समाप्त करने के लिये कोई दीर्घ-कालीन योजना, यदि कोई है ?

श्री चि॰ मुबह्मण्यम दिर्घ-कालीन योजना क्षेत्र रखने की नहीं है बल्कि देश को एक इकाई बनाने की है। लेकिन अल्प-कालीन पहलू के बारे में हमने हाल ही में मुख्य मन्त्रियों से बातचीत की है ब्रिजीर आशा है हम शीघ्र ही कोई निर्णय कर लेंगे।

श्रीमती सावित्री निगम: क्या मैं जान सकती हूं कि क्या सरकार को और मन्त्री महोदय को खाद्य के समाहार करने वालों से कोई अभ्यावेदन प्राप्त हुए हैं कि यह लाने ले जाने की पद्धति और जिस रूप में इसको लागू किया जा रहा है, यह सभी दोषपूर्ण है और इसी कारण मुख्य केन्द्रों में अधिक अनाज पड़ा है ? श्री चि० सुब्रह्मण्यम : मुझे ऐसा कोई अभ्यावेदन नहीं मिला है।

Shri Yashpal Singh: Police is harassing those harijan women who take even one seer of grains on the Delhi border but Government could not stop those who move thousands of maunds of grain against the law. You can take any number of trucks any where provided you give them five rupees per truck but harijan women are given beating even for one seer of atta. I want to know the measures taken by Government in this respect.

Shri D. R. Chavan: A restriction has been imposed to take outside Delhi even one seer of it and those who do not take outside could not be given beating.

Shri Yashpal Singh: What is being considered for trucks which are going illegally?

Shri Achal Singh: Is it not a fact that there is corruption and smuggling done to movement control?

श्री दा० रा० चव्हाण : यह बात सही नहीं है।

श्री नरेन्द्र सिंह महीडा: क्या मैं जान सकता हूं कि क्या ाह सच है कि गुजरात की राज्य सरकार ने केन्द्रीय सरकार से कहा है कि वह खाद्य क्षेत्र समाप्त करें ग्रीर राज्य में ग्रनाज के निर्वाध रूप से लाने ले जाने की ग्रनुसित दे ?

श्री वि॰ सुब्रह्मण्यम : जी, हां । इस बारे में गुजरात सरकार के विचार केन्द्रीय सरकार को बता विए गए हैं ।

श्री रंगा: क्या सरकार ने इस बात पर विचार किया है कि केन्द्रीय जांच ब्यूरो से यह जांच करने को कहा जाए कि राजनीतिक व्यक्तियों द्वारा ग्रौर सीमान्त क्षेत्रों में सभी चुंगियों पर तैनात पुलिस द्वारा क्षेत्रीय नियन्त्रण का किस हद तक ग्रौर किस प्रकार उल्लंघन किया जा रहा है ?

श्री चि० सुब्रह्मण्यमः इस मामले में केन्द्रीय जांच ब्यूरो द्वारा जांच कराने का कोई प्रस्ताव नहीं है।

श्री दाजी: क्या सरकार को मोटे अनाज के लाने ले जाने पर नियन्त्रण के सम्बन्ध में चिन्तनीय स्थिति का पता है जिसके फलस्वरूप फसल आने पर इसके ले जाने पर प्रतिबन्ध लगा दिया जाता है और व्यापारियों द्वारा अनाज खरीदे जाने पर प्रतिबन्ध यकायक हटा दिया जाता है जैसा कि पिछले अप्रैल मास में हुआ और अब भी हो रहा है और क्या सरकार मोटे प्रनाज के बारे में भी कोई समान नीति अपनाने पर विचार करेगी?

श्री चि० सुब्रह्मण्यम: हम नीति के बारे में पहले ही निर्णय कर चुके हैं ग्रौर हम इस पर दृढ़ रहेंगे; सीजन के दौरान हम इसको नहीं बदलेंगे।

Shri Jagdev Singh Siddhanti: As Hon. Yashpal Singh Ji said that due to restrictions the corruption takes place in the movement of grains. What steps Government consider to take to suproot corruption?

Shri D. R. Chavan: No, Sir.

डा० लक्ष्मीमल्ल सिंहवी: क्या मैं जान सकता हूं कि क्या मुख्य मन्त्रियों के साथ किए गए हाल के परामर्श में किसी बात पर कोई सहमित हो पाई ग्रौर यदि नहीं तो मुख्य बात क्या थी?

श्री चि॰ सुब्रह्मण्यम: मुख्य बात यह थी कि कुछ राज्य 'जोन' जारी रखना चाहते थे श्रीर कुछ श्रन्य राज्य 'जोन' समाप्त करना चाहते थे।

Shri R.S. Pandey: Due to restrictions on the movement of foodgrains, the prices have gone up in certain areas. I want to know if by coming of a good rabi crop, the restrictions would be liberalised to some extent?

श्री चि॰ सुबह्मण्यमः यह मामला विचाराधीन है श्रीर श्राशा है कि हम शीघ्र ही कोई फैसला कर लेंगे।

श्री द्वा॰ ना॰ तिवारी : लोग ग्रपने सरों पर ग्रनाज की टोकरी लिए एक राज्य से दूसरे में ग्रा-जा रहे हैं । क्या सरकार इस बारे में भी नियन्त्रण की दृष्टि से कोई विचार कर रही है ?

श्री दा॰ रा॰ चव्हाण: एक यात्री पांच किलोग्राम वजन ग्रपने साथ ले जा सकता है। जो ग्रादेश जारी किए गए हैं, उनमें यह छूट दी गई है।

Shrimati Jamuna Devi: Is it not a fact that in most of the States, the opinion is that the foodgrains movement policy of the Government has proved unsatisfactory. The collectors have done as they liked in movement of grains. There has been much difficulty and inconvenience to small traders. Is it not the policy of the Government that facilities should be given to big traders and not to small traders. If so, I want to know upto what time this policy would be continued?

Mr. Speaker: The Hon. Minister should see to it.

Shri K. N. Tiwary: The Hon. Minister just now said that there are two sets of Chief Ministers. One set is wanting the continuation of the zones and the other set wanting the discontinuation of the zones. Deficits States want the discontinuation and the surplus States want the continuation of the zones. I want to know whether the Central Government have their own policy in this respect?

श्री चि॰ सुब्रह्मण्यम: मैं बता चुका हूं कि मामला विचाराधीन है ग्रीर हम शीघ्र ही फैसला कर लेंगे।

Shri Daljit Singh: Some traders have been arrested in this connection for keeping more stocks and it was also said that people were also arrested for taking grains from one zone to another. I want to know the action taken against them?

श्री चि० सुब्रह्मण्यम: जब तक पूर्व सूचना न दी जाए, मैं इस प्रकार प्रश्न का उत्तर नहीं दें सकता।

श्री राघेलाल व्यास: क्या मैं जान सकता हूं कि क्या सरकार अपने एक वर्ष के अनुभव का देखते हुए इस निष्कर्ष पर पहुंची है कि खाद्यान्न के लाने ले जाने पर प्रतिबन्धों से मूल्य स्थिर रहे हैं और खरीदा गया अनाज अन्य राज्यों को उचित मूल्य पर दिया गया है और यदि इन प्रतिबन्धों को ढीला किया गया तो इससे समूची खाद्य नीति ही बिगड़ जाएगी ?

श्री चि० सुब्रह्मण्यम: यह तो ज्रोन बनाए रखने के लिए एक तर्क है। ज्रोन समाप्त करने के लिए ग्रन्य तर्क दिए गए हैं। यह प्रतिबन्ध केवल एक राज्य से दूसरे राज्य में ले जाने के बारे में है। एक गांक मा एक राज्य के भीतर प्रतिबन्ध का कोई प्रश्न नहीं है।

Shri Onkar Lal Berwa: The Hon. Minister has just now said that some States have consented for the continuation of the zones and the other for the discontinuation of the zones. I want to know the names of States which are in favour or against the continuation of the zones.

Shri D.R. Chavan: The restriction has been imposed in the union territory of Delhi and there are statutory control orders in each State and five kilograms....

Shri Onkar Lal Berwa: Which of the States have disagreed....

**अध्यक्ष महोदय :** कौन कौन से राज्य सहमत नहीं हुए हैं।?

श्री चि॰ सुब्रह्मण्यम: गुजरात स्रौर महाराष्ट्र चाहते हैं कि जोन समाप्त कर दिए जाएं। अन्य राज्य जोन बनाए रखना चाहते हैं।

# प्रश्नों के लिखित उत्तर WRITTEN ANSWERS TO QUESTIONS

## ग्रनुसूचित ग्रादिम जातियां

श्री उइके : श्री राम सहाय पाण्डेय : श्री विद्याचरण शुक्ल : श्री राधेलाल व्यास : डा० चन्द्रभान सिंह :

क्या सामाजिक सुरक्षा मन्त्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

- (क) क्या अनुसूचित आदिम जातियों में का निर्धारण करने के लिये सरकार द्वारा अब तक अपनाई गई कसौटियों की असंगतियों को दूर करने के लिये एक समिति नियुक्त करने के प्रस्ताव पर सरकार विचार कर रही है ; और
  - (ख) यदि हां, तो उसका व्यौरा क्या है ?

विधि मंत्री (श्री ग्र० कु० सेंन): (क) ग्रनुसूचित जातियों तथा ग्रनुसूचित ग्रादिम जातियों की सूची का निर्धारण करने के लिये एक मूल्यांकन समिति नियुक्त करने के प्रश्न पर विचार किया जा रहा है।

(खं) व्यौरा स्रभी पूरा नहीं किया गया है। स्राशा है कि स्राखिरी फैसला शीघ्र ही कियह जाएगा।

#### पटसन विकास समिति

नया साद्य तथा कृषि मन्त्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

- (क) क्या यह सच है कि सरकार ने श्री वास्तव समिति की सिफारिशों के अनुसार केन्द्रीय पट-सन विकास समिति स्थापित की है;
  - (ख) यदि हां, तो सिमिति के कृत्य क्या होंगे ;
- (ग) क्या भारतीय केन्द्रीय पटसन समिति के संस्थापन में कोई परिवर्तन किया जाएगा ;
  - (घ) यदि हां, तो क्या क्या परिवर्तन किये जायेंगे ?

साद्य तथा कृषि मंत्री (श्री चि० सुब्रह्मण्यम): (क) पटसन विकास मण्डल की स्थापना के बिषय में श्रीवास्तव समिति की सिफ।रिशों के अनुसार भारत सरकर ने केन्द्रीय पटसन विकास समिति की स्थापना की है।

- (ख) एक विवरण सभा पटल पर रख दिया गया है।
- (ग) ग्रौर (घ). केन्द्रीय पटसन विकास सिमिति की स्थापना के परिणामस्वरूप भारतीय केन्द्रीय कपास सिमिति के संस्थापन में कोई परिवर्तन करने का विचार नहीं है। परन्तु केन्द्रीय जिन्स सिमितियों, जिनमें भारतीय केन्द्रीय कपास सिमिति भी शामिल है, के पुनर्गठन का प्रश्न विचाराधीन है।

#### विवरण

केन्द्रीय कपास विकास समिति के निम्न कृत्य होंगे :--

- (1) पटसन तथा सम्बद्ध रेशों के विषय में राज्य सरकारों द्वारा तैयार किये गये विकास कार्यक्रमों की जांच-पड़ताल करना ;
- (2) निर्धारित लक्ष्यों के विषय में पटसन विकास कार्यों की प्रगति का अवलोकन करना;
- (3) विकास कार्यक्रमों को गतिमान करने के विषय में सिफारिशें करना;
- (4) पटसन तथा सम्बद्ध रेशों के गुण में सुधार करने के विषय में विशेष योजनायें सुझाना तथा उनके बारे में स्वीकार की गई योजनात्रों की गति की जांच-पड़ताल करना;
- (5) उत्पादन केन्द्रों में पटसन तथा ग्रन्य सम्बद्ध रेशों की मौजूदा कीमतों का मूल्यांकन करना तथा मूल्यों को सुदृढ़ करने के लिए उपाय सुझाना ; ग्रौर
- (6) उत्पादन केन्द्रों से विपणन केन्द्रों तक पटसन तथा सम्बद्ध रेशों की गतिविधि का हिसाब किताब रखना तथा इस सम्बन्ध में मार्ग में ग्रागे वाली रुकावटों को दूर करना।

#### भ्रनेतिक पण्य

श्री हेडा : श्री यशपाल सिंह : श्री हुकम चन्द कछवाय : श्री ग्रोंकार लाल बेरवा :

क्या सामाजिक सुरक्षा मन्त्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

- (क) क्या सरकार का घ्यान 21 जनवरी, 1965 को नारी रक्षा समिति की दिल्ली शाखा की प्रधान द्वारा सम्बोधित प्रेस कान्फ्रेंस की भ्रोर दिलाया गया है जिसमें उन्होंने स्त्रियों तथा लड़ कियों के अनैतिक पण्य दमन अधिनियम, 1956 में तत्काल संशोधन करने तथा राजधानी में इस बुराई को समाप्त करने के लिये पुलिस तथा सामाजिक कार्यकर्ताश्रों को अधिक शक्तियां देने की मांग की थी;
- (ख) यदि हां, तो समाज सुधार के इस कार्य के लिये इस समिति ने क्या-क्या मुख्य सुझाव दिये हैं ; ग्रौर
  - (ग) प्रत्येक सुझाव पर सरकार की क्या प्रतिकिया है ?

विधि मंत्रालय सें उपमंत्री (श्री जगन्नाथ राव) : (क) सरकार ने कान्फेंस के बारे में प्रका-शित समाचार देखे हैं तथा उसे समिति द्वारा पास किए प्रस्तावों की प्रतिलिपि भी प्राप्त हो गई है ।

- (ख) सिमति ने ग्रनैतिक पण्य दमन ग्रिधिनियम, 1956 में संशोधन करने के लिये निम्न सुझाव दिये हैं:--
  - (1) अनैतिक पण्य दमन को गैर -जमानती अपराध घोषित किया जाय।
  - (2) मकान मालिक, चरित्रहीन स्त्री तथा ग्राहक के चालान की साझी व्यवस्था होनी चाहिए;
  - (3) ग्रधिनियम के ग्रन्तर्गत ग्रपराधों से निपटने के लिये पुलिस तथा सामाजिक कार्य कर्ताग्रों को ग्रधिक ग्रधिकार मिलने चाहिए; ग्रौर
  - (4) पकड़ी गई पतित स्त्रियों को सुधारने के लिये सुरक्षा गृह स्थापित करने चाहिए।
- (ग) ये तथा अन्य सुझाव बहुत सी राज्य सरकारों /दूसरे समाज सेवा संस्थानों से प्राप्त हुए हैं। इन पर विचार हो रहा है और कार्यवाही की जायेगी।

### रेगिस्तान विकास बोर्ड

श्री रामचन्द्र उलाका :
श्री धुलेश्वर मीना :
श्री प्र० रं० चक्रवर्ती :
श्री सुबोध हंसदा :

वया खाद्य तथा कृषि मन्त्री 15 सितम्बर, 1964 के तारांकित प्रश्न संख्या 181 के उत्तर के सम्बन्ध में यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या इस बीच प्रस्तावित रेगिस्तान विकास बोर्ड के कार्यों, शक्तियों और परिचालन कार्यक्रम का ब्यौरा अन्तिम रूप से निश्चित कर लिया गया है ;

- (ख) यदि हां, तो उसकी विस्तृत रूपरेखा क्या है ; ग्रौर
- (ग) इस नई संस्था की कार्यवाहियों का क्षेत्र तथा ग्राकार क्या होगा ग्रौर रेगिस्तान विकास कार्य में राज्य किस हद तक सहयोग करेंगे ?

खाद्य तथा कृषि मंत्री (श्री चि० सुब्रह्मण्यम) : (क) से (ग). इस समय योजना स्रायोग इन सब बातों पर विचार कर रहा है स्रौर शीघ्र ही कोई निर्णय हो जाने की स्राशा है।

## मुख्य मंत्रियों का सम्मेलन

श्री दी० चं० शर्मा :
श्री विश्वनाय पाण्डेय :
श्री दे० जी० नायक :
श्री छ० म० केंद्रिया :
श्री बालमीकी :
श्री श्रोंकार लाल बेरवा :
श्री हुकम चन्द कछवाय :
श्री हिम्मत सिहका :

क्या खाद्य तथा कृषि मन्त्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

- (क) क्या गेहूं का उत्पादन करने वाले राज्यों के मुख्य मिन्त्रयों की गेहूं नीति के सब पहलुग्रों पर, जिनमें गेहूं खण्डों का जारी रखना भी शामिल है, विचार करने के लिये केन्द्र के साथ 5 से 9 मार्च, 1965 तक एक बैठक हुई थी; ग्रौर
  - (ख) यदि हां, तो इस सम्बन्ध में क्या निर्णय किया गया है ?

खाद्य तथा कृषि मंत्री (श्री चि० सुब्रह्मण्यम) : (क) जी, हां।

(ख) ग्रन्तिम निर्णय ग्रभी नहीं लिया गया है।

रिवर स्टीम नेवीगेशन कम्पनी लिमिटेड

\*536. श्री इन्द्रजीत गुप्त :

क्या परिवहन मन्त्री 2 मार्च, 1965 के तारांकित प्रश्न संख्य 213 के उत्तर के सम्बन्ध में यह बताने की कृपा करेंगे कि:

- (क) रिवर्स स्टीम नैवीगेशन कम्पनी लिमिटेंड के नये निदेशक बोर्ड में सरकार द्वारा नियुक्त किये गये दस निदेशकों के नाम क्या हैं;
  - (ख) क्या सरकार का विचार इस कम्पनी को न लाभ न हानि के ग्राधार पर चलाने का है।
- (ग) क्या इस कम्पनी को पहले दिए गये 2 करोड़ रुपये से अधिक के सरकारी ऋणों को बट्टे खाते में डालने का फैसला कर लिया गया है ; और
- (घ) क्या इस कम्पनी के सरकार द्वारा ले लिये जाने के पश्चात् कम्पनी के वर्तमान भारतीय कर्मचारियों की नौकरियों तथा सेवा की शर्तों को संरक्षण प्रदान किया जायेगा ?

परिवहन मंत्री (श्री राज बहादुर): (क) से (घ). अपेक्षित सूचना देने वाला एक विवरण सभा पटल पर रखा जाता है ! [पुस्तकालय में रखा गया । देखिये संख्या एल० टी० 4035/65].

#### भिखारी समस्या

क्या सामाजिक सुरक्षा मन्त्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

- (क) क्या यह सच है कि योजना आयोग के समाज कल्याण सम्बन्धी पेनल ने भारत की राज-धानी तथा अन्य बड़े नगरों में भिखारी समस्या के विभिन्न पहलुओं पर कार्यवाही करने के लिये कुछ विशेष उपायों की सिफारिश की है;
  - (ख) यदि हां, तो योजना भ्रायोग के उक्त पैनल की मुख्य सिफारिशें क्या हैं; भ्रौर
  - (ग) उन सिफारिशों को कार्यान्वित करने के लिये क्या कदम उठाये जा रहे हैं ?

विधि मंत्रालय में उपमंत्री (श्री जगन्नाथ राव): (क) से (ग). पेनल की बैठक 8 मार्च 1965 को हुई थी ग्रौर उसने ग्रभी तक इस विषय पर ग्रपनी रिपोर्ट नहीं दी है। रिपोर्ट मिलने पर योजना ग्रायोग द्वारा उसका ग्रघ्ययन किया जाएगा। योजना को कार्यान्वित तभी किया जाएगा जब कि वह पूरी हो जाएगी।

#### गोंडा चुनाव

क्या विधि मन्त्री गोंडा संसदीय चुनाव सम्बन्धी 8 दिसम्बर, 1964 के ग्रतारांकित प्रश्न संख्या 408 के उत्तर के सम्बन्ध में यह बताने की कृपा करेंगे कि :

- (क) क्या उत्तर प्रदेश के कुछ अधिकारियों के आचरण के बारे में जांच पूरी हो गई है;
- (ख) यदि हां, तो उसके मुख्य निष्कर्ष क्या हैं ; स्रौर
- (ग) सम्बन्धित ग्रधिकारियों के विरुद्ध इस बीच क्या कार्यवाही की गई है ?

विधि मंत्री (श्री ग्र० कु० सेन) : (क) जी, नहीं।

(ख) ग्रौर (ग). प्रश्न ही नहीं उठता ।

#### मध्य प्रदेश में चीनी मिल

श्री चाण्डक : श्री विश्वनाथ पाण्डेय : श्री पाराशर : डा० चन्द्रभान सिंह :

क्या खाद्य तथा कृषि मंत्री यह इताने की कृपा करेंगे कि :

- (क) क्या यह सच है कि चीनी मिलें स्थापित करने के लिये मध्य प्रदेश सरकार से प्राप्त हुए, दस ग्रावेदन-पत्नों में से तीन ग्रावेदन-पत्न भारत सरकार के विचाराधीन हैं ;
- (ख) यदि हां, तो ग्रावेदकों के नाम क्या हैं तथा ये चीनी मिलें कहां-कहां स्थापित की जायेंगी ; ग्रीर
  - (ग) ग्रन्तिम निर्णय राज्य सरकार को कब तक बताये जाने की सम्भावना है ?

खाद्य तथा कृषि मंत्री (श्री चि० सुब्रह्मक्यम): (क) ग्रौर (ख) नये शर्करा कारखाने स्थापित करने के लिये मध्य प्रदेश से प्राप्त 10 ग्रावेंदन-पत्नों में से दो ग्रावेदन-पत्नों ग्रर्थात् जिला मोरेना के लिए मोरेना मंडल सहकारी शक्कर कारखाना लिमिटेड ग्रौर जिला इन्दौर के लिए दी मालवा सहकारी शर्करा मिल्स के दो ग्रावेदन-पत्नों पर विचार किया जा रहा है।

(ग) इन ग्रावेदन-गत्नों पर ग्रन्तिम निर्णय लेने में कुछ समय लगेगा ।

### चीनी के नये कारखानों के लिये लाइसेंस

श्री प्र० चं० बरुग्रा :
श्री प्र० रं० चक्रवर्ती :
श्री दी० चं० शर्मा :
श्री विभूति मिश्र :
श्रीमती रामदुलारी सिन्हा :
श्री क० ना० तिवारी :
श्री गुलशन :

क्या खाद्य तथा कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

- (क) क्या यह सच है कि देश में तये चीनी के कारखानों के लिये लाइसेंस देने ग्रीर वर्तमान चीनी कारखानों के विकास में वित्त की कमी बाधक रही है ;
- (ख) यदि हां, तो चीनी के कारखानों का विकास तीसरी पंचवर्षीय योजना के कार्यक्रम से कितना पीछे रह गया है ;
- (ग) क्या चीनी उद्योग में राज्य द्वारा भाग लेकर इस कमी को दूर करने का विचार है ; श्रीर
  - (घ) यदि हां, तो सम्बन्धित योजनाम्रों का ब्यौरा क्या है ?

खाद्य तथा कृषि मंत्री (श्री चि॰ सुबह्मण्यम): (क) यह सत्य है कि लाइसेंस जारी करने से पहले वित्तीय व्यवस्था करनी पड़ती थी । हाल ही में, लगभग 3.9 लाख मीट्रिक टन की ग्रतिरिक्त क्षमता के लिए वर्तमान 62 शर्करा कारखानों को इटैंट पत्र जारी किये गये हैं। इस वर्ष लगभग 10 नये शर्करा कारखानों को लाइसेंस देने की ग्राशा है।

- (ख) तीसरी योजनाविध के अन्त में शर्करा उद्योग की स्थापित क्षमता 32.5 लाख मीट्रिक टन के आस पास हो जाने की आशा है जबिक तीसरी पंचवर्षीय योजना के लिये यह लक्ष्य 35.6 लाख मीट्रिक टन निर्धारित किया गया था।
- (ग) ग्रौर (घ). जी, नहीं । निजी क्षेत्र में कुछ बड़े शूगर-कम-बैगास पहन यूनिट्स स्थापित करने की सम्भावना की जांच की जा रही है ।

#### Price of Khadi

### \*54<sup>1</sup>. ∫ Shri Onkar Lal Berwa : Shri Hukam Chand Kachhavaiya :

Will the Minister of Social Security be pleased to state :

- (a) whether it is a fact that Government have taken a decision to raise prices of Khadi by 25 per cent in the Northern region;
  - (b) if so, the reasons therefor; and
  - (c) when the prices are likely to be raised?

The Deputy Minister in the Ministry of Law (Shri Jagannath Rao):
(a) No. Sir.

(b) and (c). Do not arise.

#### चीनी विपणन बोर्ड

श्री यशपाल सिंह : श्रीमती सावित्री निगम : श्री रा० गि० दुबे : श्री रामचन्द्र उलाका : श्री घुलेश्वर मीना :

क्या खाद्य तथा कृषि मंत्री 8 दिसम्बर, 1964 के तारांकित प्रश्न संख्या 405 के उत्तर के सम्बन्ध में यह बताने की कृपा करेंगे कि :

- (क) क्या सरकार ने इस बीच चीनी विपणन बोर्ड स्थापित करने का अन्तिम निर्णय कर लिया है ; और
  - (ख) यदि नहीं, तो कब तक निर्णय किये जाने की सम्भावना है ?

खाद्य तथा कृषि मंत्री (श्री चि० सुब्रह्मण्यम) : (क) जी, नहीं।

(ख) इस मामले पर सेन म्रायोग की सिफारिशें प्राप्त होने के बाद ।

# कर्मचारियों की लापरवाही के लिये राज्य की जिम्मेदारी

1378. श्री हेमराज: क्या विधि मंत्री कर्मचारियों की लापरवाही के लिये राज्य की जिम्मेदारी सम्बन्धी 24 नवम्बर, 1964 के स्रतारांकित प्रश्न संख्या 397 के सम्बन्ध में यह बताने की कृपा करेंगे कि प्रस्तावित विधान लाने में कितनी प्रगति हुई है ?

विधि मंत्रालय में उपमंत्री (थी जगन्नाथ राव) : मामला त्रभी विचाराधीन है।

### पिछडे वर्ग

1379. श्री सिद्दया : क्या सामाजिक सुरक्षा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

- (क) पिछड़े दर्गों सम्बन्धी मंत्रियों के 1964 में हुए सम्मेलन ने क्या क्या मुख्य सिफारिशें की थीं ; ग्रौर
  - (ख) राज्य सरकारों श्रोर केन्द्रीयइन्हें कहां तक कियान्वित किया है ?

सामाजिक सुरक्षा विभाग में उपमंत्री (श्रीमती चन्द्र शेखर): (क) ग्रीर (ख). राज्यों के पिछड़े वर्गों सम्बन्धी मंत्रियों ग्रीर सहकारिता सम्बन्धी मंत्रियों का एक सम्मेलन सामुदायिक विकास तथा सहकार मंत्रालय वार पिछड़े वर्गों के लिये सहकारिता सम्बन्धी विशेष कार्यकारी दल की सिफारिशों पर विचार करने के लिए मई, 1964 में बुलाया गया था। सम्मेलन में की गई सिफारिशों पर सामुदायिक विकास तथा सहकार गंत्रालय (सहकारिता विभाग) में ग्रग्रेतर कार्यवाही की जा रही है।

### Bahadurgarh.—Central Secretariat Delhi Bus Service

Shri Jagdev Singh Siddhanti :

Shri Sadhu Ram :

Shri Bagri :

Will the Minister of **Transport** be pleased to refer to the reply given to Unstarred Question No. 1683 on the 22nd December, 1964 regarding the starting a direct bus service from Bahadurgarh to Central Secretariat and vice versa and state the progress since made in the matter?

The Minister of Transport (Shri Raj Bahadur): The Delhi State Transport Authority have decided that the three existing permit holders on Delhi-Bahadurgarh route performing 18 trips at present may be asked to perform six more single trips i.e., 3 in the morning and 3 in the evening from Bahadurgarh to Central Secretariat and vice versa. As required under the Motor Vehicles Act, 1939 notice inviting objections and representations to the proposed increase in the number of trips and extension of the existing route has already been issued by the Authority on the 24th February, 1965 On expiry of the prescribed period, the matter will again be placed before the Authority for finalisation of the proposal.

मध्य प्रदेश में भ्रनुसूचित जातियां तथा भ्रनुसूचित भ्रादिम जातियां

- 1381. श्री लखमू भवानी : क्या सामाजिक सुरक्षा मंत्री यह इताने की कृपा करेंगे कि :
- (क) केन्द्रीय सरकार ने 6963-64, 1964-65 श्रीर 1965-66 में अनुसूचिन जातिओं तथा अनुसचित आदिम जातियों श्रीर अन्य पिछड़ वर्गों की कल्याण योजना कार्यान्वित करने के लिये मध्य प्रदेश सरकार को कितनी राशि मंजूर की है; श्रीर
- (ख) क्या 1963-64 कोर 196-65 के लिये स्वीकृत राशि का प्रतिवर्ष उचित प्रयोग किया गया ?

### सामाजिक सुरक्षा विभाग में उपमंत्री (श्रीमती चन्द्रशेखर) :

# (क) मंजूर की गई राशि ---

1963-64

1964-65

1965-66

		(लाखा रुपयों में)		
1. श्रनुसूचित ग्रादिम जातियां	155.61	<b>283</b> .02	346'84	
2. त्रनुसूचित जातियां	34.83	44.36	45.00	
3. अन्य पिछड़े वर्ग जिन में अनिधि-				
सुचित ग्रादिम जातियां शामिल हैं	11.06	15. 28	10.23	

<sup>(</sup>ख) 1963-64 के लिए मंजूर की गयी राशि खर्च कर ली गई। जहां तक 1964-65 ा सम्बन्ध है, ग्रभी खातों का ग्रन्तिम समायोजन होना है लेकिन ग्रभी तक व्यय में दिए गए अन की तुलना में कोई खास कमी नहीं हुई है।

### मध्य प्रदेश में अनुसूचित जातियों तथा अनुसूचित आदिम जातियों के लिये छात्रावास

- 1382. श्री लखमू भवानौ : क्या सामाजिक सुरक्षा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :
- (क) 1965-66 में मध्य प्रदेश में ग्रन्स्चित जातियों तथा ग्रन्स्चित ग्रादिम जातियों के विद्यार्थियों के लिये कितने छात्रावास खोलने का विचार है ; ग्रौर
- (ख) सरकार द्वारा राज्य में इसी ग्रवधि में इस प्रकार के छात्रावास बनाने के लिए कितनी राशि मंजूर की गई है ?

सामाजिक सुरक्षा विभाग में उपमंत्री (श्रीमती चन्द्र शेखर): (क) ग्रौर (ख) 150। यह संख्या ग्रौर इन के निर्माण के लिए मंजूर की गई धनराशि योजना ग्रायोग द्वारा ग्रनुमोदित नक्शें को देखते हुए राज्य सरकार द्वारा बनाए गए पुनरीक्षित कार्यक्रम पर निर्भर होंगे।

### कृषि नीति

1383. श्री प्र० चं० बरुग्रा: क्या खाद्य तथा कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

- (क) क्या सरकार का ध्यान हैदराबाद में "इनटक" की कार्यकारिणी समिति द्वारा स्वीकृत संकल्प की ग्रोर दिलाया गया है जिसमें कृषि नीति के लिए दस सूत्री कार्यक्रम की सिफारिश की गई थी ;
  - (ख) यदि हां, तो इस कार्यक्रम का ठीक ठीक ब्यौरा क्या है ; ग्रौर
  - (ग) सरकार की उस पर क्या प्रतिक्रिया है ?

# बाद्य तथा कृषि मंत्रालय में उपमंत्री (श्री शाहनवाज खां) : (क) जी हां।

- (ख) दस सूत्री कार्यक्रम का ब्यौरा निम्न प्रकार है :---
  - 1--स्वयं खेती न करने वाले भू-स्वािमयों का स्वािमत्व समाप्त किया जाए ;
  - 2—- ग्रावश्यकता ग्रनुसार एसी व्यवस्था की जाए कि भूमि पर खेतीहर का स्वामित्व स्थापित हो ग्रौर भूमि का मूल्य देने के लिए उन्हें वार्षिक ग्रासान किस्तों पर ऋण दिये जायें ;

- 3—लघु सिचाई सुविधायें प्रदान करने की स्रोर स्रधिकाधिक ध्यान दिया जाए ताकि देश को इन परियोजनास्रों से शीघ्र लाभ पहुंचे ;
- 4—कृषकों को सहकारी संस्थाओं के माध्यम से सस्ते मूल्य पर ऋण, उर्वरक तथा मुधरे बीज प्रदान करने की व्यवस्था की जाए ;
- 5---प्रशासकीय सुधारों तथा उपयुक्त व्यक्तियों के माध्यम में ग्रामीण सहकारी ग्रान्दोलन को तेज करने के लिए कदम उठाय जाय
- 6--व्यागारिक फसलों की खेती को नियमित किया जाये ताकि खाद्यान्नों के उत्पादन को हानि न पहुँचे ;
- 7--प्रत्येक खण्ड में सघन तथा मिश्रित खेती को प्रोत्साहन दिया जाये ;
- 8—िबचौलियों की प्रथा को समाप्त करके उत्पादक एवं उपभोक्ता के लिए उचित मल्य निश्चित किये जायें।
- 9- कृषकों के लिए मूल्यों को सहारा देने की नीति तथा उपभोक्ता के निए सहाय्य-प्राप्त मुल्यों की नीति तै ार की जाए
- 10--कृषिकों की विभिन्न ग्रावश्यकताग्रों की पूर्ति के लिए सेवा सहकारी संस्थाग्रों का जाल बिछाया जाना चाहिए ।
- (ग) सुझावों पर विचार किया जा रहा है।

### कुटीर उद्योग

1384. श्रीमती सावित्री निगम: श्री प्र० चं० बरुप्रा:

क्या सामाजिक सुरक्षा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

- (क) क्या पीतल, तांबा तथा एल्युमीनियम कम मात्रा में मिलने के कारण कुटीर उद्योग की जिससे दिल्ली में लगभग 400 कारीगरों को काम मिला हुम्रा है, कठिनाई का सामना करना एड़ रहा है ; ग्रौर
  - (ख) यदि हां, तो इस मामले में सरकार का क्या कार्यवाही करने का विचार है ?

विधि मंत्रालय में उपमंत्री (श्री जंगन्नाथ राव) : (क) कम सम्भरण से निस्सन्देह कठिनाई हो रही है ।

(ख) विदेशी मुद्रा की कमी ग्रौर ग्रायातित कच्चे माल के ग्रन्तर्राष्ट्रीय मूल्य में वृद्धि के कारण वर्तमान ग्रावटन में वृद्धि करना सम्भव नहीं है।

# समाज कस्याण तथा सुरक्षा कार्यक्रम

्श्रीयशपालसिंहः 1385. दश्रीस०मो०वनर्जोः श्रीभागवतझा शाजादः

क्या सामाजिक सुरक्षा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) चौथी पंचवर्षीय योजना में समाज कल्याण तथा सुरक्षा के क्या-क्या मुख्य कार्यक्रम होंगे ;

- (ख) किन पहलु स्रों पर स्रधिक जोर दिया जायेगा ; स्रौर
- (ग) इस प्रयोजना के लिये कितनी धन राशि रखी गई है ?

विधि मंत्रालय में उपमंत्री (श्री जगन्नाथ राव) : (क) से (ग). एक विवरण सभा पटल पर रखा जाता है जिसमें स्रावश्यक जानकारी दी हुई है। [पुस्तकालय में रखा गया। देखिए संख्या एल० टी० 4036/65]

### भूमि बन्धक बैंक

1386 श्रीमती सावित्री निगम : क्या सामुदायिक विकास तथा सहकार मंत्री यह बंताने की कृपा करेंगे कि :

- (क) क्या राज्य सरकारों को कोई हिदायतें दी गई है कि वे भूमि बन्धक बैंकों से सीधे उत्पादन में वृद्धि करने वाले कार्यक्रमों को प्राथमिकता दे रे के लिए कहें; ग्रौर
- (ख) यदि हां, तो उनकी मुख्य-मुख्य बातें क्या हैं ग्रौर इस पर राज्य सरकारों की क्या प्रतिकिया हैं ?

सामुदायिक विकास तथा सहकार मंत्रालय में उपमंत्री (श्री ब० सू० मूर्ति): (क) ग्रीर (ख). राज्य सरकारों को कहा गया है कि भूमि बन्धक बैंकों द्वारा सीधे उत्पादन में त्रृद्धि करने वाले कार्य-त्रमों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। राज्य सरकारें, सामान्यतः इस नीति से सहमत हैं। ग्रिखल भारतीय भूमि बन्धक बैंकों के सहकारी संघ ने भी दिसम्बर, 1962 में ग्रपनी बैठक में यह स्वीकार किया कि भूमि बन्धक बैंकों को उत्पादक कार्यों के लिए ऋण देने पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। तद्नुसार राज्य सरकारें ग्रीर बैंक ग्रपनी ऋण नीतियों को रिग्रोरिएन्ट कर रहे हैं।

### Exemption of Insecticides from Terminal Tax

Shri Bade : 1387. { Shri Hukam Chand Kachhavaiya : Shri Onkar Lal Berwa :

Will the Minister of Food and Agriculture be pleased to state:

- (a) whether there is any proposal under consideration of Government to exempt certain insecticides/pesticides from octroi/terminal tax; and
- (b) if so, the broad outlines thereof and the stage at which the matter stands at present?

The Deputy Minister in the Ministry of Food and Agriculture (Shri Shah Nawaz Khan): (a) and (b). Octroi Terminal tax on pesticides is a State subject and it is for the State Governments to grant exemption on this. The Government of India, however, made a suggestion in early 1964 to the State Governments/Union Territories to waive the levy of Octroi Duty on all pesticides so that prices of pesticides may come down to some extent. According to the information received no terminal tax is levied in Punjab, Nagaland, Tripura, Manipur, Andaman and Nicobar Islands, Goa, Daman and Diu. The Governments of Kerala, Andhra Pradesh & Maharashtra have expressed their inability to waive the Terminal Tax. The matter is reported to be under the consideration of the Governments of Assam, Madras, Gujarat, Rajasthan, Madhya Pradesh, Pondicherry and Delhi.

### Insurance Cooperatives

Shri Bade:
Shri Hukam Chand Kachhavaiya:
Shri Onkar Lal Berwa:
Shri Vishwa Nath Pandey:

Will the Minister of Community Development and Cooperation be pleased to refer to the reply given to Unstarred Question No. 1050 on the 22nd September, 1964 and state the reaction of Government to the conclusions and recommendations of the Study Team on General Insurance Cooperatives?

The Deputy Minister in the Ministry of Community Development and Cooperation (Shri B. S. Murthy): The recommendations are still under examination in consultation with the State Governments and Central Ministries concerned.

#### चीनी के कारखाने

क्या **खाद्य तथा कृषि मं**त्री 15 दिसम्बर, 1964 के अतारांकित प्रश्न संख्या 1409 के उत्तर के सम्बन्ध में यह बताने की कृषा करेंगे कि :

- (क) 1965 में प्रत्येक राज्य में चीनी के कितने कारखानों के लिये लाइसेंस दिये जाने की सम्भावना है ;
  - (ख) ये कहां स्थित होंगे ; ग्रौर
  - (ग) इनमें से कितने सहकारी क्षेत्र में होंगे ?

खाद्य तथा कृषि मंत्रालय में उपमंत्री (श्री दा० रा० चव्हाण): (क) से (ग). 1965 में विभिन्न राज्यों में लगभग 10 नये शर्करा कारखानों को ग्रिधकांशत: सहकारी क्षेत्र में, लाइसैंस देने का विचार है। उनके स्थान निर्धारण के बारे में विचार हो रहा है।

#### ज्वार की खरीद

$$1390.$$
  $\begin{cases}$  श्री प्र० रं० चक्रवर्ती :  $\end{cases}$  श्री प्र० चं० बरुग्रा :

क्या खाद्य तथा कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

- (क) क्या सरकार ने इस बात की जांच की है कि किसानों द्वारा 25 किलो तक ज्वार बेचे जाने सम्बन्धी उपबन्ध, जैसे कि महाराष्ट्र में लागू किये गये हैं, सरकार की एकाधिकार क्रय योजना को पूर्णतया विफल कर रहे हैं ;
- (ख) क्या लाभ सीमा सम्बन्धी स्रादेश से खाद्यान्नों में होने वाली मुनाफाखोरी रोकने में सहायता मिली है ; स्रौर

(ग) जिन लोगों से व्यापारी ग्रनाज ग्रौर दालें खरीदते हैं उनसे ग्रिधिक मूल्य के बीजक बनवाने की कुरीति को समाप्त करने के लिए क्या कदम उठाये गये हैं ?

खाद्य तथा कृषि मंत्रालय में उपमंत्री (श्री दा० रा० चव्हाण): (क) यह ठीक नहीं है कि महाराष्ट्र में ज्वार की एकाधिकार क्रय योजना में किसानों द्वारा खुले तौर पर वास्तविक उपभोक्ता को एक ही समय में 25 किलो तक ज्वार बेचने के लिये जो उपबन्ध है, से योजना विफल हो रही है।

- (ख) जी, हां।
- (ग) महाराष्ट्र में इस प्रकार की किसी प्रथा की सूचना सरकार को नहीं मिली है।

#### Indian Law Institute

- 1391. Shri Sidheshwar Prasad: Will the Minister of Law be pleased to state:
- (a) whether it is a fact that Government granted a loan to the Indian Law Institute in 1962 for the construction of a building and subsequently it rented a portion of the building; and
- (b) if so, the amount given for the construction of the building and the monthly amount being paid as rent for the portion rented?
- The Deputy Minister in the ministry of Law (Shri Jaganatha Rao):
  (a) and (b). The Government granted a loan of Rs. 9·15 lakhs to the Indian Law Institute for construction of additional storeys to the Indian Law Institute building with a view to providing about 24,000 sq. ft. of carpet area to Government for office accommodation at a monthly rental of Rs. 45/- per 100 sq. ft. The actual monthly rent to be paid for the accommodation will be determined after the Central Public Works Department works out the nett carpet area made available to the Government.

#### परिसीमन निकाय

1392. श्री विभूति मिश्र : क्या विधि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

- (क) क्या उच्चतम न्यायालय के सेवानिवृत्ति न्यायाधीश श्री जे० एल० कपूर की ग्रध्यक्षता में नियुक्त परिसीमन निकाय को सरकार ने कोई निदेश दिया है; ग्रौर
  - (ख) यदि हां, तो उसका स्वरूप क्या है ?

विधि मंत्रालय में उपमंत्री (श्री जगन्नाथ राव) : (क) जी नहीं।

(ख) प्रश्न ही नहीं उठता ।

### ग्रौद्योगिक परियोजनाम्रों का प्रभाव

क्या खाद्य तथा कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार के पास पिछली दो तथा चालू पंचवर्षीय योजनात्रों में देश में विभिन्न ग्रौद्योगिक परियोजनात्रों की स्थापना के लिए साफ किये गये वनों सम्बन्धी कोई ग्रांकड़े हैं ;

- (ख) यदि हां, तो इस प्रकार कुल कितने क्षेत्र को वनरहित किया गया ; श्रौर
- (ग) इन वनों के कारण कुल कितनी हानि हुई?

खाद्य तथा कृषि मंत्रालय में उपमंत्री (श्री शाहनवाज खां): (क) से (ग). राज्य सरकारों से ग्रावश्यक जानकारी इकट्ठी की जा रही है ग्रौर मिलने पर सभा-पटल पर रख दी जायेगी।

#### केसर का उत्पादन

क्या खाद्य तथा कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

- (क) क्या केसर का उत्पादन बढ़ाने के लिए कभी कोई प्रयत्न किया गया है ;
- (ख) यदि नहीं, तो क्या कोई प्रस्ताव सरकार के विचाराधीन है ; ग्रौर
- (ग) यदि हां, तो उसकी मुख्य बातें क्या हैं तथा उसको कब तक कार्यरूप दिए जाने की संभावना है ?

खाद्य तथा कृषि मंत्रालय में उपमंत्री (श्री शाहनवाज खां): (क) से (ग). केसर का उत्पा-दन बढ़ाने के लिए जम्मू तथा काश्मीर सरकार ने 1954 में इस फसल पर अनुसंधान शुरू किया था ताकि केसर की खेती की उन्नत विधियों का पता लगाया जा सके। कुछ प्रगति हुई है परन्तु अभी तक परीक्षण चालू हैं। राज्य सरकार इस फसल के विषय में कार्य को तेज कर रही है।

# लघु सिचाई कार्यक्रम

1395. श्री पें वेंकटासुब्बया : क्या खाद्य तथा कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

- (क) क्या सरकार का विचार कोई ऐसी योजना बनाने का है जिससे वह लघु योजनाम्रों को कार्यान्वित करने के लिए कृषकों को राजसहायता का कुछ भाग सीमेंट तथा म्रन्य नियन्वित वस्तुम्रों के रूप में दे सके ; ग्रौर
  - (ख) यदि हां, तो क्या इस सम्बन्ध में राज्य सरकारों को कोई हिदायत जारी की गई हैं ?

खाद्य तथा कृषि मंत्रालय में उपमंत्री (श्री शाहनवाज खां): (क) ग्रौर (ख) जी नहीं। परन्तु ऋणों के बारे में राज्य सरकारों को परामर्श दिया गया है कि लघु सिंचाई योजनाग्रों के लिए साज सामान के निमित दिये जाने वाले ऋण का एक भाग यथा सम्भव वस्यग्रों के रूप में दिया जाए।

# उड़ीसा के लिये ग्रम्बर चर्खे

्रश्री रामचन्द्र उलाका : 1396. र्श्री घुलेश्वर मीना : श्री रामचन्द्र मलिक :

क्या सामाजिक सुरक्षा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) 1964-65 में उड़ीसा को वास्तव में कितने ग्रम्बर चर्खे दिये गये ;

- (ख) उक्त ग्रवधि में वास्तव में कितने श्रम्बर चर्खे प्रयोग में लाये गये ; ग्रौर
- (ग) उक्त ग्रवधि में कितना सूत काता गया ?

विधि मंत्रालय में उपमंत्री (श्री जगन्नाथ राव): (क) दिसम्बर, 1964 के अन्त तक 144।

- (ख) दिसम्बर, 1964 के ग्रन्त तक 420।
- (ग) दिसम्बर, 1964 के अन्त तक 55,972 किलोग्राम धागा।

#### ग्राम सवकों का प्रशिक्षण

श्री कोया : श्री प्र० रं० चक्रवर्ती : 1397. श्री हिम्मतसिंहका : श्री रामेश्वर टांटिया :

क्या खाद्य तथा कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

- (क) क्या यह सच है कि विभिन्न राज्यों में पाभ सेवकों को इस समय दिया जा रहा प्रशिक्षण अपूर्ण है ; ग्रौर
- (ख) यदि हां, तो वर्तमान प्रशिक्षण कार्यक्रम का संशोधन करने के लिये क्या कार्यवाही की जाई है ताकि ग्राम सेवक खेती की उन्नत प्रणालियों के बारे में किसानों का मार्गदर्शन कर सकेंं?

खाद्य तथा कृषि मंत्रालय में उपमंत्री (श्री शाहनवाज खां) : (क) ग्रौर (ख). एक विवरण सभा पटल पर रखा जाता है। [पुस्तकालय में रखा गया। देखिए संख्या एल० टी० 4037/65]

# ग्राटे की चिक्कियों को गेहूं का कोटा

1398. श्री विश्वनाथ पाण्डेय : क्या खाद्य तथा कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

- (क) 1963-64 तथा 1964-65 में उत्तर प्रदेश में विभिन्न ग्राटे की चिवकयों को गेहूं पीस कर गेहूं उत्पादन बनाने के लिये दिये गये विदेशी गेहूं के मासिक कोटे का व्यौरा क्या है ।
- (ख) ऐसी कितनी चिकियां हैं जिन के पास गेहूं उत्पादों को बनाने के लिये कोई संयंत्र नहीं हैं ; ग्रौर
- (ग) यह नियंत्रण कैसे रखा जाता है कि स्रायात किये गये गेहूं को उसी प्रयोजन प्रयोग में लाया जाये जिसके लिये वह दिया गया है ?

खाह तथा कृषि मंत्रालय में उपमंत्री (श्री दा० रा० चव्हाण): (क) 1963-64 श्रीर 1964-65 में उत्तर प्रदेश की विभिन्न ग्राटा मिलों को नियत किये गये गेहूं के मासिक कोटों के ब्यौरे निम्न प्रकार हैं :--

(ग्रांकड़े हजार	मीट्रिक	टन	में)	
-----------------	---------	----	------	--

महीना			नियत किया गया कोटा			
					1963-64	1964-65
ग्रप्रैल					32.1	76.7
मई					39.4	77.0
जून					42.7	69.9
जुलाई					47.3	69.2
ग्रगस्त					46.4	49.1
सितम्बर					51.5	40.0
ग्रक्तूबर					52.8	40.0
नवम्बर					54.2	40.0
दिसम्बर					60.3	40.0
जनवरी					78.5	40.0
फरवरी					74.6	24.0
मार्च	•	•	•		80.7	24.0
			जोड़		660.5	589.

<sup>(</sup>ख) उत्तर प्रदेश में सभी लाइसेंसधारी रोलर ब्राटा मिलों के पास गेहूं के पदार्थ बनाने के लिये प्लान्ट हैं।

(ग) गेहूं रोलर फलोर मिल्स (लाइसेंसिंग तथा कन्ट्रोल) ग्रादेश, 1957 के ग्रधीन नियुक्त निरीक्षक मिलों का नियमित रूप से निरीक्षण करते हैं। मिलों को पखवारे में पिसाई सम्बन्धी किये गये कार्य ग्रीर गेहूं के पदार्थों की बेची गयी माला के बारे में पाक्षिक विवरण प्रस्तुत करने पड़ते हैं। गेहूं से बने पदार्थों के भाव नियन्त्रित करने के लिये उनके मिल से निकासी ग्रधिकतम भाव निर्धारित कर दिये गये हैं। उत्तर प्रदेश सरकार को यह भी ग्रधिकार दे दिया गया है कि वे गेहूं के पदार्थों का उचित मूल्य की दुकानों पर वितरण करने के लिये मिलों से नियन्त्रित भावों पर जितनी माला बा ले सकती हैं।

### छोटी गंडक पर पुल

1399. श्री विश्वनाथ पाण्डेय: क्या परिवहन मंत्री 29 सितम्बर, 1964 के ग्रतारांकित प्रश्न संख्या 1433 के उत्तर के सम्बन्ध में यह बताने की कृपा करेंगे कि गुथानी बाजार के निकट छोटी गंडक पुल के निर्माण कार्य में ग्रब तक कितनी प्रगति हुई है ?

परिवहन मंत्री (श्री राज बहादुर) : राज्य के मुख्य इंजीनियर द्वारा इस पुल के निर्माण-कार्य के लिए टैंडर मांगे गए थे ग्रौर नवम्बर, 1964 में दो टैंडर ग्राए थे। इन दोनों को बिहार के लोक निर्माण विभाग ने ग्रस्वीकार कर दिया क्यों कि वे मंजूरशुदा लागत से बहुत ग्रधिक धनराशि के थे और उनमें ऐसी शर्तें थी जिनको माना नहीं जा सकता था। ग्रतः नए टडर मांगे गए ग्रौर 2 मार्च, 1965 को चार टैंडर प्राप्त हुए। इस समय राज्य के मुख्य इंजीनियर द्वारा इनकी जांच की जा। है ग्रौर यह ग्राशा है कि वह शीघ्र ही फैसला कर लगे।

#### विदेशी पर्यटक

1400. श्री विश्वनाथ पाण्डेय : क्या परिवहन मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

- (क) 1964 में कितने विदेशी पर्यटकों ने भारत के पर्यटक स्थानों की याता की ग्रौर
- (ख) इससे कितनी विदेशी मुद्रा प्राप्त हुई ?

परिवहन मंत्री (श्री राज बहादुर): (क) ग्रौर (ख) 1964 के कैंलेण्डर वर्ष में भारत भ्रमण करने वाले विदेशी पर्यटकों की सम्पूर्ण संख्या 1,56,672 थी (इसमें पाकिस्तान के राष्ट्रिक शामिल नहीं हैं)।

इन विदेशी पर्यटकों से प्राप्त विदेशी मुद्रा का विश्वस्त प्राक्कलन उपलब्ध नहीं है। फिर भी 1962 में किये गये, पर्यटक व्यय के पाइलट सर्वेक्षण के परिणाम के ग्राधार पर, 1964 के कलैण्डर वर्ष के लिये विदेशी मुद्रा की प्राप्ति लगभग 23 करोड़ रुपये ग्रस्थायी तौर पर प्राक्किलत की जाती है।

#### Red Fort, Delhi

- 1401. Shri Vishwa Nath Pandey: Will the Minister of Transport be pleased to state:
- (a) whether Governmen are making arrangements whereby the Red Fort, Delhi will relate its romantic history through light music and sound to tourists every night; and
  - (b) if so, the expenditure involved and when it will be put into operation

    The Minister of Transport (Shri Raj Bahadur): (a) Yes, Sir.
- (b) The expenditure involved would be approximately Rs. 6.00 lakhs and the show has opened on March 22, 1965.

### **Agricultural Corporation s**

### 1402 Shri Yashpal Singh : Shrimati Maimoona Sultan :

Will the Minister of Food and Agriculture be pleased to state:

- (a) whether Government have agreed to give assistance to the State Governments for the setting up of Agricultural Corporations for promoting the supply of farm implements and machinery;
  - (b) if so, the broad outlines of the proposal; and
  - (c) the States in which they are going to be set up?

The Deputy Minister in the Ministry of Food and Agriculturel (Shri Shah Nawaz Khan): (a) Yes.

- (b) The intention is that these Agro-Industrial Corporations would be limited companies in the Public Sector with an authorised capital of about Rupees two crores, upto 25 % of which may be contributed by the Government of India. These Agro-Industrial Corporations are intended to establish capacity for manufacture of agricultural machinery and implements. They may sponsor manufacture of different items of equipment or they may undertake manufacture of selected items. To promote sale, the Corporations may undertake extensive demonstration of modern agricultural implements. These Corporations may advance loans to any company or firm engaged in manufacture of farm equipment, including equipments for allied and ancillary purposes.
- (c) To start with, the Corporations are proposed to be set up in Andhra Pradesh, Madras, Punjab and Maharashtra.

#### बीज फार्म

 $\int$  श्री रामचन्द्र उलाका : 1403. श्री धुलेश्वर मीना :

क्या खाद्य तथा कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

- (क) क्या 1 964-65 में उड़ीसा में कोई बीज फार्म स्थापित किये गये थे ;
- (ख) यदि हां, तो उनका ब्यौरा क्या है ; ग्रौर
- (ग) उसी अवधि में इस प्रयोजन के लिये उस राज्य को कितनी के द्वीय सहायता दी गई ?

खाद्य तथा कृषि मंत्रालय में उपमंत्री (श्री काहनवाज खां): (क)से (ग) मांगी गई जानकारी उड़ीसा सरकार से इकट्ठी की जा रही है ग्रीर प्राप्त होते ही सभा के पटल पर रख दी जादेगी।

### विऋय संस्थायें

 $\int \Re \int \Re \int \sin \pi \, d\pi \, d\pi \, d\pi = 0$  श्री धुलेश्वर मीना :

क्या सामुदायिक विकास तथा सहकार मंत्री यह बतानै की कृपा करेंगे कि :

- (क) 1964-65 में ग्रब तक राज्यवार कितनी प्राथमिक विकय संस्थारों स्थापित की गई;
  - (ख) 1965-66 में राज्यवार कितनी संस्थाएं स्थापित की जायेंगी?

सामुदादिक विदास तथा सहकार संत्रालय में उदस्त्री (श्री द० सू० मूर्ति) : (क) ग्रौर (ख) एक विवरण सभा पटल पर रखा जाता है।

[पुस्तकालय में रखा गया। देखिए संख्या एल० टी० 4038/65]

उड़ीसा में ब्रनुसूचित कारियों तथा ब्रनुसूचित क्रादिम जारियों क छ त्रों के रियं मेट्रिक क्रर छात्रवृत्तियां

क्या सामाजिक सुरक्षा पंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि

(क) 1964-65 में उड़ीसा में मैट्रिकोत्तर अध्ययन के लिये अनुसूचित आदिम जातियों,

य गुत्र चित जातियों स्रौर स्रन्य पिछड़े वर्गों के छात्रों को कुल कितनी छात्रवृत्तियां दी गईं ;

- (ख) उक्त ग्रविध में उड़ीसा के कितने छात्रों ने इन छात्रवृत्तियों के लिये ग्रावेदन-पन्न दिये थे ; ग्रौर
  - (ग) ये छात्रवृत्तियां उन छात्रों को किन-किन तारीखों को दी गई थीं ?

सामाजिक सुरक्षा विभाग में उपमंत्री (श्रीमती चन्द्रशेखर) : (क) से (ग). राज्य सरकार से अपेक्षित जानकारी मांगी गई है और प्राप्त होने पर सभा पटल पर रख दी जाएगी

### Employees of Khadi and Village Industries Commission

### 1406 Shri Madhu Limaye : Shri Bagri :

Will the Minister of Social Security be pleased to state:

- (a) whether there was any delay in implementing the recommendations of the Second Pay Commission in the case of employees of Khadi and Village Industries Commission;
  - (b) if so, the reasons therefor;
  - (c) the date from which these recommendations have been implemented;
  - (d) whether arrears of these employees have been paid to them; and
- (e) if not, the total amount of these arrears to be paid and also when Government propose to clear them?

The Deputy Minister in the Ministry of Law (Shri Jaganatha Rao):

(a) to (c). The recommendations of the Second Pay Commission do not apply automatically to employees of the Khadi and Village Industries Commission which is an autonomous body set up under the Khadi and Village Industries Commission Act 1956. Having considered the recommendations of a Pay Revision Committee set up by the Commission to make recommendations on the application to the Commission's employees of the recommendations of the Second Pay Commission, the Khadi and Village Industries Commission and Government have decided to apply with effect from 1-7-1963 revised scales of pay to the employees of the Commission on the lines of the scales recommended by the Second Pay Commission.

- (d) Yes, from 1-7-1963.
- (e) Does not arise.

# खाद्य तथा कृषि मंत्रालय में नियुक्तियां

$$\int$$
श्री विश्वताथ राय :  $\int$ श्री क्रजेश्वर $\sqrt{ }$ प्रसाद :

क्या खाद्य तथा कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

- (क) क्या मंत्रालय में कुछ ऊंचे पद बनाये जाते हैं तथा उन्हें संघ लोक सेवा आयोग को भेजे बिना उन पर नियुक्तियां की जाती हैं;
- (ख) यदि उत्तर नकारात्मक हो, तो क्या भारतीय कृषि ग्रनुसन्धान परिषद् के ग्रधीन पहाड़ी प्रदेश विकास के लिये एक विशेष कार्य-ग्रधिकारी का पद बनाया गया था तथा संघ लोक

मेवा स्रायोग को कोई नियमित सूचना दिये बिना ही एक कनिष्ठ स्रधिकारी को इस पद की पेशकश की गई; स्रौर

(ग) क्या यह भी सच है कि संबंधित अधिकारी ने वह पेशकश अस्वीकार कर दी थी?

खाद्य तथा कृषि मंत्रालय में उपमंत्री (श्री शाहनवाज खां): (क) भारतीय कृषि ग्रनु-मन्धान परिषद् में प्रथम श्रेणी तथा द्वितीय श्रेणी के विभिन्न पदों पर नियुक्ति संघ लोक मेवा ग्रायोग की सलाह से की जाती है, सिवाय उन मामलों में जिनके विषय में संघ लोक मेवा ग्रायोग (सलाह की छूट) विनिमय, 1958 के ग्रन्तर्गत सलाह लेना ग्रावश्यक नहीं है।

- (ख) अन्तूबर, 1964 में 1300-60-1600 रुपये के क्रममान में भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद् के लिए एक विशेष कार्य-ग्रिधकारी (पहाड़ी प्रदेश विकास) का अस्थायी पद स्वीकृत किया गया था। उस काम की अत्यावश्यकता को देखते हुए जिसके लिए यह पद बनाया गया था, यू० पी० कृषि विश्वविद्यालय के अस्थायी प्रवर अधिकारी को बिल्कुल तदर्थ के आधार पर इस पद की पेशकश की गई थी। संघ लोक सेवा आयोग से सलाह नहीं ली गई थी क्योंकि इस पद की पेशकश एक वर्ष से कम अविध के लिए थी।
- (ग) यू० पी० कृषि विश्वविद्यालय जिसके ग्रधीन यह ग्रधिकारी कार्य कर रहा था ने विदेशी सेवा की शर्तों पर कार्य लेने की उस ग्रधिकारी को ग्रनुमित नहीं दी, ग्रत: श्रधिकारी ने उस पेशकश को ग्रस्वीकार कर दिया।

### Bridge Over Narmada at Omkareshwar

Shri Hukam Chand Kachhavaiya:
Shri Yudhvir Singh:
Shri Vishram Prasad:
1408. Shri R.S. Pandey:
Shri Onkar Lal Berwa:
Shri Y. D. Singh:
Shri Narendra Singh Mahida:
Shri Jagdev Singh Siddhanti:

Will the Minister of Transport be pleased to state:

- (a) whether it is a fact that the construction of the bridge over the river Narmada at Omkareshwar had been stopped; and
  - (b) if so, the reasons for stopping the construction work of the bridge?

The minister of Transport (Shri Raj Bahadur): (a) and (b). The proposed bridge over the river Narmada at Omkareshwar falls on a State Road in Madhya Pradesh. The Government of Madhya Pradesh are, therefore, primarily concerned in the matter. It is understood from them that although a tender for the work had been accepted by them in 1958, the design for the bridge had to be changed subsequently in the light of the experience of the floods of 1961. The revised design is stated to have been since finalised and the agreement to be entered into between the State Government and the contractor is said to be in the finalisation stage. The work is likely to be commenced by August, 1965.

### नेफा कला तथा शिल्प प्रदर्शनी

- 1410. श्री प्र० चं० बरुग्रा: क्या सामाजिक सुरक्षा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:
- (क) क्या हाल ही में नई दिल्ली में कूटीर उद्योग एम्पोरियम में नेका कला तथा शिल्प प्रदर्शनी का उद्घाटन किया गया है; स्रौर
  - (ख) यदि हां, तो उसकी मुख्य बातें क्या हैं ?

विधि मंत्रालय में उपमंत्री (श्री जगन्नाथ राव) : (क) जी, हां।

(ख) इस प्रदर्शनी का उद्देश्य नेफा की कला तथा शिल्प का प्रचार करना था।

### Supply of Food Grains to Maharashtra

Shri D.S. Patil:
Shri Tulsidas Jadhav:
Will the Minister of Food and Agriculture be pleased to state:

- (a) whether the Government of Maharashtra have approached the Government of India for supply of 6 lakh tons of rice and 10 lakh tons of wheat to make up its deficit; and
- (b) if so, the quantity of rice and wheat supplied to Maharashtra so far by the Government of India?

The Deputy Minister in the ministry of Food and Agriculture (Shri D. R. Chavan). (a) and (b). For the year 1965 the Government of Maharashtra had asked for a supply of 5 lakh tonnes of rice and over 13 lakh tonnes of wheat.

During the months of January and February, 1965, 65 6 thousand tonnes of rice and 183.8 thousand tonnes of wheat were supplied to Maharashtra from Central Stocks.

### मद्रास राज्य में नलकूप

- 1412. श्री मलाइछामी: क्या खाद्य तथा कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:
- (क) क्या भारत सरकार के प्रयोगात्मक नलकूप संगठन के माध्यम से रामनाद तथा गेलम जिलों में नलक्प लगाने का कोई प्रस्ताव है; श्रौर
  - (ख) यदि हां, तो ग्राजकल मामला किस स्थिति में है ?

खाद्य तथा कृषि मंत्रालय में उपमंत्री (श्री शाहनवाज खां) :(क) ग्रौर (ख). भूमि गत जल का सर्वेक्षण करते समय समन्वेषी नलकूप संस्था ने रामनाथापुरम जिले में 11 समन्वेषी कूएं छिदे थे जिनमें से 9 के विषय में कार्य बन्द कर दिया गया और 2 में से पानी कम मावा में मिल सका । चौथी योजना की अविधि में राज्य सरकार के परामर्श से उस जिले में कुछ ग्रौर कूएं छेदने का प्रस्ताव है।

पथरीली भूमि होने के कारण सेलम जिले में भू-विज्ञान की दृष्टि से समन्वेषी छेदाई उपयुक्त नहीं है।

### भेड़ पालन योजना

- 1413. श्री मलाइछामी : क्या खाद्य तथा कृषि मंत्री 29 सितम्बर, 1964 के अता-राकित प्रथन संख्या 1440 के उत्तर के सम्बन्ध में यह बताने की कृपा करेंगे कि :
- (क) क्या मद्राम राज्य में कोडाइकतल में भेड़ पालत के लिये प्रस्तावित उपकेन्द्र (सब-स्टेशन) ग्रब स्थापित कर दिया गया है; श्रौर
  - (ख) यदि हां, तो वहां पर किस प्रकार का अनुसन्धान कार्य किया जायेगा ?

साद्य तथा कृषि मंत्रालय में उपमंत्री (श्री शाहनवाज सां): (क) ग्रभी नहीं। हाल ही में मद्राप्त सरकार ने कोडाइकतल में स्थान उपलब्ध करना स्वीकार कर लिया है। भूमि को कब्जे में लेने के बाद उप-केन्द्र की स्थापना का कार्य शुरू किया जाएगा।

(ख) उप-केन्द्र स्थापित हो जाने पर उस में उन विदेशी भेड़ों की नस्लों पर ग्रनुसन्धान कार्य किया जाएगा जो दक्षिण के पहाड़ी प्रदेशों की जलवायु सम्बन्धी परिस्थितियों के लिए उपयुक्त होंगी।

### Employees of Delhi Milk Scheme

- 1414. Shri Hukam Chand Kachhavaiya: Will the Minister of Food and Agriculture be pleased to state:
- (a) whether it is a fact that till 1st March, 1964 about 800 employees of the Delhi Milk Scheme became eligible to be confirmed in their posts according to Government rules;
- (b) whether it is also a fact that only about 120 employees out of them have so far been confirmed; and
  - (c) if so, the reasons for not confirming the rest of the employees?

The Deputy Minister in the Ministry of Food and Agriculture (Shri Shahnawaz Khan): (a) Only 356 posts in the Delhi Milk Scheme were declared permanent upto 1-3-1964.

- (b) 146 employees have so far been made permanent against these posts.
- (c) The process of confirmation of the individuals against permanent posts involves completion of a number of formalities. Every effort is being made to complete the formalities as soon as possible.

### Bridge at Vardghat on National Highway No. 28

- 1415. Dr. Mahadev Prasad: Will the Minister of Transport be pleased to state:
- (a) the progress made in the construction of a bridge at Vardghat on National Highway No. 28; and
  - (b) when this bridge is likely to be opened for traffic?

The Minister of Transport (Shri Raj Bahadur): (a) and (b). The bridge has been completed, and has been temporarily opened to traffic for restricted hours pending some tests. It would be opened to traffic without restriction in about a month.

### Delhi-Gorakhpur Air Service

1416. Dr. Mahadev Prasad: Will the Minister of Civil Aviation be pleased to state:

(a) whether it is a fact that a few years ago, Delhi-Gorakhpur air service

was being operated; and

(b) if so, the reasons for discontinuing the same?

The Minister of Civil Aviation (Shri Kanungo): (a) Yes, Sir.

(b) The service was discontinued due to poor traffic.

### शहरी क्षेत्रों में उपभोक्ता सहकारी समितियां

1417. श्री गोकुलानन्द महन्ती: वया सामुदायिक विकास तथा सहकार मली यह बताने की कृपा करेंगे कि 1963-64 तथा 1964-65 में अब तक देश के शहरी क्षेत्रों में कितनी उपभोक्ता सहकारी समितियां (राज्यवार) स्थापित की गई?

सामुदायिक विकास तथा सहकार मंत्रालय में उपमंत्री (श्री ब० सू० मूर्ति): एक विवरण, जिसमें केन्द्र द्वारा संचालित योजना के अन्तर्गत 1963-64 और 1964-65 में गठित की गई उपभोक्ता सहकारी समितियों की संख्या दी गई है, सभा-पटल पर रखा जाता है। [पुस्तकालय में रखा गया। देखिए संख्या एल० टी० ४०३६/65] केन्द्र द्वारा संचालित योजना के बाहर गठित किये गये उपभोक्ता भण्डारों के बारे में जानकारी तुरन्त उपलब्ध नहीं है।

### मोटर गाड़ी ग्रधिनियम

1418. श्री वाडीवा: क्या परिवहन मंत्री 5 मार्च, 1963 के तारांकित प्रश्न मंख्यां 491 के उत्तर के सम्बन्ध में यह बताने की कृपा करेंगे कि क्या मोटर गाड़ी दुर्घटना दावा न्याया-धिकरण के समक्ष क्षतिपूर्ति के लिये अभ्यावेदन प्रस्तुत करने की समय सीमा के बारे में मोटर गाड़ी अधिनियम, 1939 में संशोधन करने के मामले में क्या प्रगति हुई है :

परिवहन मंत्री (श्री राज बहादुर): मोटर एक्सीडेंट क्लेम्स ट्रिब्यूनल में क्षतिपूर्ति के लिये प्रार्थना पत्न देने की 60 दिन की सीमा में उचित वृद्धि करने के लिये ग्रागामी मोटर गाड़ी संशोधन विधेयक में व्यवस्था करने का प्रस्ताव है।

## सरकारी गोदामों में ग्रनाज का स्टाक

1419. श्री श्रीनारायण दास : क्या खाद्य तथा कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

- (क) क्या यह सर्च है कि हाल में ऋधिकतर सरकारी गोदामों में भ्रनाज का स्टाक कम हो गया है;
  - (ख) यदि हां, तो इसके क्या कारण हैं; ग्रौर
  - (ग) फरवरी और मार्च, 1965 में अनाज की मांग और उपलब्धि कितनी थी ?

खाद्य तथा कृषि मंत्रालय में उपमंत्री (श्री दा० रा० चव्हाण): (क) ग्रीर (ख). 1962-63 में चावल की फसल ग्रीर 1962-63 ग्रीर 1963-64 में लगातार दोनों बार गेहूं की फसलें खराब हो जाने के कारण, 1964 में खाद्यान्नों की कीमतें बहुत चढ़ गयीं ग्रीर

सरकारी खाद्यान्नों के वितरण की मांग बढ़ गयी। इसके फलस्वरूप, सरकारी गोदामों में बड़े पैमाने पर खाद्यान्नों की निकासी हुई ग्रौर जिससे सरकार के ग्रधिकांश गोदामों में स्टाक कम हो गया।

(ग) प्रत्येक राज्य की ग्रावश्यकताग्रों की जांच राज्य सरकारों के परामर्श से की जाती है ग्रौर सभी राज्यों की ग्रावश्यकताग्रों ग्रौर केन्द्रीय सरकार के पास खाद्यान्नों की समस्त उपलब्धि को ध्यान में रख कर सप्लाई की जाती है। फरवरी, 1965 में केन्द्रीय स्टाक में से 6 लाख मीट्रिक टन से कुछ ग्रधिक खाद्य न्नों का दित्रण विद्या ग्या है। मांग बहुत ग्रधिक थी। मार्च महीने के पूरे ग्रांकड़े ग्रभी उपलब्ध नहीं हैं।

# स्रविलम्बनीय लोक महत्व के विषय की स्रोर ध्यान दिलाना CALLING ATTENTION TO MATTER OF URGENT FUELIC IMPORTANCE

# करल में राष्ट्रपति का शासन जारी रखना

श्री नरेन्द्र सिंह महीड़ा (ग्रानन्द): मैं गृह-कार्य मंत्री का ध्यान ग्रविलम्बनीय लोक महत्व के निम्नलिखित विषय की ग्रोर दिलाता हूं ग्रौर निवेदन करता हूं कि वह उस संबंध में एक वक्तव्य दें, ग्रथीत् :--

"केरल में राष्ट्रपित के शासन को जारी रखने के बारे में निर्णय के समाचार"

गृह-कार्य मंत्री (श्री नन्दा) : श्रोमान्, श्रच्छा हो यदि मुझे इस मामले के लिए थोड़ा श्रौर श्रथति शुक्रवार तक का समय दे दिया जाय।

स्रध्यक्ष महोदय: माननीय मंत्री इसका उत्तर शुक्रवार को दे सकते हैं।

# विशेषाधिकार-प्रश्न के बारे में

#### RE: POINT OF PRIVILEGE

Shri Madhu Limaye (Monghyr): Mr Speaker, Sir. I wast to raise a point of privilege under Rule No. 222.

Mr. Speaker: I have gone through the point of privilege that the hon. Member wants to raise. There is no point of privilege. He should resume his seat.

Shri Madhu Limaye: Shri Shastri made a contradictory statement on the subject in the Rajya Sabha yesterday. The statement made by Shri Dahya Bhai Patel . . .

Mr. Speaker: I have repeatedly requested the non. Member to resume his seat, but he is flouting my orders. I have already informed him that I have disallowed it, even then he goes on speaking. I cannot allow such things to go on in the House. The House may take action if it likes. The hon. Members should not rise in their seats when I am on my legs. I leave it here just now but that should not happen again.

श्री कन्डप्पन : श्रीमान्, मुझे ग्रागे कार्यवाही प्रारम्भ होने से पूर्व एक महत्वपूर्ण निवेदन करना है । ग्रध्यक्ष महोदय: इस ढंग से नहीं। मुझे पहले मामले से ग्रवगत करना ग्रावश्यक है। जब तक वह मुझे लिखकर न दे, मैं इसे स्वीकार नहीं कर सकता। ग्रब सभा पटल पर पत्न रहे। जायें।

# सभा पटल पर रखे गये पत्र

#### PAPERS LAID ON THE TABLE

### नागालैंड के सम्बन्ध में संसद् सदस्यों के दल का प्रतिवेदन

वैदेशिक कार्य मंत्रालय में उपमंत्री (श्री दिह्नश सिंह): मैं स्वर्णसिंह जी की श्रोर से संसद्-सदस्यों के दल के, जिसने फरवरी, 1965 में नागालैंड का दौरा किया था, प्रतिवेदन की एक प्रति सभा पटल पर रखता हूं। [पुस्तकालय में रखी गयी। देखिए संख्या एल० टी० 4023/65]।

श्री त्रिदिव कुमार चौधरी (इहरामग्र): मेरा ग्रौचित्य प्रश्न यह है कि यह प्रतिवेदन सभा पटल पर नहीं रखा जा सकता है। इसका कोई संविहित महत्व नहीं। किसी राज्य ने इस शिष्टमण्डल को निमंत्रित नहीं किया था। यह दल क्या है? ग्रौर इसे क्यों नागालैंड भेजा गया?

श्री दिनेश सिंह: श्री रंगा ने एक बार प्रधान मंत्री को नागालैंड जाने की बात कही थी। प्रधान मंत्री ने उनकी बात मान ली। संसद् कार्य विभाग ने कुछ लोगों को जाने का निमंत्रण दे दिया। ये लोग ग्रापने खर्च पर वहां गये। वापिस ग्राने पर इन्होंने एक प्रतिवेदन दिया जो सभा पटल पर रख दिया गया है। इसमें कोई ग्रावैधता का प्रश्न उत्पन्न ही नहीं होता।

श्री त्रिदिव कुमार चौधरी: मंत्री महोदय के उत्तर ने मामला ग्रौर उसझा दिया है। यह ठीक है कि देश के किसी भाग में भी जाने के लिए संसद् सदस्य कह सकते हैं, परन्तु क्या इस अध्ययन दल का निर्माण संविहित ढंग से किया गया था ?

श्री बड़े: श्रीनान् जी, मैं भी चार माननीय सदस्यों के साथ केरल में गया था, क्या मैं भी प्रतिवेदन प्रस्तुत कर सकता हूं?

Shri Kishen Pattnayak: All parties were not represented in the study team.

श्री दाजी (इन्दौर) : यदि इस दल के प्रतिवेदन की सभा पटल पर रखना था तो इस दल का चुनाव ग्रध्यक्ष महोदय को करना चाहिए था ।

श्रो हेम बरू आ (गोहाटी) : हम भी इस दल में गये थे, इसमें हमें संसद् कार्य मंत्री ने चलने का निमंत्रण दिया था। श्री अजित प्रसाद जैन भी इस दल में थे।

श्री ग्र० प्र० जैन (तुमकुर)ः मैं भी इप दल का सदस्य था। मैंने व्यक्तिगत रूप से वहां जाने के लिये नहीं कहा था। मुझे वहां जाने का निमन्त्रण संसद्—कार्य मंत्री ने दिया था। हमारा दृष्टिकोण यह है कि सरकार ने कुछ लोगों से नागालैण्ड जाने के लिये कहा। उनके सामने कोई लक्ष्य विशेष नहीं रखा था, यह ग्रध्ययन दौरा था। वहां की स्थित का ग्रध्ययन करना था। सभी दलों के लोग उसमें थे। हम लोगों ने एक मत से प्रतित्रेदन तैयार किया है। ग्रब ग्राप इसे देख खीजिये कि इसे सभापटल पर रखा जाना चाहिये ग्रथवा नहीं।

नागालैण्ड सरकार स्रोर भारत सरकार के बीच क्या बात हुई है उसका हमें कुछ पता नहीं। धरन्तु हमें सभी सुबिधायें प्रदान की गयीं थीं। इसके लिए मैं नागालैंड सरकार के प्रति अपना स्राभार प्रदर्शन करता हूं।

ग्रध्यक्ष महोदय: हम इस चर्चा को ग्रधिक लम्बा नहीं कर सकते।

श्री दी० चं० शर्मा (गुरुदासपुर) : हमें प्रत्येक प्रतिवेदन को सभा पटल पर नहीं रखना चाहिए। मेरे विचार में इस प्रतिवेदन को सभा पटल पर नहीं रखा जाना चाहिए।

श्री विद्याचरग शुक्ल: मेरे विशार में इसे सभा पटल पर नहीं रखा जाना चौहिए। इससे सरकार के दृष्टिकोण पर प्रभाव पड़ेगा।

श्रीमती रेणु चक्रवर्ती: संसदीय शिष्टमंडल ग्रीर संसद शास्त्री लोगों के शिष्टमंडल में ग्रन्तर किया जाना चाहिए ।

श्री कपूर सिंह: मैं श्रीमती चक्रवर्ती की बात का समर्थन करता हूं।

श्री प्र० क० देव: कुछ माननीय सदस्यों की मांग थी कि इसे सभा पटल पर रखा जाये।

Shri Madhu Limaye: You should make a decision on this matter, which may be a guiding factor in future.

श्री दिनेश सिंह: यह संसदीय शिष्टमंडल नहीं था। इसको सभा पटल पर रखने का हमारा विचार भी नहीं था। हम इस प्रतिवेदन को ग्रध्ययन दल का प्रतिवेदन कह सकते हैं।

श्रध्यक्ष महोदय: इस बात का ध्यान रखा जाना चाहिए। संसदीय शिष्टमंडल नहीं, इसे अध्ययन दल का नाम दिया जाना चाहिए। सरकार को पेश किया गया प्रत्येक प्रतिवेदन सरकारी दस्तावेज नहीं बन जाता। केवल सरकारी दस्तावेजों को ही सभा पटल पर रखा जा सकता है। इसको भी इस समय पटल पर रखें जाने की कोई आवश्यकता नहीं। आगे से तंत्रदीय शिष्टमंडन का निर्माण अध्यक्ष को सलाह से किया जाना चाहिए।

### केरल कृषि नाशक कीट तथा रोग नियम 1959 में कुछ संशोधन करने वाली श्रधिसूचना

खाद्य तथा कृषि मंत्री (श्री चि॰ मुब्रह्मण्यम): मैं, केरल राज्य के सम्बन्ध में राष्ट्रपति द्वारा जारों की गई दिनांक 10 सितम्बर, 1964 की उद्वोषणा के खण्ड (ग) (चार) के साथ पठित, केरल कृषि नाशक कीट तथा रोग श्रधिनियम 1958 की धारा 24 के श्रन्तगंत, केरल कृषि नाशक कोट तथा रोग नियम, 1959 में कुठ संशोधन करने वाली श्रधिसूचना संख्या एस० श्रार० श्रो० 256/64 की, जो दिनांक 1 सितम्बर, 1964 के केरल बजट में प्रकाशित हुई थी, एक प्रति सभा पटल पर रखता हूं। [पुस्तकालय में रखी गयी। देखिए संस्था एल० टी॰ 4028/65]

# गंगा-ब्रह्मपुत्र जल परिवहन बोर्ड का 1964 के वर्ष का प्रतिवेदन

परिवहन मंत्री (श्री राज बहादुर) : मैं गंगा ब्रह्मपुत्र जल परिवहन बोर्ड के वर्ष 1964 के वर्षिक प्रतिवेदन की एक प्रति सभा पटल ,पर रखता हूं। [पुस्तकालय में रखी गई। देखिए संख्या एल० टी० 4029/65]

### राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम के लेखे का वार्षिक समेकित विवरण श्रौर वार्षिक प्रतिवेदन

सामुदायिक विकास तथा सहकार मंत्रालय में उपमंत्री (श्री ब॰ सू॰ मूर्ति): मैं, श्री स॰ कु॰ डें॰ की ग्रोर से राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम ग्रिधिनियम, 1962 की धारा 14 की उपधारा (3) के ग्रन्तर्गत, राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम के वर्ष 1963-64 के वार्षिक प्रतिवेदन की एक प्रति, लेखे के वार्षिक समेकित विवरण की एक प्रति के साथ, सभा पटल पर रखता हूं। [पुस्तकालय में रखी गई। देखिए संख्या एल॰ टी॰ 4030/65]

# भारतीय केन्द्रीय सुपारी सिमिति, भारतीय केन्द्रीय नारियल सिमिति श्रौर भारतीय केन्द्रीय तम्बाकू सिमिति के वार्षिक प्रतिवेदन

खाद्य तथा कृषि मंत्रालय में उपमंत्री (श्री दा० रा० चव्हाण): मैं, श्री शाहनवाज खां की ग्रोर से निम्नलिखित पत्नों की एक-एक प्रति सभा पटल पर रखता हूं:—

- (एक) भारतीय केन्द्रीय सुपारी समिति की वर्ष 1963-64 के वार्षिक प्रतिवेदन की एक प्रति।
- (दो) भारतीय केन्द्रीय नारियल समिति की वर्ष 1963-64 के वार्षिक प्रतिवेदन की एक प्रति।
- (तीन) भारतीय केन्द्रीय तम्बाकू समिति की वर्ष 1963-64 के वार्षिक प्रतिवेदन की एक प्रति।

[पुस्तकालय में रखी गई। देखिए ऋमशः संख्या एल० टी० 4031/65, 4032/65 और 4033/65]

# भारत-श्रौलंका करार की कार्यान्विति के बारे में भारत श्रौर श्रीलंका के ग्रिधिकारियों के बीच हुई चर्चा के स्वीकृत निष्कर्षों की प्रति

वैदेशिक कार्य मंत्रालय में उपमंत्री (श्री दिनेश सिंह): मैं 30 अक्तूबर, 1964 के भारत-श्रीलंका करार की कार्यान्विति के बारे में दिसम्बर, 1964 में भारत तथा श्रीलंका के अधिकारियों के बीच हुई चर्चा में स्वीकृत निष्कर्षों की एक प्रति सभा पटल पर रखता हूं।

[पुरतकालय में रखी गई। देखिए संख्या एल० टी० 4034/65]

# सामान्य ग्राय-व्ययक—सामान्य चर्चां—जारी GENERAL BUDGET—GENERAL DISCUSSION—contd.

ग्रध्यक्ष महोदय: श्री द्वा० ना० ग्रपना भाषण जारी रख सकते हैं।

श्री द्वा॰ ना॰ तिवारी (गोपालगंज): पिछली शाम मैं रे ग्रपने भाषण के दौरान वित्त मंत्री महोदय से निवेदन किया था कि वह इस बात का प्रयत्न करें कि घाटे की ग्रर्थ-व्यवस्था न हो। उस सम्बन्ध में मैंने कहा था कि रिजर्व बैंक द्वारा जो ऋण लिये जा रहे हैं वे एक प्रकार से घाटे की ग्रर्थ-व्यवस्था है। लाल किरोसीन तेल को ग्रधिकतर निर्धन तथा मध्य श्रेणी के लोग उपयोग में लाते हैं। ग्रतः मैंने वित्त मंत्री से ग्रनुरोध किया था कि वह इत पर लगे हुए शुल्क को हटा दें। वित्त मंत्री महोदय को राज्यों के कर्मचारियों के वेतनों में वृद्धि करने के लिए राज्य सरकारों को तदर्थ नये संसाधनों को उपलब्ध करवाना चाहिए जिससे कि राज्य सरकारें ग्रपने कर्मचारियों के वेतनों में ग्रावश्यक वृद्धि कर सकें ग्रीर कर्मचारियों में फैले हुए ग्रसन्तोष को दूर कर सकें। केवल केन्द्रीय सरकारी कर्मचारियों के वेतनों में ही पर्याप्त वृद्धि करना वांछनीय नहीं है।

वित्त मंत्री महोदय को कुछ वस्तुश्रों पर लगाये गये नये करों को कम करने के बारे में भी उदारता तथा सहानुभूति से विचार करना चाहिए जिनका भार व्यापारियों पर न पड़ कर श्रन्त में उपभोक्ताश्रों पर पड़ जाता है। वित्त मंत्री का शहरी सम्पत्ति पर श्रधिकतम सींमा लगाने के बारे में कार्य श्रारम्भ करने का कदम सराहनीय है।

जहां तक योजना का सम्बन्ध है, प्रत्येक क्षेत्र की प्रगति का उचित ध्यान रखा जाना चाहिए। बिहार की स्थिति इस सम्बन्ध में अत्यन्त दयनीय है। बिहार में प्रचुर प्राकृतिक संसाधन होने के बावजूद भी अौद्योगिक विकास के मामले में वह अन्य राज्यों से पिछड़ा है। बिहार में प्रति व्यक्ति औसत आय 200 रुपये से कम है और उत्तर बिहार में तो वह 150 रुपये से भी कम है जबिक समस्त भारत की औसत आय 330 रुपये प्रति व्यक्ति है। यदि बिहार में उपलब्ध संसाधनों का उचित रूप से विकास किया जाय तो वह भारत का रुहर हो सकता है।

ऊंवी सेवाग्रों में भी बिहारियों को सरकारी उपक्रमों ग्रथवा गैर-सरकारी उपक्रमों में भी बहुत कम स्थान प्राप्त हैं। सम्पूर्ण भारत की ग्रोसतन 70 प्रतिशत लोग कृषि पर निर्भर हैं किन्तु बिहार में 85 प्रतिशत से भी ग्रधिक ग्रोर उत्तर बिहार में तो लगभा 90 प्रतिशत तक लोग कृषि पर हो निर्भर रहते हैं फिर भा वहां सिचाई सम्दन्धी सुविधायें बहुत कम हैं। ग्रन्य स्थानों की तुलना में बिहार में बिजली की दर भी ग्रधिक ऊर्जी है।

बिहार में कुछ चीती की मिलों के ग्रितिरक्त मुश्किल से ही ग्रीर कोई उद्योग है। बिहार का जूट कलकता को जाता है ग्रीर वहां के कुषकों को बंगाल के कुषकों की तुलना में कम पैसा दिया जाता है। बिहार में सहकारी चीनी कारखाने, जूट कारखाने ग्रीर खोई से कागज बनाने के कारखाने स्थापित करने की काफी गुंजाइश है। ग्रतः मैं वित्त मंत्री महो-दय से अनुरोध कहंगा कि वह बिहार में विकास के स्तर को देश के दूसरे स्थानों के विकास स्तर तक लाने का प्रयत्न करें।

### [श्री द्वा० ना० तिवारी]

लोगों की दशा दिन प्रति दिन बिगड़ती जा रही है और यदि इस सम्बन्ध में कुछ उपाय नहीं किये गये तो लोग निराश हो जांगे ग्रीर इसके परिणाम गम्भीर होंगे ग्रीर सरकार के लिए स्थिति का सामना करना किश्त हो जायेगा।

श्री के द मालवीय (बस्ती) : कम ग्राय वाले वर्ग को दी गई राहत पर्याप्त नहीं है। वास्तव में उन्हें कुछ राहत देनी है तो ग्रापातकाल के कारण वर्ष 1963-64 में जो ग्रातिरक्त ग्रातिभार लगाया गया था उसे हटाया जाना चाहिए। राहत दिये जाने के बावजूद ग्राय-व्ययक प्रस्तावों में 7,500 रुपये की ग्राय से तुरन्त निम्न वर्ग पर कर-भार को प्रतिशतता वर्ष 1962-63 की तुलना में ग्राधिक है। जबकि ग्राधिक ग्राय वाले वर्ग के मामले में इसे काफी सीमा तक हटा दिया गया है।

छूट ग्रौर कर सम्बन्धी ऋणों के रून में दिये गये प्रोत्साहन से ग्रनुचित प्रवृत्तियों ग्रौर समाज के एक भाग में चालाकी करने की वृत्ति को बढ़ावा मिलेगा। इससे बचत ग्रथवा ठीक ग्रौर बिखरे हुए ढंग से उद्योगों के विकास को प्रोत्साहन नहीं मिलेगा। ग्राद्य व्ययक के प्रस्तुत किये जाने के तीन सप्ताह बाद भी मूल्य कम नहीं हुए हैं।

कांग्रेस ने जिन नीतियों में निष्ठा प्रकट कर रखी है उन पर वह नहीं चल रही है। ऐसा प्रतीत होता है कि वित्त मन्त्री और सरकार को सरकारी क्षेत्र की परियोजनाओं के प्रयोजनात्मक और कार्य-साधन होने के बारे में सन्देह है। ऐसा मालूम होता है किसी हद तक उन्हें भारतीय उद्योगपितयों के हमारे आर्थिक विकास कार्य में सहायक होंने के बारे में सन्देह है। यही कारण है कि भारी मात्रा में विदेशी औद्योगिक पूंजी हमारी अर्थ-व्यवस्था पर लादी जा रही है। इस प्रकार हमारे औद्योगिक नीति संकल्प का नया अर्थ निकाला जा रहा है। किसी भी गुट में शामिल न होने के सिद्धान्त को, जिसे कि स्वर्गीय प्रधान मन्त्री ने आर्थिक क्षेत्र में भी लागू किया था, बदल दिया गया है। हमारी आर्थिक समस्याओं को हल करने के लिए जो नये साधन अपनाने का प्रयत्न किया जा रहा है वह फलमूलक पहलू वाले निराशावादी दृष्टिकोण और हमारी आने वाली पीढ़ियों के लिए हानिकारक सिद्धान्त पर आधारित है।

वित्त मन्त्री महोदय की नीति से ऐसा प्रतीत होता है कि वह श्रौद्योगिक नीति सम्बन्धी संकल्प को एक नया ही रूप दे रहे हैं श्रौर उसके बारे में श्रपना विचार प्रकट नहीं कर रहे हैं। श्राज श्रन्त-र्राष्ट्रीय सैनिक स्थिति को देखते हुए यह नीति हानिकारक प्रतीत होती है।

हमारे महान् नेता जवाहरलाल नेहरू द्वारा प्रतिपादित तटस्थता की नीति न केवल भारत के विदेशी कार्यों में ही लागू रही बल्कि इसको म्राथिक-क्षेत्र में भी लागू किया गया। म्रौर यह उन्ही का दिमाग था कि वे म्राथिक विकास के लिए म्रमरीका की म्रपेक्षा रूस से म्रिधिक उदार शर्तों पर सहायता प्राप्त कर सके। इस प्रकार राजनीतिक तटस्थता का म्राथिक तटस्थता पर भी प्रभाव पड़ा म्रौर वे एक दूसरे पर निर्भर हो गये।

हमारे वित्त मन्त्री का इरादा है कि देश में या विदेश में जहां से भी पूंजी मिल सके उसे प्राप्त किया जाए और इस प्रकार स्रार्थिक समस्यास्रों को हल करने के लिए जो नये साधन ढूंढे जा २हे हैं वे हमारी भावें पीढ़ियों के लिये हानिकारक सिद्धान्तों पर स्राधारित हैं।

भारत में हाल के वर्षों में श्रौद्योगिक क्षेत्र में बड़ी प्रगति हुई है । लेकिन ज्ञात हुश्रा है कि पटसन, सूती कपड़ा श्रौर चीनी जैसे हुमारे रूढ़िगत श्रौर प्राचीन उद्योगों का विकास रसायन, इंजीनियरी श्रौर धातु कार्मिक उद्योगों की तुलना में बहुत कम हुम्रा है। राज्यों द्वारा हस्तक्षेप किये जाने म्रौर स्वामित्व के फलस्वरूप इन उद्योगों को म्रावश्यकता से म्रधिक महत्व दिया गया है। कुछ म्रध्ययनों से पता चलता है कि इस म्रविध में नये उद्योगों में तो प्रतिवर्ष 10 प्रतिशत की दर से प्रगति हुई है म्रौर 1956 के बाद से पुराने उद्योगों की प्रगति में लगभग 2.5 प्रतिशत की कमी हुई है। इसके कारण स्पष्ट हैं। मैं मानता हूं कि इन उद्योगों में इसलिए कम प्रगति हुई है कि ये उद्योग कृषि-प्रधान हैं लेकिन नये उद्योगों की म्रधिक प्रगति म्रथं-व्यवस्था के म्राधुनिकीकरण म्रौर सरकारी क्षेत्र में म्रायोजन म्रौर मूल उद्योगों पर निर्भर रहने के कारण हुई है।

ग्रब समय ग्रा गया है जबिक इस बात की जांच की जाय कि गैर-सरकारी क्षेत्र के बड़े उद्योगों ने ग्रब तक काम में तेजी लाने, उत्पादन ग्रारम्भ करने में देर लगाने ग्रौर धन के ग्रपव्यय के सम्बन्ध में क्या रवैया ग्रपनाया है। इसका ज्वलन्त उदाहरण 'बरेली सिन्थेटिक रबड़ फैंक्टरी' है जो कुछ वर्ष पूर्व स्थापित की गयी थी। उसकी जांच की जाये।

हम ग्रात्म-विश्वास की बात करते रहे हैं ग्रौर ग्रात्म-सम्मान के तौर पर बर्ताव कर रहे हैं लेकिन हम ऐसी प्रणाली के बनाने में ग्रौर विश्वास पैदा करने में ग्रसफल रहे हैं जिससे हम देश की रुकी हुई प्रगति को तेज कर सकें। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए लोगों की शक्ति केवल तभी बढ़ायी जा सकती है जब राष्ट्र के नेता लोग ग्राधिक ग्रादशों के लिए समाजवादी मार्ग ग्रपनाने से न हिचकिचाएं। भारत में सुदृढ़ ग्रौरठोस नींव तभी पड़ सकती है जब हमारी छिपी योग्यता को कांग्रेस द्वारा पारित समाजवाद सम्बन्धी संकल्पों को ग्रपना कर बिना किसी हिचक के उनको कियान्वित करके बाहर लाया जाए। इसके लिए लोगों में ग्राशा का संचार किया जाए ग्रौर उनके लिए प्रोत्साहन का वातावरण स्थापित किया जाए।

मैं यह चाहता हूं कि सरकार इस बात पर नये ढंग से सोचे ग्रौर ग्रपने विचारों को बदले ताकि वर्तमान निर्भरता के वातावरण को ग्राशा के वातावरण में बदलने के लिए नये तरीके ग्रपनाए जाएं।

हमें इस बात का एक ही बार निर्णय कर लेना चाहिए कि भारत को अपनी अर्थ-व्यवस्था का विकास अधिकतर स्वयं करना है। अब समय आ गया है जबिक हमें औद्योगिक नीति संकल्प का पालन करना चाहिए और यह प्रतिज्ञा करनी चाहिए कि हम इससे परे नहीं जाएंगे।

तेल उद्योग के सम्बन्ध में सरकार ब्रात्म-विश्वास ब्रौर ब्रात्म-सहायता पर निर्भर रही है जबिक उर्व रक उद्योग के सम्बन्ध में ऐसा नहीं किया गया है। तेल उद्योग में 90 प्रतिशत से भी ब्रधिक सहायता समाजवादी देशों से ली गई जो ब्रपनी जानकारी हमें देना चाहते थे। हमारे देश में इंजीनियर ब्रौर डिजाइन बनाने वाले व्यक्ति काफी माला में हैं ब्रौर उर्वरकों के उत्पादन के लिए लगभग सभी सन्यन्त ब्रौर मशीनें, केवल कुछ को छोड़ कर, भारतीयों द्वारा चलाई जा सकती है। यदि हम ऐसा करते हैं तो लगाई गई पूंजी पर होने वाला लगभग 20 प्रतिशत लाभ विदेशी विनियोजकों को देने के वजाय हम स्वयं ले सकेंगे। इससे ब्रारम्भिक कठिनाइयां दूर होंगी। सारा विनियोजन हम पांच वर्षों में वसूल कर सकते हैं ब्रौर विदेशी मुद्रा पर भार भी कम पड़ेगा।

मैं यह बात नहीं मानता कि कृषि के क्षेत्र में सभी कठिनाइयां उर्वरकों की कमी के कारण हैं। इस विष्टको ए से उर्वरकों की कमी दूर की जा सकती हैं। अपने देश में उर्वरक बनाने में कुछ समय लग सकता है लेकिन उससे कोई विशेष हानि नहीं होगी। इतने समय में हम ठीक ठीक वितरण के लिये अपनी प्रशासनिक व्यवस्था को सुधार सकते हैं। सरकार को समूची प्रशासनिक

### [श्री के ० द० मालवीय]

व्यवस्था को सुधारना चाहिए ग्रौर पुराने तरीकों की जगह नए तरीके लागू करने चाहिएं। यदि हम ग्रपनी प्रशासनिक व्यवस्था को नहीं बदल सकते तो थोड़े समय में समाजवाद की स्थापना करने की बात करना निर्यक है।

मुझे ग्राशा है कि सरकार समूची स्थिति पर विचार करेगी ग्रौर ग्रपने कार्य ग्रात्म-सहायता ग्रौर ग्रात्म-विश्वास के ग्राधार पर करेगी ।

श्रो नाथ पाई (राजापुर) : अध्यक्ष महोदय, यह आय-व्ययक चालाक तथा समृद्ध व्यक्तियों के लिए एक बुद्धिमान व्यक्ति द्वारा बनाया गया आय-व्ययक है।

वास्तव में एक कल्याणकारी ग्रर्थ-व्यवस्था की स्थापना करने के बजाय हम एक बहुवंशीय ग्रर्थ-व्यवस्था स्थापित कर रहे हैं। यह ग्राय-व्ययक ऐसे दल का है जो समाजवाद लाने के लिए कटिबद्ध हैं ग्रौर जो यथेच्छाकारिता ग्रपनाए हुए हैं।

इस ग्राय-व्ययक पर ग्रापातकाल में फंसे देश के ग्राय-व्ययक के रूप में विचार करना है। देश में ग्रनेक समस्यायें हैं ग्रौर सीमाग्रों पर बड़ी गम्भीर घटनाएं हो रही हैं। स्वतन्त्रता के बाद विदेशों में हमारी इज्जत कम हुई है। हम जिस ग्रायोजन रूपी रथ पर बैठ कर समृद्धि तथा बहुतायत रूपी जिस मन्दिर की ग्रोर जाना चाहते हैं वह प्रशासनिक ग्रदक्षता ग्रौर ग्रक्षमता के पंक में धंसा हुग्रा है ग्रौर नीचे की ग्रोर जा रहा है।

वर्तमान शासन में भ्रष्टाचार बहुत फैला हुग्रा है जिसने राजनीतिक जीवन की जड़ें खोखली कर दी हैं ग्रौर जो जनता के उत्साह को क्षीण कर रहा है।

समूचे रूप से केन्द्रीय सरकार का प्राधिकार बहुत ही क्षीण हो गया है। केन्द्रीय सरकार का प्राधिकार इतना दुर्बल है कि वह राज्यों को किसी भी मुख्य राष्ट्रीय समस्या पर एक सी नीति ग्रपनाने का ग्रादेश मनवाने में ग्रसमर्थ है चाहे वह भाषा का मामला हो, ग्राय-व्ययक बनाने का प्रश्न हो, देश के जल-संसाधनों के वितरण जैसे मामले हों ग्रथवा राज्यों के बीच सीमा पर निर्णय लेने का मामला हो। कृष्णा-गोदावरी जल-विवाद सरकार की ग्रयोग्यता का ज्वलन्त उदाहरण हैं। सरकार के कुप्रबन्ध के कारण ही खाद्य-संकट पैदा हुग्रा है। इस सरकार को साधारण व्यक्तियों की सरकार कहा जा सकता है जो ग्रक्षम व्यक्तियों द्वारा ग्रसहाय व्यक्तियों के लिए चलायी जा रही है।

चाऊ-एत-लाई का कहना है कि नेफा तथा ग्रन्य क्षेत्रों में 80,000 वर्ग मील, भारतीय भूमि पर उनका दावा है। हमें इस पर गम्भीरता से विचार करना चाहिए।

यह ऐसा ग्राय-व्ययक नहीं है जिससे समाजवाद को स्थापित करने का वचन पूरा हो। हमारा पहला लक्ष्य इस वचन को पूरा करना है ग्रौर दूसरा लक्ष्य चीनियों ने भारतीय क्षेत्र पर कब्जा करके हमें जो नीचा दिखाया है ग्रौर शरिमन्दा किया है, उसे दूर करना है। क्या यह एक ऐसा उपकरण है जिससे हम इस देश की बुनियाद को मजबूत बना सकें जिससे किसी भावी ग्राक्रमणकारी के लिए हमें दो बारा इस प्रकार नीचा दिखाना सम्भव न हो। इस ग्राय-व्ययक से ऐसी कोई भी बात पूरी नहीं होती।

यह कहना तथ्यों का उपहास करना है कि सरकार ने नए भार नहीं बढ़ाए हैं। श्री ति० त० कुष्णमाचारी जो तरीके स्रपना रहे हैं उनमें से एक यह स्रप्रकट स्राय-व्ययक पेश करना है। कुछ महीने हुए उन्होंने कुछ रियायत दी थी। लेकिन उनसे क्या लाभ हुस्रा। उन्होंने नए उद्योगों में लगायी जाने

वाली अंश पूंजी पर 5 से 10 प्रतिशत की रियायत दी थी। इसके कुछ दिन बाद उन्होंने 10 प्रतिशत विनियानिक शुल्क की घोषणा कर दी थी। ऐसी व्यवस्था बजट प्रस्तावों के रूप में न करके अलग से की जाती है। इस प्रकार के बजट को प्रोत्साहन नहीं दियां जाना चाहिए।

त्राज भारत में सामान्य व्यक्ति का उपभोग स्तर सबसे कम है। हर रोज रुपये का मूल्य गिर रहा है। 1964 में अर्थ-व्यवस्था की सबसे बड़ी बात मूल्यों में लगातार वृद्धि हैं। भारत के रिजर्व बैंक के सर्वेक्षण में बताया गया है कि 4 सितम्बर, 1964 को समाप्त होने वाली अवधि में मूल्यों में वृद्धि द्वितीय विश्व युद्ध के बाद किन्हीं भी बारह महीनों की तुलना में सबसे अधिक रही है। खाद्य पदार्थों के मूल्य में 23 प्रतिशत की वृद्धि हुई है, औद्योगिक कच्चे माल के मूल्य में 21 प्रतिशत वृद्धि हुई है और अन्य निर्मित वस्तुओं के मूल्यों में भी इसी प्रकार वृद्धि हुई है। लेकिन सामान्य व्यक्ति पर बढ़ते हुए मूल्यों के प्रनाव को खाद्यान्न के मूल्यों में वृद्धि से देखा जाता है। गेहूं के मूल्य में 57 प्रतिशत की वृद्धि हुई है और चने के मूल्य में 108 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। जनता को यह लाभ मिल रहा है।

सरकार अक्सर काहिरा का उदाहरण देती है लेकिन वहां क्या हुआ। काहिरा में 1952 के बाद खाद्यान्नों के मूल्य वास्तव में गिरे हैं और आज वहां पर रोटो उसी मूल्य पर बिक रही है जिस मूल्य पर वह नासर द्वारा शासन संभालने के फौरन बाद बिक रहीं थी। श्री सुब्रह्मण्यम को इस पर विचार करना चाहिए।

वह व्यापारियों द्वारा जमाखोरी की बात करते हैं। पी० एल० 480 के अन्तर्गत जो अनाज आता है उसको ठीक से नहीं उतारा जाता। सरकार को चाहिए कि वह माल उतारने की जिम्मेवारी जनता पर न डाल कर अपना 'स्टाक' बनाए।

हमने कई बार जमाखोरी ग्रौर चोर बाजारी के बारे में चिन्ता व्यक्त की है। क्या सरकार का यह कर्त्तव्य नहीं है कि वह जमाखोरों ग्रौर चोर-बाजारियों के विरुद्ध भारत प्रतिरक्षा नियमों को लागू करे ? लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया ग्रौर फलस्वरूप मुल्य बढ़े ग्रौर ग्रर्थ-व्यवस्था की स्थिति में कोई स्थिरता नहीं रही।

भारत सरकार की पित्तका 'इण्डियन लेबर जरनल' में ग्रिखिल-भारतीय उपभोक्ता ग्रीसत मूल्य देशनांक से स्पष्ट है कि 1951 में 111 रुपये में जो कुछ खरीदा जा सकता था उसके लिए ग्रब 156 रुपये चाहिए।

12 वर्षीय राष्ट्रीय रक्षा प्रमाणपत्न जो 1957 में शुरू किये गये थे, उन पर 1964 में 133 रुपया मिलेगा। उसमें लगाये गये धन पर कोई ज्याज नहीं दिया जाता ग्रौर इसके ग्रतिरिक्त रुपये का मूल्य भी गिर गया है। इससे लोगों को रक्षा प्रमाणपत्न खरीदने के लिए प्रोत्साहन नहीं मिलता बल्कि उससे उसकी ऋय-शक्ति कम हो जाती है।

मूल्यों को बढ़ने से रोकने में सरकार को ग्रसफलता एक बड़ी ग्रसफलता है जो ग्रन्ततोगत्वा लोगों के मनोबल को धक्का पहुंचाती है ग्रौर इस कारण हमें एक स्वतंत्र देश के रूप में रहने के लिए दुर्बल बनाती है।

1963 ग्रौर 1964 में भारो मात्रा में ग्रितिरिक्त कर लगाये गये थे। जनता ने देश की स्वतंत्रता की रक्षा के हित में इन भारों को स्वेच्छा से सहर्ष स्वीकार किया। लेकिन इन भारों को वहन करने में सरकार ने पहल नहीं की।

### [श्री नाथ पाई]

में ग्रापको ख़तरे के बारे में कह रहा था। पूर्व इसके कि मैं ग्राधिक दृष्टिकोण पर ग्राऊं, मैं ग्रापको यह दता दूं कि हमारी सीमाग्रों पर क्या हो रहा है। कल ही हमारे वैदेशिक कार्य मंत्री ने सूचना दी कि तीन दिन तक लगातार पाकिस्तानी ग्रन्सार ग्रौर उनकी सशस्त्र कान्स्टेष्वलरी ने ग्राक्रमण विये। सारे भारत की सीमा ऐसे जित होती है जैसे कि यह नागात्र्यों के लिये निशानेबाजी का स्थान हो, ग्रथवा पाकिस्तानियों के परेड करने का मैदान हो या चीनियों के खेत का मैदान हो कि वे जब चाहें यहां ग्रावें ग्रौर जब चाहें चले जावें।

यदि दूसरी ग्रोर देखें तो जनता को बहुत कष्ट सहना पड़ रहा है। यह नकली प्रकार का समाजवाद है। ग्राप किसी भी देश को लीजिये, चाहे वहां की सामान्य स्थिति के समय ग्रथवा ग्रापातकाल स्थिति के समय, कहीं भी जनता को इतना बोझ नहीं उठाना पड़ा, जितना यहां की जनता को उठाना पड़ रहा है। जनता चाहती है कि उनके इस बोझ का ग्रब कोई फल मिले। परन्तु यहां तो यह सारा बोझ ऐसे दिखाई देता है कि नाली के रास्ते जा रहा हो।

इस सरकार का काम केवल परिवर्तनवादी नारे लगाना तथा उन्हें पूरे न किरने का ही रह गया है। यह दिन रात चिल्लाते हैं कि परिवर्तन लावेंगे परन्तु पूरा कभी नहीं करेंगे। मझे तो यह केवल "छाया की लड़ाई" दिखाई दे रही है।

मैं यह मानता हूं कि हमारे पास कुछ बड़े ग्रच्छे, ईमानदार तथा समर्पित ग्रधिकारी हमारे कार्यालयों में हैं परन्तु ग्रधिकतर तो उनमें ऐसे हैं कि ग्राप उनके भरोसे समाजवाद नहीं ला सकते । उनमें से ऐसे भी हैं कि ग्राज तो सरकारी उपक्रम के ग्रध्यक्ष के पद पर कार्य कर रहे हैं परन्तु नजर है किसी निजी उद्योग पर जहां कि वह सरकारी नौकरी से निवृत्त होते ही उसे चले जाना है । क्या यही ढग है जिससे कि ग्राप समाजवाद लावेंगे ? श्री रूजवेल्ट तथा तत्पश्चात् श्री केनेडी को ग्रमरीका के प्रशासन में नये नवयुवकों को लाना पड़ा क्योंकि वे वहां कुछ करना चाहते थे। श्री कृष्णमाचारी भी एक बार कुछ इसी प्रकार का विचार कर रहे थे। परन्तु दिखाई ऐसा देता है कि ने केवल निजी बातचीत में ही ऐसा कहते हैं ग्रीर बाद में जब ग्रपने कार्यलय में जाते हैं तो सब कुछ भूल जाते हैं।

नवयुवकों को प्रशासन में लाने के दो तरीके हैं। एक तो यह कि हम अपने निवयुवकों को बाहर भेजें और नये विचार धारण करें और दूसरा यह कि नवयुवकों को थोड़ें समय के लिये बाहर से ठेके पर लाया जावे।

इस समय हमारे प्रशासन में बहुत ही अनुशासनहीनता है ग्रौर सबसे अधिक वह वैदेशिक कार्य मंत्रालय में है। ग्रभी थोड़े दिन पहले हमारे एक राजदूत तथा एक दूत ने जब उनका स्थानान्तरण हुआ तो उन्होंने जाने से इन्कार कर दिया कि उन्हें वहां की जलवायु अच्छी नहीं लगती अथवा बह देश अच्छा नहीं लगता।

कल विदेशी सहायता के बारे में कुछ कहा गया था। मैं तो विदेशों से रुपया उधार लेने के अधिक हक में हूं न कि अधिधंध बाहर की पूंजी अपने देश में लगवाने से। वैसे यदि अच्छी शर्तों पर विदेशी पूंजी लग जावे तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है। यदि हम समता चाहते हैं तो हमें ऐसी विदेशी पूंजी से पीछा छुड़ाना होगा जिसने इस शताब्दी में हमें बोझ से मारे रखा। यदि हम गम्भीरता से उस वचन का पालन करें जो हमने जनता को दिया है तो हमारा बजट ऐसा होना चाहिये कि एक ग्रोर तो उससे ग्रिधक उत्पादन बढ़े ग्रीर दूसरी ग्रीर उससे समानता फैले।

श्री मुरारका (झंझन्) : ग्राघ्यक्ष महोदय, मैं वित्त मंत्री को उनके बजट के लिए बधाइ देना चाहता हं कि वे बजट के द्वारा कुछ परिवर्तन लाये हैं। इस बजट को हमें बहुत पहलुओं से देखना होगा। एक ग्रोर तो नुद्रास्फीति तथा मूल्यों का बढ़ना ग्रौर दूसरी ग्रोर विदेशी मुद्रा की गम्भीर परिस्थिति है। हमारे ग्रौद्योगिक उत्पादन में भी रोक भ लग गई है। एक ग्रोर हमारे कारखाने कुछ मात्रा मं खाली खड़े हैं तो दूसरी ग्रोर हमारो मांग भी पूरी नहीं हुई है। हमारे रक्षा तथा विकास के कार्यों के लिये काफी मांग है। हमारे देश म जनसंख्या बढ़ती जा रही हैं ग्रौर नगरों में बहुत भीड़ होती जा रही है।

इसलिये मेरे विचार म आधुनिक बजट को केवल आय तथा वियय का विवास ही न समझा जावें, बल्कि इस बहुत पहलुप्रों से देखा जाना चाहिये। इस बजट से उत्पादन को सहायता मिली हैं तथा निर्यात भी बढ़ाने वाला है। इससे बचत भी बढ़ेगा और मुद्रा-स्फीति को भी रोकेगा। जो रियायत वित्त मंत्री ने दी हैं उनकी हमारे देश को आर्थिक दृष्टि से आवश्यकता भी है।

वित्त मंत्री ने कहा है कि उनका बजट बचत का बजट है। पिछले 15 वर्ष में 1 बजट प्रस्तुत किये गये उनमें से 7 तो बचत के बजट थे तथा 8 घाट के बजट थे।

# उपाध्यक्ष महोदय पीठासीन हुए Mr. Deputy Speaker in the Chair

इनमें से सिवाय एक बजट के जो 1957-58 में प्रस्तुत किया गया था, वाकी सारे बजट अन्त में बचत के ही बजट निकले । हमें अपने बजट बनाने के तरीके में सुधार करना होगा।

ग्रच्छे बजट की पहचान यह है कि वह घाटे का बटट न हो हिंवैसे मुद्रास्फीति का बड़ा कारण यह होता है कि ग्राप उत्पादन से ग्रिधिक व्यय वरने हैं। रुपया का ग्रिधिक होना ग्रिथवा मूल्यों की वृद्धि होना तो मुद्रास्फीति के कारण नहीं ग्रिपितु कार्य हैं। इसिलये इसका इलाज तो केवल ग्रिधिक उत्पादन ही है।

वित्त मंत्री ने बैंक की दर बढ़ा दी है ताकि लोग वहां से कम रुपया उधार लें, परन्तु उसके विरुद्ध उन्होंने सरकारी कर्मचारियों को वेतन देने के लिये 38 करोड़ रुपये की व्यवस्था की है। ऐसे ही इस वर्ष हमने रक्षा पर व्यय करने के लिये 872 करोड़ रुपये की व्यवस्था की है। ऐसे ही कुछ ग्रौर खर्च हैं जिन पर खर्ग करने से हमें जल्दी ही फल नहीं मिलेगा। इन सबका परिणाम ग्रिधिक मुद्रास्फीति ही होगा।

वित्त मंत्री काफ़ी प्रयास कर रहे हैं कि सरकारी व्यय कम हो परन्तु ऐसा करने मैं वे पूरी तरह सफल नहीं हो पाये हैं।

बैंक दर बढ़ाने का एक बुरा प्रभाव यह भी पड़ेगा कि उत्पादन के लिये रुपया [मिलना किठन हो जावेगा। वैसे वित्त मंत्री ने उत्पादन बढ़ाने के लिये कुछ रियायत दी हैं जैसे

# [श्री मुरारका]

कि उन्होंने 20 प्रतिशत छूट निगम कर में दी है। परन्तु उन्होंने कोई सामान्य प्रोत्साहन उत्पादकों को नहीं दिया है। विशेषकर कृषि उत्पादकों को ग्रीर नहीं उन्होंने छोटे उत्पादकों को कोई बढ़ावा दिया है। वैसे प्रोत्साहनों में सबसे बड़ा प्रोत्साहन लाभ का होता है। बाकी के तो सारे प्रोत्साहन थोड़े ही दिन चलने वाले होते हैं। रूस में भी ग्राजकल इस सिद्धान्त को मान लिया गया है।

वित्त मंत्री ने उत्पादन की लागत कम करने की दिशा म कुछ नहीं किया है । मुद्रास्फीति रोकने की दिशा **में** यह बहुत महत्वपूर्ण है।

वित्त मंत्री को मैं बधाई इस बात पर भी दूंगा कि उन्होंने कर के ढांचे को ग्रासान करने की बात भी कही है ग्रौर उन्होंने इस दिशा में कुछ किया है चाहे वह थोड़ा ही है । यह कर का ढांचा बहुत ही पेचीदा था।

मैं इन कर के कानूनों के बारे में कुछ सुझाव दे दूं जिससे कि एक ग्रोर तो यह जनता को स्वीकार हों ग्रौर दूसरी ग्रोर कर वसूल करने वाले ग्रिधकारियों का भी बोझ कम हो। मेरा पहला सुझाव यह है कि हम एक ग्रान्तरिक राजस्व संहिता रखें जिससे कि सारे परोक्ष कर एक स्थान पर सरल भाषा में संगठित कर दिये जावें। दूसरे हमें एक संगठित कर विवरणी दो जिसमें ग्राय कर, धन कर, दान कर तथा व्यय कर एक ही ढंग से दिखाये गये हों। तीसरे हमें एक ऐसा ढंग ग्रपनाना चाहिये जिससे कम ग्राय के व्यक्तियों के करों में से छूट दी जावे। इनमें व व्यक्ति हों जिनकी ग्राय 10 या 15 हजार रुपये से कम हो।

एक ग्रारोप जो बजट के विरुद्ध लगाया गया है ग्राँर कुछ हट तक उचित भी है, वह है कि इसमें पूंजी बाज़ार को बढ़ावा देने को व्यवस्था ग्रिधिक नहीं है। इसमें यह नहीं है कि वित्त मंत्री ने उसे कोई हानि पहुंचाई है बित्क यह कि जितनी ग्राणा वित्त मंत्री से बांधी थी वह पूरी नहीं कर पाये ग्रीर इस कारण लेगों को निराणा हुई है।

पूंजी कर के विकास में पहली कठिनाई लाभाशं कर है। लाभाशं कर किती ग्रंशधारी को दिये जाने वाले बाज़ार लाभाशं पर 7½ प्रतिशत लगाया जाता है। लोग बिना किसी ग्राशा के ग्रंशों में धन नहीं लगाते।

# ग्रध्यक्ष महोदय प ठास न हुए Mr. Speaker in the Chair

किसी अच्छे व्यापार, उद्योग अथवा बैंक को धन 7 या 8 प्रतिशत पर दिया जा सकता है । अधिमान प्राप्त अंश 9 प्रतिशत कर रहित खरीदें जा सकते हैं । ऋण-दें अ 9 प्रतिशत पर खरीड़ें जा सकते हैं । ऋण 12 अथवा 15 प्रतिशत व्याज पर दिया जा सकता है । इसलिए लोग उन अंशों में पूंजी क्यों लगायें जिनसे लाभ 5 या 6 वर्षों बाद होगा और उस लाभाश पर कर भी देना पड़ेगा । वित्त मंत्री को इस प्रस्ताव पर पुनः विचार करना चाहिये । यदि लाभाश कर लगाया गया हो तो बोनस-कर भी लगाना है होगा परन्तु फिर भी दानब-कर पर पुनविचार की आवश्यकता है । क्योंकि बोनस-अंशों के कारण पहले के अंशों का मूख गिर जाता है । लाभाशों से होने दाली आय को अणुपाजित आय माना जाता है जबिक सरकार। अतिभित्तयों या वार्षिकियां से होने दानी आय को अर्जित आय माना जाता है । मेरा विचार है कि दानों प्रकार की आय के जमान माना जाय ।

न्यास अधिनियम में संशोधन किया जाना चाहिये और उसे जीवन बीमा निगम अधिनियम के अनुसार बनाना चाहिये। इस समय, न्यास की निधियों को औद्योगिक प्रत्याभूतियों में लगाने की अनुमति नहीं है। 'स्टाक एक्सचें जों' पर लागू सीमा पद्धित में भी उपयुक्त संशोधन किया जाना चाहिये। अंतर—निगम धन विनियं ग सम्बन्धी उपबन्धों को बहुत कड़ा किया जा रहा है। उस पर विचार करना चाहिये और ढील दी जानी चाहिये।

# **उपाध्यक्ष महोदय** पीठासीन हुये Mr. Deputy Speakfr in the chair

स्रव में कराधान के मामले में अत्यधिक प्रशासनिक प्राधिकार की स्रोर स्राता हूं। प्रतिवर्ष वित्त मंत्री इस बात की मांग करते रहते हैं। इस वर्ष भी उन्होंने इस सम्बन्ध में तीन महत्वसुर्ण शक्ति हों लेने की वात कही है। इस मामले पर बहुत सी समितियों ने विचार किया है। इस सम्बन्ध में सरकार द्वारा नियुक्त एक समित केन्द्रीय उत्पादन शुल्क पुनर्गठन समिति, जिसे चन्दा समिति कहां जाता है, ने बताया है कि कैसे कर-विधियों को लागू किया जाता है। जब एक मामले में लोक-लेखा समिति ने स्पष्टीकरण मांगा तो विभाग ने बताया कि एक मामले में राजस्व में हुन्ना घाटा दूसरे मामले में अधिक कर लगा कर पूरा किया जाता है। लोक-लेखा समिति के विचार में इससे मामला और खराब होता है।

धारा 23(क) के अन्तर्गत आने वाले समवायों के साथ बहुत विभेद किया गया है । कुछ लोग अतिकर बचा रहे थे और ऐसे समवायों को अपने लाभ बांटने के लिए बाध्य किया गया ताकि अंशधारियों से कर वसूल किया जा सके । पिछले वर्ष पहली बार वित्त मंत्री ने ऐसे समवायों तथा अन्य समवायों में विभेद किया । इस वर्ष उन्होंने निस्संदेह उन्हें कुछ राहत दी है। परन्तु यह राहत केवल निर्माण तथा उत्पादन करने वाले समवायों को दी गई है परन्तु इस धारा के अन्तर्गत और भी समवाय आते हैं, जैसे परामर्श, सार्थ, इंजीनियर और शिल्पकार तथा निर्माण कार्य करने वाले समवाय। उन समवायों पर 60 प्रतिशत कर नहीं लगना चाहिये जबिक अन्य समवायों पर 45 प्रतिशत कर लगाया जाता है । केवल यही नहीं, 60 प्रतिशत कर देने के बाद भी उन्हें वाध्य किया जाता है कि वे अपनी आय को लाभाशों के रूप में बांट दें । यदि वे ऐसा नहीं करे तो उन पर 37 प्रतिशत और कर लगाया जाता है । इसे घटा कर अब 25 प्रतिशत कर दिया गया है । उन पर 70 प्रतिशत की सर्वापरि सीमा भी लागू नहीं होती ।

विदेशी शिल्पकारों, समवायों को स्वामिस्व से होने वाली ग्राय पर तथा लेखकों को उनकी ग्राय पर विशेष रियायतें दी जाती हैं। वकीलों, डाक्टरों, लेखापालों, वास्तुकारों तथा ग्रन्य व्यवसाय वालों को भी विशेष रियायतें दी जाती हैं। फिल्मी ग्रभिनेताग्रों तथा ग्रभिनेतियों, नृतको तथा ग्रन्य कला— कारों से भी विशेष व्यवहार किया जाता है। पंजीकृत सार्थों तथा सहकारी समितियों से भी विशेष व्यवहार किया जाता है। पंजीकृत सार्थों तथा सहकारी समितियों से भी विशेष व्यवहार किया जाता है परन्तु यह सभी रियायतें धारा 23(क) के ग्रन्तर्गत ग्राने वाले समदायों को नहीं दी जातीं।

मैं नाननीय वित्त मंत्री की किठ नाईयों को समझता हूं। उन्हें प्रतिरक्षा श्रौर विकास के लिए प्रतन्ध करना है। इसके साथ ही घाटे की अर्थ-व्यवस्था को समाप्त करना है। इसलिए वह करों में प्रधि के निनी नहीं कर सकते। यदि अमरीका को इस सम्बन्ध में किठनाइयों को सामना है तो हम समझ सकते हैं कि हमारा काम कितना किठन है।

Shri U.M. Trivedi (Mandsaur): Mr. Deputy Speaker. Sir. it has been said that this is the first surpluse budget of our country in which a saving of rupees ten crores has been shown. On scrutinising the budget, I found that this saving has been shown as a result of heavy lears. We have started 23 companies which have not yet begun functioning. We have invested Rs. 316 crores in them. 35 companies are functioning and a sum of Rupees 316. 72 crores has been invested in them. Rupees 1026 crores have been invested in 14 development corporations. In this way a total sum of Rupees 1941 crores has been invested and the total return during this year is Rs. 5.78 crores. Even at 4 per cent interest the income should have been 6c—70 crores. We are thus, suffering a loss of 70 crores of rupees. Exact calculations can be made by the finance Minister himself. We should apply practical economics and should not depend on bookish knowledge.

Real socialism was prevalent among the Hindus. With the income of one person everybody in the family was supported. You have spoiled that system.

No country has been left from whom you have not borrowed. It is even difficult to count the countries. You have borrowed from where you could get. The quantum of loan is also too much. You think you are going to invest Rs. 22,500 crores in the Plan. You want a loan of Rs. 4000 crores. Wherefrom will you get so much money? Why are you ruining the country? You are going on increasing the loan. Why don't the people in the congress with practical knowledge come forward and say that this policy is ruining the country?

Debts are swelling and this is disturbing feature. We are unable to pay these loans. We are now taking loans to pay back previous loans, and this results in ever increasing amount of loans.

Madhya Pradesh is the largest state of India, but strangely enough the Income-tax Commissioner is not stationed there. Also no Post Master General and Director of Post offices are there in M.P.—why this discrimination with M.P.? Further, a cloth mill was to be set up at Devas. Spindles, Icoms etc. had been sanctioned and 7 lakh pounds of foreign exchange had also been Sanctioned but at the last moment, due to the intervention of a Marwari Seth the mill was shifted to Nadiad—I would like to know the reasons for this change.

There is minimum construction of roads in Madhya Pradesh. A fertiliser factory was allotted to it and even 1 1/2 crore of rupees had been spent, but now we are told that since there is no Nephtha base there, this factory would have to be shifted from there.

Regarding excise duty, there was a time when excise duty used to be levied only on luxury goods—but today we have duty on all conceivable items of daily use Prices are soaring, the burden is increasing and we wonder when this burden will be put off.

We have, unfortunately, developed a tendency to import foodgrains etc. never thinking to return the same, but though we might be able to get away with it, our prestige is bound to suffer and we have to see to it that this does not happen.

We have not prepared ourselves for the war that is before us. We have refused to manufacture atom Bomb. Other countries simply laugh at our weak policy. Even when our officers go to arrest goondas and decoits and the chase carries them into foreign territory, they themselves are arrested. Goondas

are not handed over to us. They become Muslims and live there. Pakistan has violated our territory several times but we have not retaliated effectively even once. I may say that I have highest regards for those Muslims who consider India as their own motherland, like the late Rhri Rafi Ahmad Kidwai and Shri Chagla but I have no sympathy whatsoever with those whose bodies are in India but their minds are elsewhere.

The taxation policy of the Government is responsible in disintegrating the Hindu Joint family system. I suggest that each member of such a family should get the same rebate in taxes which is given to an individual—this results in indirect harrassment of Hindus.

Shri Raghunath Singh (Varanasi): Though the Congress Government has decided not to manufacture Atom Bomb, but the difference in Atom Bomb and nuclear arms must be understood, and we want to acquire nuclear armsespecially in the context of the declaration of China that war is inevitable and they are prepared for it. But when war is coming nearer our door, we hear of Pakistani incursions in Kashmir, East Pakistan and Kutch, the Defence Budget appears inadequate. Compared to last year we have provided only crores more, which is inadequate, taking into consideration the higher prices and brewing situation on our borders. We should, therefore, spend maximum possible money on the manufacture of nuclear arms. We have provided Rs. 25 crores in 1966 for Navy. With this amount we cannot acquire even one submarine, not to mention of manufacturing them. Andamans is only 40 miles away from Burma and 80 miles from Indonesia. We are told that Indonesian Boats intrude into Andaman region and go away afterloading their boats with fish and we remain helpless spectators. We are today, facing a sort of an These countres alongwith France axis consisting of Peking-Pindi-Djakarta. and many others are thinking of setting up a parallel U.N.O. We certainly cannot remain indifferent to the activities of this axis because these countries have common borders with India and our relations are not cordial. I would therefore request the Defence and Finance Ministers to ensure greater attention to our defence effort, so that we may effectively counter any possible danger from outside.

I may now mention about what has been published in 'Gurkha' a Nepal daily wherein India has been advised to do introspection. I can say that at present we have the most cordial relations with Nepal. We have always thought well of our Nepali brothren and even when India was not free, we used to look to Nepal with pride for it is the only Independent Hindu State in the world. Nepal was the first Asian country to face the British and General B. S. Thapa was the first to say that Asia is for Asians and they should face unitedly the onslaught of Western belligerence. This message was later carried forward by Netaji.

I have to refer to the unfortunate controversy rasied by Shri Sudhir Ghosh in Rajya Sabha. Any country coming to our rescue at the time of danger is welcome and should not be referred to in such terms. Secondly, if the aircraft carrier, as has been alleged, had come near Calcutta how could Pakistan not know this and if known, keep quiet about it. Kindly how could this happen without our permission or knowledge. I have, therefore, to say that these things are wrong and such controversial statements should never be made.

I want to say this thing about Defence Certificates that because of this budget, nobody is going to invest a single paisa in them. By raising the bank rate you have benefitted the Urban population.

||Shri Raghunath Singh||

What relief have you given to the rural population which actually invests in these bonds? If you deposit Rs. 100 in a bank then you will receive Rs. 138.50 np. after 5 years and 7½ percent interest. But if you invest Rs. 100/- in Defence certificates then you will receive Rs. 120 after 5 years. The Finance Minister also added in his speech that he is going to make Defence Certificates taxable. I must warn you that in this way this scheme is not going to work.

The other thing I want to say is that dividend from equity shares has been made taxable. One can suffer loss as well as gain from the equity shares. Now if we deposit money in the bank, there is a surety of getting back the money at  $7\frac{1}{2}\%$  interest. Now who will invest in equity capital? Now you have raised the bank rate to  $7\frac{1}{2}\%$  so that when the banks loan money to the industries they will naturally charge 9 to 10% interest. Now this burden will fall on the poor consumers and the industries. The flow of money to the industries through equity capital will also stop. If the income from money deposited in banks is earned income then the dividend from shares should also be earned income. As a reason thereof I would like you to see the barometer of the market. The share of the Calico mill whose value before the budget was Rs. 1200 now stands at Rs. 600. Therefore, I want to stress that you should create such an atmosphere so that more and more people invest in industries.

Your corporate taxation is the highest in the world. In India it is 70%, in England 54%, in America 48%, in Gemany 51% and in Japan 38%. What is the reason that the industries of Japan and Gremany have flourished so much; more so because these countries were completely destroyed during the war. Therefore I would request you to revise the Corporate taxation scheme.

Now I want to say something about fall in the value of Indian currency. The value of pound which was Rs. 18 has now become Rs. 28. In the same way for Indian 70 rupees we were getting 100 Pakistani ruppes. But now the position is reversed. For 100 Indian rupees we are getting 99 Pakistani rupees. What I mean to say is that the value of Indian currency is constantly falling. That is why I want to stress that we must-reorient our thinking so that our industries may flourish.

I want to give one suggestion about hoarded wealth. You want that this money should come to the market so that it may be utilised for some useful purposes. Therefore, I want to suggest that if somebody invests hoarded money in any industry, then it should be taxed. The person should not be asked to show how he obtained that money. I hope the Finance Minister will think over my suggestion.

Shri Gouri Shankar Kakkar (Fatehpur): False praise is being showered on this year's budget that it is not a deficit budget. If you see the budgets for the last 5 or 6 years—it may Central or State—you will find that although they were deficit budgets, yet on actual working it was found that it was a surplus budget.

In order to show that there is need for more taxation the estimated expenditure is shown more than the estimated income. But when the actual work starts it is found that the income is more and the expenditure is less. I think that there shouldn't be much difference between the estimated income and expenditure.

Whenever we prepare the budget for each year we must see how it affects the social, economic and moral life of the nation. I think the Government which passed the resolution of establishing a socialist pattern of society is not clear in its mind about it. While some people prefer the capitalism others like socialism.

We have to see how far have we advanced towards socialism. The be done by seeing whether there has been any improvement in the economic condition of 75% of the population called the farmers. The late Prime Minister had himself admitted that few capitalists have amassed so much wealth after independence which had not been done during 100 years of British rule. It means while Tatas and Birlas prospered there has not been any improvement in the condition of 80% of population. If some steps had been taken to realise outstanding taxes from them it would have been a matter of great pleasure while big industrialists owe lakhs of rupees to the Government if a farmer, owes Rs. 5 to the Government he is put behind the bars. Although laws have been enacted, yet they are not being implemented.

I admit that in this country the number of capitalists, hoarders and monopolists is less. But now another class has been created and that is of ministers, their wives and relatives.

Shri Kamath has done a great service by placing a copy of the C.B.I. Report who has exposed this daylight robbery and I have all praise for him for this. Shri Chagla has described it as against moral standards and that he would have handed over the man who gave this report to Shri Kamath to police but I fail to understand how an eminent jurist ike Shri Chagla could say such a thing. A man who has even a little knowledge of law knows that if once a 'prima faaie-case is established! the same is actionable under law. If this was not trusted to a law court it only means that there are two standards for people in one for ordinary people and another for chief ministers or for those who may be belonging to the High Command.

Now it has become a habit with the Government to shield people who indulge in black marketing or who get money by such dubious methods. Now Finance Minister in his budget speech has given concession to those who are in possession of black money and their names will not be published. I do not understand this logic.

Recently we had a scarcity of foodgrains and there were bold and loud pronouncements of the Central and State Government to frame new law for it and to create buffer stocks etc. But whese is the actual position. In U.P. where there was great crisis of this nature, only one person was convicted. This is causing warning of the situation.

No facility has been given to the agriculturists in the budget. The greatest bundle for agriculturists is of credit and then of getting fertiliser seeds etc. No emphasis has been laid on either of the things.

The Finance Minister seems to be concentrating more on import of food grains than their indigenous production.

The bank rate raised today may also perhaps adversely affect this problem.

[Shri Gawri Shanker Kakkar]

The Finance Minister has given three slogans viz. that there is dearth of foreign exchange; secondly prices are rising and they should be curbed and thirdly that food situation is grave and needs solution. But I want to know whether anything is being done by which we may earn foreign exchange. All our Ministers, deputy ministers etc. use foreign manufactured cars. Only our late Prime Minister Shri Nehru used to have a small car.

Now I want to say something about arrest of legislators without framing charges against them. The white paper issued by Government about it is also not clear. I think it is mockery of constitution. If they are traitors they shold be charged as such.

There is a provision in the Constitution for free education upto the age of 14 years but thiere is no provision for it in the Constitution.

The late Prime Minister used to lay great emphasis on the cooperative sector but the same is being ignored by the new rulers here. I can prove the same by narrating statistics from Mysore State. Sometimes we find enthusiasm for socialism and then over enthusiasm for capitalism.

I am happy that Minister has indicated the statistics regarding donation of firms to political parties.

श्री मानसिंहपृ० पटेल (मेहसाना) : यद्यपि मैं ग्रर्थशास्त्र का विद्यार्थी न हीं हूं, फिर भी इतना तो कह सकता हूं कि कोई ग्रधिक कर नहीं है ग्रौर यह एक संतुलित बजट है ।

इस बजट में सब के लिए समान व्यवस्था नहीं है । यद्यपि निगम क्षेत्र के लिये काफी रियायतें द्वी हैं तो भी जितने श्रादमी उस से सम्बन्धित हैं उन्होंने कहा है कि श्रन्याय हुश्रा है । मैं स्वयं सरकारी क्षें त के हक में हूं ।

स्वतंत्र दलके सदस्यों ने कहा है कि सरकारी उपकृम तो सिवाय रेलों के पूरी तरह असफल हो गये । परन्तु तथ्य एें से हैं कि उसके विरूद्ध हैं । वास्तव में यदि कोई चीज इसमें बाधक है तो वह है. सरकार की मशीवरी जो बैस स्कारी उपक्रमों को ठीक कार्य नहीं करने दे रही है ।

उद्योगों को जांचने का मापक है कि सड़क बनाने ग्रथवा बिजली उत्पादन में कितना विकास हुग्रा है ग्रौर उन्हीं से उद्योग ग्रंधिक बढ़ते हैं । इस मापक से देखा जाय तो गुजरात बहुत पिछड़ा राज्य है ।

मैं चाहता हूं कि गुजरात के बारे में ग्रांकड़े दोबारा जांचे जांय ।

स्वतंत्रता प्राप्त हुए 17 अथवा 18 वर्ष हो गये हैं परन्तु अभी भी हम अपनी प्रतिरक्षा करने में असमर्थ हैं। हमारे जवानों को कलंकित होना पड़ा उनकी भावनाओं को उस पहूंची। इस अपमान का जब तक बदला नहीं लिया जाता तब तक हमारे जवानों में वह गौरवपूर्ण भावना गैदा नहीं हो सकती। इस सभा ने देश को व वन दिया है और प्रतिज्ञा की है कि हम अपने खोए हुये क्षेत्र को वापस लेंगे। परन्तु ऐसा कब होगा इस का कुछ पता नहीं है। आय-व्ययक में यह जो 700 करोड़ से कुछ अधिक राशि की व्यवस्था की जा रही है क्या यह पर्याप्त है। कहने को तो आपात काल है परन्तु ऐसा

वास्तव में कहीं दिखाई नहीं देता है । क्यों कि इस समय कोई आक्रमण नहीं हो रहा है, इसलिये हम असावधानी से उतनी राशि की व्यवस्था नहीं कर रहे हैं जितनी कि सेवा के अधिक प्रयोग के लिये आवश्यक है । दो वर्ष पूर्व कुल अनुमानित राजस्व का 45 प्रतिशत प्रतिरक्षा सेवाओं के लिये नियत किया गया था परन्तु इस वर्ष यह बड़ी मुश्किल से 33 प्रतिशत है ? अतः सरकार को प्रतिरक्षा सेवाओं के लिये उतनी राशि की व्यवस्था अवश्य करनी चाहिये जितनी उन्हें आवश्यक है ।

ग्रन्त में मैं कृषि सम्बन्धी कार्यों के लिये प्रयोग में ग्राने वाले डीजल तेल के बारे में कुछ कहना चाहता हूं। पिछले 6 वर्षों में इस के मूल्यों में 105 प्रतिशत वृद्धि हुई है। 1956 में 48 गैलन तेल की कीमत 45-46 रुपये होती थी ग्रौर इस वर्ष यह 98-101 रुपये है। वित्त मंत्री जी ने डीजल इंजनों के लिये सहायता देने की बात कही, परन्तु यह काफी नहीं होगी क्योंकि यह तो एक प्रकार के प्रारम्भक ग्रौर ग्रनावर्ती सहायता होगी। हम चाहते हैं कि कृषि उत्पादन में प्रयोग में लाये जाने वाले तेल के लिये ग्रावर्ती सहायता दी जानी चाहिये। इस समय गुजरात में कम से कम 30,000 डीजल इंजन चल रहे हैं। एक योजना के ग्रनुसार विद्यत् पर सरकार सहायता देना चाहती हैं। परन्तु विद्युत् सभी क्षेत्रों में तो पहुंच नहीं सकतो है। चूंकि यह इंजिन निम्न श्रेणी के लोगों के पास ही हैं, जिन के पास केवल 5 से 8 एकड़ भूमि है जिस पर वे ग्रपने परिवार का निर्वाह करते हैं, ग्रतः मैं वित्त मंत्री से ग्रनुरोध करूंगा कि उन्हें ग्रवश्य सहायता दी जानी चाहिये जिस से वे भी महसूस कर सकें कि उन को भी सरकार से सहायता मिलती है।

श्री र० ना० रेड्डी (नलगोंडा) : उपाध्यक्ष महोदय, ग्रत्याधिक महत्वपूर्ण समस्याग्रों में से एक यह है कि कृषि उत्पादन में वृद्धि कैसे की जाये। स्वतन्त्रता प्राप्त किये 17 वर्ष हो गये हैं, परन्तु ग्रब भी हम कृषि में बहुत पिछड़े हुए हैं। पता नहीं कि हम कब कृषि उत्पादन में ग्रात्म-निर्भर हो सकेंगे। हमारे यहां ग्रब भी एक एकड़ में 800 पींड चावल होता है जब कि संसार की ग्रौसत उपज 3,000 पींड प्रति एकड़ है। हमें प्रत्येक वर्ष खाद्य पदार्थ बाहर से ग्रायात करने पड़ते हैं। जिस पर परिवहन सम्बन्धी खर्चे के ग्रितिरिक्त विदेशी मुद्रा भी खर्च करनी पड़ती हैं। यह कोई एक ग्रथवा दो वर्ष की बात नहीं है यह तो ग्रब हमेशा के लिये हो गया है ग्रौर यह एक बहुत भयानक स्थिति है। कुठ प्राकृतिक ग्रापदाग्रों के कारण हमें कभी कभी ऐसा करना पड़े तो मानने की बात है ग्रन्यथा यह एक बहुत गम्भीर समस्या है जिस का समाधान करना ग्रिनवार्य है।

कहने को तो शासक दल समाजवाद लाना चाहता है, परन्तु गत 15 वर्षों में कोई विशेष भूमि सुधार नहीं किया गया। यदि कुछ सुधार हुया भी है तो भी उत्पादन में कोई विशेष वृद्धि नहीं हुई। उत्पादन में जो वृद्धि हुई है, उस से जनसंख्या में वृद्धि कहीं ग्रधिक हुई है ग्रतः इस समस्या को हल करने के लिये शी घ्रता से कार्य करना पड़ेगा। कुछ राज्यों में काश्तकारी विधान पारित किया गया है परन्तु उस से किसान को कोई लाभ नहीं हुया है। कानू नों में भू-स्वामियों को ऐसी सुविधायें दी गई हैं जिन से वे कानून की प्रत्रंचना कर सकें। ग्रीर यह सफलतापूर्व क सुनिश्चित कर सकें कि किसानों को वास्तव में भूमिन मिलने पाये। ग्रतः ऐसे कानून केवल कागजों पर ही हैं ग्रन्यथा इन से किसानों को कोई लाभ नहीं हुग्रा। शासक-दल वाले सहकारी खेती की भी बात करते हैं। परन्तु वास्तविकता है कि मुझे ग्रपने गांव के निकट एक सहकारी फार्म को रजिस्टर कराने के लिये  $2\frac{1}{2}$  वर्ष पत्र व्यवहार करना पड़ा ग्रीर वहां पर एक कुग्राखोदने तथा एक विद्यत् मोटर खरीदने के लिये 4,000 हपये की राशि का ऋण मंजूर कराने में  $1\frac{1}{2}$  वर्ष का समय ग्रीर लगा। उस के पश्चात् उस सिमित की ग्रीर कोई ध्यान नहीं दिया गया ग्रीर ग्रव स्थित यह है कि वह सिमित लगभग खत्म होने वाली है। ऐसी सहकारी सिमितियों को

# [श्री र० ना० रेड्डी]

यदि उचित सहायता दी जायेतो वह सुचारु रूप से कार्य कर सकती हैं परन्तु शासक दल वाले समाजवाद का केवल प्रचार ही कर रहे हैं इस के स्रतिरिक्त व्यावहारिक रूप से कुछ नहीं किया जा रहा है।

उर्वरकों के प्रयोग से हम उत्पादन में वृद्धि कर सकते हैं परन्तु हमारे देश में इसका उपयोग बहुत कम्हो रहा है। हम उर्व रक केवल  $2\frac{1}{9}$  पौंड से 6 पौंड प्रति एकड़ खेतों में डालते हैं। विदेशों में जिन में फालतू मनाज होता है, वह 324 से 534 पौंड प्रति एकड़ डाला जाता है। न्यूजीलैंड में यह 534 पौंड प्रति एकड़ के हिसाब से उपयोग में लाया जाता है ग्रौर जापान में 324 पौंड प्रति एकड़। यहा पर लगभग 95,000 मीट्रिक टन उर्वरक तैयार किया जाता है जब कि अमरीका में मीट्रिक टन, जर्मनी में 11,80,000 मीट्रिक टन, जापान में 10,30,000 मीट्रिक टन ग्रौर पूर्वी जर्मनी में, 3,34,000 मीट्रिक टन उर्व रकों का उत्पादन किया जाता है। मेरे विचार में हम अनाज का उत्पादन उर्वरकों के अधिक प्रयोग से दुगना कर सकते हैं। मेरा अपना अनुभव है कि आंध्र प्रदेश के कुछभागों में उर्व रकों की सहायता से एक एकड़ से ग्रौसतन 20 कट्टे चावल पैदा किया गया जो कि यहां की स्रौसत उपज से 5 गुना है। उर्वरकों को काले बाजार भाव पर बेचा जाता है। इस में कोई संदेह नहीं है कि लोग पिछड़े हुए हैं, परन्तु इस पिछड़ेपन को भी हम ने ही दूर करना है। खाद्य मंत्रालय द्वारा उर्वरकों के बारे में दी गई रियायतें बहुत कम हैं। निर्धन किसानों की पहुंच से बाहर है कि वह उर्वरक खरीद सकें। अन्य क्षेत्रों में तो रियायतें दी जा रही हैं। परन्तु कृषि क्षेत्र में कोई रियायत नहीं दी गई है। हम चाहते हैं कि कृषि के लिये विद्यत् में कुछ रियायत दी जानी चाहिये। उर्वरकों का वितरण सहकारी समितियों द्वारा किया जा रहा है यह एक अच्छी पद्धति है परन्तु सहकारी समितियां भी शासक दल के हाथ में होती है। सरकार को यह सुनिश्चित करना चाहिये कि राजनीति को उर्वरकों से दूर रखा जाये।

# श्री तिरुमल राव पीठासीन हुए Shri Thirumal Rao in the Chair

उर्वरकों के उत्पादन को बढ़ा कर के ही हम ग्रनाज के उत्पादन में वृद्धि कर सकते हैं। श्रतः यदि सरकार ग्रनाज की समस्या को हल करना चाहती है तो उसे उर्वरकों के उत्पादन में शी घ्रता से वृद्धि करनी चाहिये।

सन्तुलित तथा ग्रात्म-निर्भर ग्रथंव्यवस्था के लिये यह ग्रावश्यक है कि बोई जाने वाली जितनी भूमि है उसमें से कम से कम 33 प्रतिशत भूमि के लिये सिचाई की मुविधा तो होनी चाहिये। परन्तु हमने पिछले 17 वर्षों में क्या किया है? वह यह है कि हम केवल 18 प्रिशत भूमि के लिये सिचाई की मुविधा प्रदान कर सकते हैं। इसमें कोई सन्देह नहीं कि बहुत कार्य हो रहा है परन्तु उसमें कार्यकुशलता के साथ साथ शीघ्रता लाने की भी ग्रावश्यकता है। जब तक कार्य करने की गित को नहीं बढ़ाया जायेगा तब तक हमारी परियोजनायें समय पर पूरी नहीं हो सकतीं। उदाहरणार्थ ग्रान्ध्र प्रदेश ग्रौर मैसूर राज्य में तुगभद्रा पर कार्य 1944 में ग्रारम्भ किया गया था ग्रौर ग्रब उसको 21 वर्ष हो गये हैं। परन्तु ग्रब भी वह कार्य पूरा नहीं हो सका। यदि हम इसी गित से कार्य करते रहे तो हम कभी भी ग्रात्म-निर्भर नहीं हो सकेंगे। नागार्जुन सागर परियोजना का सारा भार राज्य सरकर पर है जो उचित नहीं क्योंकि यह राज्य दूसरे राज्य को ग्रनाज देता है ग्रौर इसलिये यह जो परियोजना है यह एक राष्ट्रीय परियोजना है ग्रत: इसके निर्माण की जिम्मेदारी केन्द्र की होनी चाहिये। ग्रान्ध्र प्रदेश को इस परि-

योजना पर काफी खर्चा करना पड़ रहा है ग्रौर इसका परिणाम यह है कि इस राज्य के पिछड़े क्षेत्रों को हानि उठानी पड़ रही है क्योंकि न ही तो उनको विद्युत मिल रही है, ग्रौर न ही कोई छोटी सिंचाई परियोजनायें हैं जिससे उनको लाभ हो ग्रतः इस नागार्जुनसागर परियोजना की सारी जिम्मे शरी केन्द्रीय सरकार पर होनी चाहिये।

यन्त में मैं सहकारी ऋण के बारे में कुछ कहना चाहता हूं। यद्यपि रक्षित बैंक राज्य सरकारों तथा शिखर बैंकों को राशि 2 प्रतिशत की दर से देता है परन्तु जब वह किसान को दिया जाता है तो व्याज की दर 2 प्रतिशत से 8 अथवा 10 प्रतिशत हो जाती है। मेरे विचार में यह कहीं अच्छा होगा कि मूल ग्रामों में रक्षित बैंक को बांचें खोली जायें ताकि किसानों को रक्षित बैंक से सीधा ऋण मिल सके और इस प्रकार यदि दर 3 अथवा 4 प्रतिशत भी हो जाये तो कोई बात नहीं है। मध्यम बैंकों को तब तक हमें आवश्यकता नहीं है जब तक हमारी अनाज की समस्या हल नहीं हो जाती क्योंकि किसानों को सस्ता ऋण देने से ही हम कृषि उत्पादन में वृद्धि कर सकते हैं।

Shri Shree Narayan Das (Darbhanga): If we look at the debate that is going on in this House regarding the budget proposals, we would know that the Finance Minister has not presented a satisfactory Budget. On the one hand we are thinking of mixed economy and on the other, socialism is before us. My view is that from this point of view if we look at the economy of the country and the conditions that are existing at the present moment, the budger that has been presented by the Finance Minister cannot be called unsatisfactory. Our people believe in different ideologies, so we should not be surprised to see the budget being criticized in several ways.

We should be aware of the fact that although the efforts have been made to hold the price line, yet the success achieved in this direction has been very little. Everybody in the country feels that there is still a great strain on the common man due to high prices. The tax relief given on certain items has not reached the middle or the poor class people. I would like to urge that the Government must give some real relief to the poor people. It is also essential that Government should at least reduce the duty on kerosene oil, especially on the red oil.

Undoubtedly the public sector should expand but the Government must ensure that the undertakings work properly and efficiently. There should be the maximum return on the capital that has been invested. The wastage that is glaring must be properly and efficiently checked. We do feel that so many concessions have been given to the Corporate sector. But despite the fact that the concessions have been given to that sector from time to time, the Corporate sector was not satisfied. The strange thing is that they neither corporated in the developmental programme nor do they want public sector to grow. It is really a strange situation for which we shall have to find out a satisfactory solution.

Although a number of institutions exist to provide financial assistance to the private sector, nothing much has been done in this direction for the agricultural sector. I feel that a separate bank should be set up for the benefit of the agricultural sector, especially the cooperative sector. In this way it may be possible to step up production. Also a crop insurance scheme on an all-India basis should be formulated as a safeguard against natural calamities.

There is a great need to tighten up the tax collection machinery. We must know that we have very high rates of taxation in our country. It would be better if we could ensure the proper collection of the taxes. In this way,

#### [Shree Narayan Das]

our revenues can go up considerably. Steps should be taken to set up industries in undeveloped and under-developed areas. Such area is the State of Bihar to which the Government should pay adequate attention.

I may also urge that along with the Budget, a statement should also be placed before the House indicating as to how far the Directive principles of State Policy as mentioned in our constitution have been implemented. With these words I support the Budget proposals of the Finance Minister.

Shri Balkrishan Singh (Chandauli): Only future can tell how useful are these budget proposals put forward by the Finance Minister. Whether this budget would lead to our desired object, is a matter which needs serious consideration. I think it will not take us to our goal of establishment of Socialist Society. Undoubtedly it is an attempt to give some relief to the general public. For this, I may congratulate the Finance Minister and welcome his proposals.

For the last few years we have realized that the common man in the country is not concerned with our plans, and policies and other things. The need of the common man is that poverty should go, disparity may be reduced and the agricultural as well as consumer goods' production should rise up. At the same time, the Ministers and Government officials should be made to work with the spirit of dedication. We must realise in time that one of the important problems that face the country is the growing indiscipline everywhere. This is prevalent everywhere among politicians and Government officials. Until and unless we take serious steps to eradicate this evil effectively, the future of the country is in grave danger.

Another important point that I want to stress is that the planning should start from below. The planning commission should bear in mind the view point of the peasant before finalising the plans. We have talked much about corruption. The corruption, whether social, economic or political, must be removed effectively. Until and unless that is done, there will be no progress of the country. In this connection, it is also important that the corruption would not be wiped out unless and until the causes of corruption are removed. Therefore we should be vigilant enough to see that action is taken in this direction seriously. Sometimes it is observed that the Government employees indulge in corruption because they are very lowpaid. I would urge that the lowpaid Government employees should be paid better so that they are kept away from any corrupt practices.

The expansion of the public sector is very essential. It is strongly felt that the concentration of wealth in a few hands must be checked. This again is very necessary, in view of the need of eradication of corruption and establishment of socialism in the country. This is really unfortunate that we have forgotten an important matter and that the education has always an important role to play in building up the Society. Planning Commission has not paid the required attention towards this factor. We should pay adequate attention to the demands of the teachers in U.P. Their legitimate demands should be met. These teachers were compelled to resort to boycott the examinations because they have not been left with any other alternative. I am of the opinion that a uniform system of education, should be introduced in the country. The medium of instruction should be the national language. We should understand that unless English is abolished, Hindi and the other languages

would not develop to the extent we like them to develop as national languages. Whatever has happened in the South should be condemned.

डा० मेलकोटे (हैदराबाद) अमैं वित्त मन्त्री महोदय को बधाई देता हूं कि वह देश में ग्राज इस प्रकार की मनोवैज्ञानिक स्थिति निर्माण करने में सफल हुए हैं जो कि इससे पूर्व देश में नहीं थी। प्रथम बार देश कराधान के बिना रह रहा है। जो रियायतें दी गयी हैं उससे ग्रौद्योगिक ग्रौर पूंजीपति वर्ग में भी एक वातावरण बना है। परन्तु वित्त मन्त्री महोदय ने यह कह कर ग्रच्छा किया है कि ग्रौर ग्रागे रियायतें नहीं मिल सकतीं। मेरा निवेदन है कि यदि कोई राहत दी जाती है तो जनसाधारण को दी जानी चाहिए, न कि पूंजीपति वर्ग को। पूंजीपति वर्ग तो पहले ही काफी भरकम हो रहा है।

श्रमिक वर्ग का यह विचार है कि मजूरी बढ़ते हुए मूल्यों के ग्रनुसार बढ़ नहीं रही है। श्रमिक वर्ग, विशेषतः ग्रौद्योगिक श्रमिकों को, पर्याप्त राहत दी जानी चाहिये। श्रमिक वर्ग ने ही देश में समूचे धन का उत्पादन किया है। उनकी मांगों को बहुत हर तक पूरा किया जाना चाहिये। जिस लाभांश की वे मांग करते हैं वह वास्तव में लाभांश नहीं है, बिल्क स्थिगित रखी गई मजूरी है। यह ग्रावश्यक है कि श्रमिक वर्ग को उन मामलों में, जिनमें उनके हित निहित हों, विश्वास में लिया जाये। देश में ऐसा वातावरण बनाया जा रहा है कि जब तक हड़ताल न हो तब तक कोई मांग स्वीकार नहीं की जाती। ग्रौद्योगिक श्रमिकों के साथ, जो ऐसा मार्ग ग्रपनाने से परे रहे हैं ग्रौर जिन्होंने चीनी ग्राक्रमण के दौरान सरकार का दृढ़ता से साथ दिया है, उचित ग्रौर न्यायपूर्ण व्यवहार किया जाना चाहिये। जो लोग ग्र, ब भी देश को स्वतन्त्र नहीं समझते उन पर कड़ी दृष्टि रखी जानी चाहिये। उनकी गतिविधियां बड़ी ख़तरनाक हैं।

सरकार को सरकारी क्षेत्र के उपक्रमों के कामकाज ग्रौर प्रबन्ध में सुधार करने के लिये पग उठाने चाहियें ताकि वे ग्रधिक ग्रामदनी दे सकें जिसका उद्योगों के ग्रग्नेतर विस्तार में प्रयोग किया जा सके। उन उपक्रमों में श्रमिकों तथा प्रबन्धकों के सम्बन्धों में सुधार करने के लिए भी पग उठाये जाने चाहियें। बेकारी की समस्या के बारे में सिक्षिय कार्यवाही नहीं की गई है। पिछड़े क्षेत्रों में उद्योगों के मामले में कुछ नहीं किया गया है। रोजगार के नये ग्रवसर निरन्तर कम हो रहे हैं। सरकार इस मामले की ग्रोर गम्भीरता से ध्यान दे।

### उपाध्यक्ष महोदय पीठासीन हुए Mr. Deputy Speaker in the Chair

तीन योजनाओं के काल में लगभा 7000 करोड़ हाया लगाया गया है। इसमें से 2800 करोड़ हिपया सरकारी क्षेत्र में व्यय हुआ है। गैर-सरकारी क्षेत्र के करों के भुगतान करने के बाद भी लाभ होने की आशा है। परन्तु सरकारी क्षेत्र कोई लाभ नहीं दिखा रहा है। हम मजदूर लोग चाहते हैं कि सरकारी क्षेत्र लाभ उत्पन्न करे। आज औद्योगिक कर्मचारी बहुत अच्छा कार्य कर रहा है परन्तु फिर भी आशाओं के अनुसार परिणाम नहीं निकल रहे। ऐसी स्थिति में सरकार को देखना चाहिये और प्रबन्ध व्यवस्था में आवश्यक परिवर्तन करने चाहियें। आज देश की विभिन्न परियोजनाओं में लगे मजदूर परिस्थितियों को समझने लगे हैं। वे प्रबन्ध व्यवस्था को सुधारने में बहुत हायक सिद्ध हो सकते हैं परन्तु वर्तमान प्रबन्धक मजदूरों का साथ मिलाना नहीं चाहते। सरकार को इस ओर ध्यान देना चाहिये। विक्त मन्त्री को बहुत से विषयों की ओर ध्यान देना होता है। साथ में उन को विभिन्न मन्त्रालयों में मन्वय कार्य भी करना होता है।

# [डा० मेल कोट]

देश में बेकारी की समस्या विकट होती जा रही है। देश में उद्योग स्थापित करते समय यह देखना चाहिये ये सभी क्षेत्रों में स्थापित हों। इस प्रकार पिछड़े क्षेत्रों में भी प्रगति हो सकती है। ग्रधिक संख्या में लोगों को रोजगार भी मिल जायेगा। ग्रौद्योगिक क्षेत्र में सरकार प्रोत्साहन बहुत कम देती है। सरकार को इस पर गम्भीरता से विचार करना चाहिये। देश के कर्मचारी वर्ग की ग्रोर से मैं ग्राश्वासन देता हूं कि हम पूरे परिश्रम से कार्य करें परन्तु सरकार को भी हमारे हित में कुछ कार्यवाही करनें। चाहिये।

श्री कन्डण्पन (तिरुचेंगोड) : श्रीमन्, यह बजट बहुत बहुत चतुर ढंग से बनाया गया है । बजट बनाते समय देश के छोटे वर्गों के लोगों का विशे ३ रूप से ध्यान किया जाना चाहिये । सरकार को देश में श्रावश्यक वस्तुएं उपलब्ध करने के समर्थ होना चाहिये । बड़े खेद की बात है कि हमें प्रतिवर्ष विदेशों से बहुत बड़ी मात्रा में खाद्यान्न मंगाने पड़ते हैं । इस का कारण क्या है ? इसके लिये बहुत कुछ सरकार जिम्मेदार है । सरकार किसानों को श्रावश्यक सुविधायें उपलब्ध करने में श्रसफल रही है; किचाई की योजनाश्रों को ठीक प्रकार से कार्योन्वित नहीं कर सकी हैं । ऐसी स्थिति में कृषि उत्पादन कैसे बढ़ाया जा सकता है । मेरे जिले सेलम में किसान लोग कावेरी नदी के पानी का पम्पों द्वारा उपयोग कर रहे थे परन्तु राज्य सरकार ने वह बन्द कर दिया है । श्रव वह पानी व्पर्थ में समुद्र में चला जाता है। इसमें सरकार को कोई लाभ नहीं हुग्रा परन्तु किसानों को कठिनई श्रवश्य हो गई है । देश में यदि खाद्य पदार्थों की कमी को दूर करना है तो सरकार को इस प्रकार की सिचाई योजनाश्रों को प्रोत्साहन देना चाहिये । हाल के खाद्य संकट को ध्यान में रखते हुए यह श्रीर भी श्रावश्यक हो गया है कि सिचाई योजनाश्रों को प्राथमिकता दी जाय । मैंने यह बातें सिचाई ग्रीर विद्युत् मन्त्री श्री राव की जानकारी में भी लायी हैं कि केन्द्रीय सरकार को चाहिये कि इस सम्बन्ध में राज्य सरकार को कार्यवाही करने को कहे ।

हिन्दी के प्रयोग पर सभी मंत्रालयों में खर्चा किया जा रहा है। इस से कार्यक्रशलता में बाधायें पड़ती है। यह कहा जाता है कि यह एक संविधानिक दायित्व है। यह उपबन्ध जानबूझ कर ठोंसा गया जान पड़ता हैं। ग्रहिन्दी भाषी लोगों पर हिन्दी लादी नहीं जा सकती। हिन्दी समर्थकों को यह जान लेना चाहिये कि इस भाषा को ऊंचा स्थान दे कर उन से रियायत की गई है। बड़े खेद की बात है कि ग्राजकल सरकार के मुख्य नेता हिन्दी सर्मथक है। सरकार को देश की ग्रन्य भाषात्रों की ग्रोर भी ग्रावश्यक ध्यान देना चाहिये। मद्रास में तामिल भाषा जारो की जा सकती है। वहां हिन्दी ला ने की कोई ग्रावश्यकता नहीं है। हाल ही में हिन्दी के विरुद्ध जो ग्रान्दोलन हुग्रा था वह स्रभी भी चल रहा है। डा० सुब्बारायन ने सरकारी भाषा स्रायोग की रिपोर्ट में स्रपने विमती नोट में स्पष्ट शब्दों में कह दिया कि आप तिमल भाषी लोग यह सहन नहीं कर सकते हिन्दी उनपर लादी जाय। तमिल भाषा एक समृद्ध भाषा है। यह पिछले 2500 वर्षों से चली आ रही है। यह संस्कृत के भी बहुत निकट है। बहुत से विदेशियों ने भी माना है कि तमिल भाषा वास्तब में एक बड़ी विकसित भाषा है। तमिलनाड के लोग अपनी भाषा से विशेष प्रेम रखते हैं। यह इस आन्दोलन से भी सिद्ध हो गया है। वहां के लोगों ने 1937 में भी हिन्दी का विररोध किया था। राजाजी ने उस समय हिन्दी जारी करवायी थी परन्तु लोगों ने इसका कड़ा विरोध किया । उसके पश्चात् 1946 में हिन्दी लाने का प्रयत्न किया गया परन्तु वह ग्रसफल रहा। क्योंकि लोग नहीं चाहते थे ग्रौर उन्होंने इसका विरोध किया। 1950 में राज्य सरकार ने एक बार फिर स्कूलों में हिन्दी अनिवार्य करने का आदेश दिया परन्तु लोगों के आग्रह पर वह त्रादेश वापिस लेना पड़ा। त्रब राज्य सरकार स्थिति को समझ गई है। मैं त्राशा करता

हूं कि केन्द्रीय मंत्री देश के लोगों का जीवन स्तर उठाने की ग्रोर कार्यवाही करेंगे ग्रौर भाषा के प्रश्न पर चुप रहेंगे ।

श्री हे॰ बी॰ कौजलगी (बलगांव): मैं वित्त मंत्री को बधाई देता हूं कि उन्होंने इतना ग्रच्छा बजट प्रस्तुत किया है। कोई नया कर नहीं लगाया गया है। कई चीजों में राहत भी दी गई है। यदि मिट्टी तेल पर भी शुल्क समाप्त कर दिया जाय तो बहुत ग्रच्छा होता। यह ऐसी वस्तु जो ग्रामों में गरीब लोग प्रयोग में लाते हैं।

सरकार ने छिपे धन को निकालने के लिये जो कार्यवाही की है वह भी सराहनीय है। यही धन देश में जमाखोरी के लिये जिम्मेदार हैं। सरकार ने इस सम्बन्ध जो कुछ किया उसे और अधिक कठोरता से करना चाहिये। और लोग अपना छिपा धन सरकार के हवाले कर देंगे। मैं वित्त मंत्री से अनुरोध करता हूं कि वह समय समय सदन को सूचित करते रहें कि निकाले गये धन कैसे उपयोग किया जा रहा है।

पिछले वर्ष खाद्यपदार्थी की कीमतें बहुत चकु गई थीं। इस साल फसल बहुत ग्रन्छी है। मैं सरकार से अनुरोध करता हूं। कि वह इस वर्ष सतर्क रहे भ्रीर देखे कि आवश्यक वस्तुओं की कीमतें न चढें। हम कृषि को प्राथमिकता देने की बात करते है परन्तु इस बारे में बहुत कम काम होता है। किसानों को ग्रावश्यक सुविधायें उपलब्ध नहीं कराई जाती हैं। उन उर्वरक तथा अच्छे बीजों की आवश्यकता होती है। ये चीजें सरकार की श्रोर से नहीं मिलती तो उनको काले बाजार से ये चीजें लेनी पड़ती है। इसमें उनका समय भी बहुत अधिक नष्ट होता है। सरकार को इस ग्रोर ध्यान देना चाहिये। उर्वरक के मूल्य भी बहुत अधिक हैं। छोटे किसान इसे खरीद ही नहीं सकते। सरकार को उनकी सहायता के लिये कुछ करना चाहिये। किसानों को विद्युत भी कम दरों पर दी जानी चाहिये। ग्रौद्योगिक प्रयोजन के लिये तो यह कम दरों पर दी जाती है। हमारे देश में कई सौ ट्रेक्टर, पुर्जे म्रादि न होने के कारण व्यर्थ पड़े हुए हैं। सरकार को इस सम्बन्ध कार्यवाही करनी चाहिये ताकि इनसे लाभ उठाया जा सके। कृषि उत्पादन बढ़ाने के लिये प्रथम पंचवर्षीय योजना काल में काफी काम किया गया था परन्तु उसके बाद इस स्रोर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया गया । मेरे निर्वाचन क्षेत्र में मालाप्रभा नाम की एक सिचाई योजना पर कार्य बहुत धीमी गित से हो रहा है। इसके पूरे हो जाने पर तीन लाख एकड़ भूमि में खेतीं हो सकेगी। मेरा निवेदन है कि सरकार इस पर शीघ्रता से काम कर ग्रौर छोटी छोटी बाधास्रों की स्रोर ध्यान नदे।

मैसूर राज्य से चार वर्ष पूर्व केन्द्रीय सरकार को लगभग पांच चीनी मिलें चालू करने के लाइसेंस के लिये आवेदनपत्न दिये गये थे। इन पर अभी तक कोई निर्णय नहीं हुआ है। यह मिलें सहकारी आधार पर चालू की जानी हैं मेरा सरकार से अनुरोध है कि इस पर शीघ्र विचार हो और लाईसेंस जारी किये जायें।

Shri Mahesh Dutta Misra (Khandwa) Sir, this Budget has been prepared in a very clever manner. The Finance Minister deserves all praise for this. He has not proposed any new tax yet it will have some effect on our economy. I would like to know whether this relief from taxes for this year only, or it will be like that in future years also.

We have decided to a socialistic pattern of society. We want that side by side private sector should also prosper. These are the policies of Congress

### [Shri Mahesh Dutt Misra]

Party. The country has approved these policies by returning this party in such a majority to the legislatures of the country. When we see this Budget from this angle, we come to the conclusion that capitalists of our country have got hold on the economy of our country. They somehow or other exercise their control on our financial policies. Though we have decided to estabish socialism yet our efforts in this direction are not having the desirous effect.

Madhya Pradesh has been a neglected state. It is being given a step motherly treatment. The proposals put forward by the state Government are not accepted. Sometimes we are told that some factories have been sanctioned for this state but in reality nothing is done. There have been many demands for laying new railway lines, but I am sorry to say that no favourable action is taken on them. There has been a demand for the last 20 years that of a bridge. It will connect Madhya Pradesh with Andhra Pradesh.

It is the only state where people have secular ideas and socialistic views. This state can be a model state if some encouragement is given by the centre.

Teachers are very much hard pressed these days. I being a teahcer do not like that teacher should resort to strike, but when I see their condition, I feel, that there is some justification in their action. I would request the central Government to give some assistance to the state governments in this regard.

There has been increase in the production of almost everything during these years. It can be verified from the statistic. There is no doubt that our county is making progress. The difficulties are the result of defects in our distribution system. The high prices are a big problem for low income and middle income groups. Government should pay proper attention in this direction and help the poor.

The private sector has not adopted a favourable attitude in this matter. It has been getting benefits from our Government. They submit wrong information to the Government and dupe the Government that way. In regard to unaccounted money. I want to say that it is the cause of increase in prices. Government is doing something for this but it is not enough. They have been given chance to retain 40 p.c. with them. I would urge upon the Government to be more firm in dealing with these people. This black money has many bad effects. It becomes the cause of corruption.

If we want to increase our agricultural production we must pay proper attention to needs of villages. The farmers in villages are well aware of their problems. Government should provide all the facilities. This is the only way to increase production. We should send farmers to more advanced countries like United States of America. There they can learn modern methods of cultivation. Government should put an end to the vefarious activities of capitalists. They are causing much harm to the common man.

श्री पी० रा० रामकृष्णन् (कोयम्बट्र): इस बजट को बनाते समय वित्त मंत्री ने बहुत सी बातों को ध्यान में रखा है। उन्हें योजनाम्रों को पूरा करने के लिये संसाधन जुटाने हैं। देश में मूल्यों को स्थिर रखने का प्रयत्न भी करना है। उत्पादन की वृद्धि के लिये प्रोत्साहन भी देना है। इस देश की म्रर्थ व्यवस्था को दृढ़ बनाना है। इस बजट को बड़ी चतुराई से बनाया गया है। यह प्रथम बार है कि घाटे का बजट नहीं बनाया गया है म्रौर किसी नये कर का प्रस्ताव नहीं किया गया है। इस बार कई वस्तुग्रों पर उत्पादन शुल्क समाप्त कर दिया गया है। परन्तु ग्रब यह देखना है कि इस का लाभ उपभोक्ता को भी होता है ग्रथवा नहीं। हमारे हेश में वस्तुग्रों के मूल्य पहले ही बहुत बढ़े हुए है। व्यक्तिगत ग्रायकर में जो कमी का प्रस्ताव है में उसका स्वागत करता हूं। यदि वार्षिकी जमा योजना वापिस ले ली जाय तो बहुत ग्रच्छा होगा। इसमें बहुत सी बुटियां हैं। यह तो एक प्रकार का कर है। मैं वित्त मंत्री से ग्रनुरोध करता हूं कि यदि वह इसे वापिस लेने को तैयार नहीं तो कम से कम इस योजना के ग्रधीन जमा हुए धन को किसी ग्रौर प्रकार उपयोग करने की ग्रनुमित दें।

वित्त मंत्री ने छिपे धन को निकालने के लिये कुछ प्रस्ताव प्रस्तुत किये हैं। मैं उनका स्वागत करता हूं सरकार को अपनी कर नीतियों में परिवर्तन नहीं करने चाहिये हैं इन परिवर्तनों के कारण देश में ग्रौद्योगिक विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। इससे उत्पादन पर भी इसी प्रकार का प्रभाव पड़ता है। सरकार को इस ग्रौर विशेष ध्यान देना चाहिये। माज लोग सम्पत्ति ग्रादि में धन लगाने को लाभप्रद समझते हैं। वित्त मंत्री ने अपने बजट भाषण में शहरी सम्पत्ति पर 4 प्रतिशत के धन कर लगाने का प्रस्ताव किया है। यह धन एक प्रकार से ग्रनोत्पादक बन जाता है।

हमारे देश में उद्योगों की स्थिति भी ग्रच्छी नहीं है। कई ग्रावश्यक वस्तुग्रों का ग्रभाव है। ग्राज ग्रन्य देशों में मशीनों का प्रयोग बढ़ता जा रहा है ग्रौर नई नई मशीनों का ग्राविष्कार हो रहा है। इससे ग्रधिकाधिक पूंजी लगाई जा रही है। इसमें लोगों को भाग लेना चाहिये। ग्रथवा इसके लिये ग्रौर संसाधन जुटाये जायें।

उपाध्यक्ष महोदय : श्राप श्रपना भाषण कल जारी रखें ।

इसके पश्चात् लोक सभा बुधवार, 24 मार्च, 1965/चेत्र 3, 1887 (शक) के ग्यारह बजे तक के लिये स्थगित हुई।

The Lok Sabha then adjourned till Eleven of the Clock on Tuesday, March 24, 1965/Chaitra 3, 1887 (Saka).